एम. भट्टाचार्य एण्ड कं. प्राः. लिः.
७३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१ के तरफसे
श्री एच. भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित

10th Edition

मुद्रक—
श्री सुबोधकृष्ण भट्टाचार्य
इकनमिक प्रेस
२५ रायबागान स्ट्रीट, कलकत्ता-६

E.P. 5m. 3c.—3-70.

डाक्टर डब्लू० एच० सुसलर

(१८२१—१८९८)

सुसलर (या बायोकेमिक) की चिकित्सा-प्रणाली कौषिक निदान-तत्वकी वैज्ञानिक भित्तिपर प्रतिष्ठित है। विधारचो (Verchow), मोलेस्ट (Moleschott) वगैरह विख्यात वैज्ञानिक पण्डितोंके आविष्कारसे उत्साहित होकर डा० सुसलरने इस नवीन चिकित्सा-प्रणालीका उद्भावन किया है। उनकी चलायी हुई इस नयी चिकित्सा-प्रणालीको समस्त सभ्य चिकित्सा-जगत्‌ने आज बड़े उत्साह और आदरसे ग्रहण किया है।

दसवें संस्करणकी भूमिका

मंगलमयी वीणावादिनी जगदम्बाकी असीम अनुकम्पासे इस पुस्तकका दसवाँ संस्करण हिन्दी-पाठकोंकी सेवामें अर्पण करते हुए हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है।

बायोकेमिक चिकित्सा सम्बन्धी बहुतसे सुन्दर-सुन्दर ग्रन्थ अंग्रेजीमें उपलब्ध हैं किन्तु हिन्दी-जगत्में इस पुस्तकका अभाव था। हमलोगोको बराबरसे ही प्रबल इच्छा रही है कि चिकित्सा विषयकी बेजोड़ पुस्तकें हिन्दी-संसारको प्रदानकी जायँ जिनसे सर्वसाधारण भी भरपूर लाभ उठा सकें। इस क्षेत्रमें यह एक अद्वितीय एवं सर्वाङ्गपूर्ण ग्रन्थ है।

इसकी भाषा इतनी सहज एवं सुस्पष्ट है कि साधारण पढ़ा-लिखा भी चिकित्सक हृदयंगमकर रोगोंका लक्षण एवं निदान सहज ही ढूँढ़ सकता है। यही कारण है कि यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय प्रमाणित हुई है।

वर्तमान परिस्थितिमें कागज तथा छपाई इत्यादिका खर्च काफी बढ़ गया है। इसलिये इसकी कीमत ज्यादे होनी चाहिए थी फिर भी अपने ग्राहकोंकी सुविधाको देखते हुए इसका मूल्य बहुत कम रखा गया है, जिससे इस परमोपयोगी ग्रन्थसे सर्वसाधारण भी लाभ उठा सकें।

आशा है, हमारे सुहृद् पाठक-पाठिकाएँ पूर्व संस्करणोकी भाँति इस संस्करणको भी अपनाकर हमें उत्साहित करेंगे।

कलकत्ता
मार्च, १९७०

एम. भट्टाचार्य एण्ड कं. प्रा:. लि:.

विषय-सूची

वायोकेमिक चिकित्सा-सार

वैज्ञानिक तत्व

वायोकेमिक दवाएँ या Tissue Remedies के सम्बन्धमें दूसरी वातोंपर विचार करनेके पहले, यह जान रखना आवश्यक है कि इसकी मूल-भित्ति क्या है।

Biochemistry शब्द दो पृथक शब्दोंसे बना है। एक—Bios—जैव और दूसरा Chemistry—रसायन तत्व। अतएव Biochemistry शब्दका अर्थ है—जैव-रसायन अथवा जीवन-रसायन। प्रत्येक शरीरधारीकी सजीव अवस्थामें शारीरिक क्रिया ठीक-ठीक होनेके लिये क्षय और पूर्त्तिकी क्रिया इस देह-क्षेत्रमें प्रत्येक क्षण हुआ करती है। यह क्रिया रासायनिक-प्रक्रियाके अनुसार बहुत ही सुश्रृङ्खलित-भावसे चला करती है। जीव-देहके सदृश ही उद्भिद्-जगतमें भी रासायनिक प्रक्रियासे उद्भिद्-जीवनका विकास, वृद्धि और क्षय बराबर ही हुआ करता है।

जीव-देहके सभी यंत्रों और अंगोंके गठन तथा पोषणके लिये आवश्यक परिमाणमें और ठीक-ठीक विभागके अनुसार कई पार्थिव या धातव (inorganic) पदार्थोंकी जरूरत पड़ा करती है। खाने-पीनेकी चीजोंके साथ, शरीरमें घुसकर, पाचन होनेके बाद रक्तके दौरानके साथ-साथ ये सभी पदार्थ शरीरमें सब जगह ही जा पहुँचते है और वहाँ ये आवश्यकताके अनुसार ग्रहण कर लिये जाते हैं। इसके अलावा, सभी शारीरिक क्रियाओंके लिये नैसर्गिक नियमके अनुसार शरीर-तन्तु जलकर,

कितने ही उड जानेवाले अंशोके सिवा, बाकीके पार्थिव पदार्थ जलकर भस्मके रूपमें परिणत हो जाते है। इन पार्थिव-पदार्थोंको Inorganic Tissue Salts कहा जाता है। बायोकेमिक मतसे ये सभी तन्तु लवण (tissue salts) जबतक उपयुक्त परिमाणमें रहते हैं, तबतक स्वास्थ्य ज्यों-का-त्यो बना रहता है। इस शृङ्खलामें गडबडी होनेपर ही रोगकी उत्पत्ति होती है। तन्तु-लवणका उचित मात्रामें न रहना या उसके कमी होनेसे जो त्रुटि होती है, उस त्रुटिको लवण-समूह औषधके रूपमें अस्वस्थ शरीरमें पूरा करना ही बायोकेमिक चिकित्सा है।

सबके पहले हैनिमैनने ही कितने ही पार्थिव-लवणोंकी परीक्षा (proving) कर सदृश-विधान (होमियोपैथी) के मतानुसार चिकित्साके लिये व्यवहार की। उस समय बायोकेमिक मतसे इसका व्यवहार प्रचलित न था। इसके बाद हैनिमैनके शिष्य स्टाफ (Stapff) ने भी इस बातका समर्थन किया, कि किसी रोगको आरोग्य करनेके लिये नर-देहके ये सभी उपादान बहुत ही आवश्यक और उपयोगी हैं। बिख्यात वैज्ञानिक ग्रौवल (Grauvogl) ने भी इन लवणोंकी बहुत प्रसंशा की है।

किन्तु, **जर्मनीके** ओल्डेनवर्ग नगरके रहनेवाले डाक्टर विलियम एच० सुसलर (Schuessler) साहबने भी इन सब अजैव अर्थात पार्थिव-लवणोका सहारा लेकर बायोकेमिक चिकित्सा-प्रणालीका प्रचार और ईजाद की है। १८३७ ईस्वीमे उन्होने इस विषयका ग्रन्थ लिखकर सर्वसाधारणमें प्रचार किया। डाक्टर ओकोन्नर (O, conner) ने जर्मन भाषामें लिखे हुए इस ग्रन्थका अंग्रेजीमें अनुवाद किया और इसके बाद एम० डासेटो वाकर (M. Docetti Walker) और केरी प्रत्येकने एक-एक ग्रन्थ और बोरिक तथा डिउईने मिलकर एक ग्रन्थ (कुल ३ ग्रन्थ) बायोकेमिक चिकित्साके ग्रंथ अंगरेजी भाषामें प्रकाशित

किये। इनमें डाक्टर केरी और डा० बोरिक तथा डिउईके लिखित ग्रन्थ सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसके बाद तो बायोकेमिक चिकित्साके अनेकानेक ग्रन्थोकी रचना हुई।

जैव-तन्तु

जीव-देहकी गठन-प्रणालीमें हमलोगोंको कितने ही खास-खास अंश दिखाई देते है। उनके सम्मिलन और ठीक-ठीक जगहपर लगनेके कारण ही शरीरका निर्माण हुआ है। ये सब अंश नाना प्रकारके तन्तुओ (tissues) से बने हुए हैं। ये तन्तु भी कितने ही छोटे-छोटे कोषो द्वारा बने हैं ; इन तन्तुओंमें अस्थि-कोष (bone-cells), पेशी-कोष (muscle-cells), उपास्थि-कोष (cartilage cells), श्लैष्मिक झिल्ली-कोष (mucous cells), स्थिति-स्थापक तन्तु (elastic tissue), उपत्वक तन्तु (epithelal tissue) सयोजक तन्तु (connective tissue), स्नायु-कोष (nerve cells), चक्षु तन्तु (crystalline lens), केश इत्यादि भिन्न-भिन्न श्रेणीके और अलग-अलग काममें आनेवाले तन्तु सब दिखाई देते हैं। **ये सब कोष भी जैव (organic) और पार्थिव (inorganic) दो पदार्थोंसे बने है।** इन कोषोको देखनेके लिये अनुवीक्षण यंत्रकी सहायताकी जरूरत पड़ती हैं। सजीव नर-देहका गठन और उसकी शक्ति बहुत दिनोंतक ठीक-ठीक अविकृत अवस्थामें रह सकती है, परन्तु उसका मूल-पदार्थ—ये कोष प्रत्येक क्षण लगातार ध्वंस होते रहते हैं और उनकी जगहपर नये-नये कोष तैयार होते रहते हैं।

केशिक-धमनी और शिरा-मार्गमें खून प्रवाहित होता रहता है। शरीरके इस रक्त भागसे ही इन कोषोकी पुष्टि होती है। **रक्तके तीन विशेष काम दिखाई देते हैं,** जैसे—(क) खाये हुए पदार्थके पच जानेके

बाद, उनके भीतरसे पुष्ट करनेवाले पदार्थोंको खींचकर धमनीकी राहसे शरीरके सभी अंशोंमें पहुँचा देना। (ख) साँसके साथ खींचा हुआ अम्लजान (oxygen) फेफडेसे लेकर समस्त तन्तु और कोषोंको प्रदान करना (कारण—प्रत्येक तन्तुके निर्दिष्ट कामोंके लिये अम्लजानके सहारे उनके दहन-कार्यकी जरूरत पडती है) और उससे तन्तुओंके दहनसे उत्पन्न हुए अंगारजान (carbon di-oxide) को फिर शिरा-पथसे लेकर फेफडेमें पहुँचाकर प्रश्वासके साथ वाहर निकाल देना। (ग) शरीरके सभी स्थानोंमें जो क्षय हुए जैव-पदार्थ रहते हैं, उनको शिरा-पथसे लेकर वृक्कक-यन्त्र (मसाना—kidney) पहुँचा देता है; इस तरह वे पेशावके साथ निकल जाते हैं। अतएव, यह देखनेमें आता है कि शरीरका पोषण करने और गन्दा मैलको निकाल वाहर करनेके लिये रक्तकी वहुत वडी आवश्यकता है।

रक्तकी रासायनिक संयोग

वजनके अनुसार १०० भाग रक्तमें ८० भाग पानी और २० भाग कठिन (solid) पदार्थ है। यही २० भाग कठिन पदार्थ विशेषकर यवक्षारजानसे उत्पन्न यौगिक पदार्थ—Nitrogenus compounds हैं, उसका १० भाग हिमोग्लोबिन नामक लाल द्रव्य, ६ भाग प्रोटीड पदार्थ (खाद्य-पदार्थोंसे मिला हुआ जैव-पदार्थ) और वाकी १ भागमें बहुत थोडे परिमाणमें चर्बी (fat), कार्बोहाइड्रेटस (शर्करा श्रेणी), पार्थिव-लवण और यूरिया (मूत्रक्षार—urea) नामक तन्तु-ध्वंसका बचा हुआ भाग है। यह अजैव-लवण विशेषकर क्लोराइड्स, सोडियम, फास्फेट और पोटासियम फास्फेटस हैं। उन हिमोग्लोबिनमे सूक्ष्म परिमाणमें लोहा भी रहता है और आक्सिजनको लेने और ठीक-ठीक यथा-स्थान रखनेका काम इस लौहके बिना हो ही नही सकता।

जीव-देहके स्वाभाविक मौलिक पदार्थों (elements) में हमलोग कितनेको मौलिक और कितनेको यौगिक रूपसे देखते हैं, जैसे—आक्सिजन, नाइट्रोजेन, हाइड्रोजेन, कार्बन, सल्फर, फास्फोरस, क्लोरिन, सोडियम, पोटासियम, कैलसियम, आयरन, सिलिकम, फ्लोरिन, लिथियम और मैंगेनिस इत्यादि पदार्थोंमें पहले तीन पदार्थ मौलिक और यौगिक दोनो ही अवस्थाओंमें मौजूद रहते हैं, बाकी सिर्फ यौगिक अवस्थामें ही दिखाई देते है।

जीव-देहके निर्माणके लिये प्रधानतः दो पृथक श्रेणियोंके रासायनिक यौगिक पदार्थकी जरूरत होती है, जैसे—(क) अजैव या पार्थिव पदार्थ जैसे—खड़िया, मिट्टी, साधारण नमक, सिलिका इत्यादि। (ख) जैव-पदार्थ, जैसे—मेद (चर्बी), चीनी, श्वेतसार (starch), अंडलाल (albumen) इत्यादि। पार्थिव यौगिक पदार्थोंमें प्रधानतः पानी कार्बन डायोक्साइड (अंगारक), हाइड्रोक्लोरिक एसिड (नमकका तेजाव), सोडियम क्लोराइड (साधारण नमक), कैलसियम कार्बोनेट और कैलसियम फास्फेट दिखाई देते हैं। जैव-पदार्थोंमें चीनी शर्करा) और श्वेतसारको साधारणतः कार्बो हाइड्रेटस कहा जाता है।

श्वास-प्रश्वास (साँस लेना और छोड़ना) इत्यादि सभी ऐच्छिक या अनैच्छिक (इच्छापूर्वक या बिना इच्छा किये हुए) कामकी उपयुक्त शक्ति पैदा करनेके लिये देह-तन्तुका दहन हुआ करता है। यह जलानेका काम श्वास-प्रश्वासके साथ लिये हुए अम्लजानके सहारे ही हुआ करता है। इस संसारके सभी दहन-कार्य अम्लजानकी सहायतासे ही हुआ करते हैं और इन सब जले हुए तन्तुओंकी जगहपर खूनके दौरानके जरिये नये तन्तुओंका निर्माण हुआ करता है; इस प्रक्रियाके साथ एञ्जिनकी अच्छी तरह तुलना की जा सकती है।

जलते हुए कोयलेकी गर्मीसे पानीको भाफ बनाकर जो शक्ति पायी जाती है, उससे बहुत बडे-बड़े जहाज बिना किसी बाधाके समुद्रको मंथन करते हुए तेजीसे दौड़ते रहते हैं। एञ्जिनकी गति-शक्तिको जारी रखनेके लिये ज्योंही कोयला जल जाता है, त्योंही नया कोयला उसमें डालना पडता है और पानी जब भाफमें बदल जाता है, तो दूसरा पानी डालना पडता है। जलनेकी क्रियासे कोयलोंका क्षय होनेके बाद जली हुई राख गिरती रहती है—इसी तरह जीव-देहमें भी सभी कामोके लिये अथवा तेल पैदा करनेके लिए तन्तुओका दहन होता है और जलकर बची हुई मैल शरीरके नव-द्वारकी राहसे निकल जाती है। उन नष्ट हुए तन्तुओंकी जगहपर रक्त-प्रवाह नवीन तन्तुके उपादान सब पैदा करता है। ये उपादान ही जैव और पार्थिव-पदार्थ हैं और ये आवश्यक परिमाणमें और संयत-विभागके अनुपातसे विद्यमान रहते है और ग्रहण कर लिये जाते हैं।

आहार-विहारकी गडबडी पैदा हो जानेपर अथवा अन्यान्य कारणोसे पार्थिव-उपदानोकी कमी या परिमाणकी विचित्रता अथवा विभागकी गडबडी जब होती है, तभी स्वास्थ्यमें विकार पैदा होकर नाना प्रकारकी बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है।

अब जीव-देहमे **इन सब पार्थिव-लवणोंका परिमाण और विभागके अनुपातको** समझनेकी जरूरत है। १००० ग्राम (१ ग्राम= १५'४३२ ग्रेन) रक्त-कोषमें निम्नलिखित परिमाणके और विभागके अनुसार पार्थिव-लवण सब पाये जाते है :—

लौह	...	..	'९९८
कैलि-सल्फ	...	...	'१३२
कैलि-म्यूर	...	...	३'०७९
कैलि फास्फेट	...	...	२'३४३

नेट्रम फास्फेट	...	...	·६३३
नेट्रम-म्यूर	...	...	·३४४
कैल्केरिया-फास	...	...	·०६४
मैग्नेशिया-फास	...	...	·०६०

अलग-अलग श्रेणियोंके तन्तु सब जिस तरह विभिन्न कार्यों के लिये बने हैं, उनके उपादनोंमें भी ठीक उसी तरहका प्रभेद है। जैसे—

स्नायु-कोष (Nerve-cells)—मैग्नेशिया-फास, कैलि-फास, नेट्रम और फेरम।

पेशी-कोष (Muscle-cells)—मैग्नेशिया-फास, कैलि-फास, नेट्रम, फेरम और कैलि म्यूर।

संयोजक तन्तु (Connective tissue)—खासकर साइलिसिया।

स्थिति-स्थापक तन्तु (Elastic tissue)—प्रधानतः कैल्केरिया फ्लुओरिका।

अस्थि-कोष (Bone-cells)—कैल्केरिया-फ्लुओर, मैग्नेशिया-फास और अधिक मात्रामें कैल्केरिया-फास।

उपास्थि और श्लेष्मिक कोष (Cartilage and Mucous-cells)—खासकर नेट्रम-म्यूर।

केश और चक्षु-कोष—दूसरे-दूसरे अजैव लवणोंके साथ लोहा।

प्रत्येक पार्थिव-लवणका एक-एक बँधा हुआ काम है और हरेकका कितने ही जैव पदार्थों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहनेके कारण, खासकर उसी जातिके कोष और तन्तुओंसे मिलकर ये अपनी रासायनिक प्रक्रियासे शरीरकी बनावटके काममें सहायता पहुँचाते हैं। इसीलिये यह देखनेमें

आता है कि नेट्रम-फास शरीरक्षेत्रमें जल उत्पन्न करता है, नेट्रम-म्यूर शरीर-क्षेत्रमें पानीको घटाता है और नेट्रम-सल्फ शरीर-क्षेत्रसे पानीको हटा देता है। इसी तरह कैलि-म्यूरके साथ रक्तका अंश (fibrin) का घनिष्ठ सम्बन्ध है और इस नमकके परमाणु लगातार इस क्षेत्रमें क्रिया करते रहते हैं। कैलि-म्यूर लवणका परिमाण या विभागका अनुपात गड़बडा जानेपर इनकी कमीके कारण रक्तका जो फाइब्रिन विगड जाता है, वह उस समय शरीरमें आमयिक विश्रृङ्खलता पैदा कर दिया करता है और रक्त-प्रवाहसे अलग होकर नाक, फेफडा, मसाना, आँत इत्यादि राहोसे निकलता है। इसी अवस्थामें सर्दी, खाँसी, श्लेष्माकी अधिकता इत्यादि लक्षण सब दिखाई देते हैं। रक्तमें अंडलाल और दूसरे-दूसरे जैव-पदार्थोंके साथ कैलि-म्यूर मिलकर फाइब्रिन या रेसा उत्पन्न करता है। इसके द्वारा रक्त-कणिकाएँ सब तन्तु-निर्माणके उपयोगी उपादानके रूपमें बन जाती है।

"अंडलालिक मूत्र" रोग (Bright's disese) मे गडबडीका मूल कारण निकला हुआ अंडलाल है। जैव-रसायनमें देखा जाता है कि कैल्केरिया फास्फेटके साथ अण्डलालका घनिष्ठ सम्पर्क है; रक्त-प्रवाहमें नमकके परमाणुके निर्दिष्ट परिमाण जब घट जाते हैं, तो उससे सम्बन्ध रखनेवाला अण्डलालका हिस्सा एकदम निश्चेष्ट हो जाता है अर्थात् उसमें जड-भाव आ जाता है तथा वह मसानेकी राहसे निकला करता है। इस अभावको पूरा करनेके लिये कैलसियम फास्फेटके परमाणुका जब फिर प्रयोग किया जाता है, तो लवणकी श्रृङ्खला फिरसे स्थापित हो जाती है और अण्डलाल (जैव-पदार्थ) शरीरमें फिर नियमित रूपसे फैल जाता है।

शरीर-क्षेत्रकी जैव-रसायनकी क्रियापर ध्यान देनेसे ज्ञात होता है कि शरीर-यंत्रका गठन, पोषण और स्थितिके लिये दो पदार्थोंकी जरूरत रहती

है और ये दोनो ही पदार्थ खूनमें पाये जाते हैं, जैसे—(क) **जैव-उपकरण**—मेद, अंडलाल और शर्करा। (ख) **जल और अजैव-उपकरण**—पोटास, कैलसियम, सिलिका, लौह, सोडियम और मैग्नेशियम। इन सब पार्थिव-लवणोके ठीक-ठीक रहे बिना, जैव उपकरण सब स्वाधीन-भावसे कोष और तन्तुओका निर्माण नही कर सकते। कोई तन्तु या समूची देह जल जानेपर, जलीय भाग वाष्प (भाफ) के आकारमें बदल जाती है और अदृश्य हो जाती है, जैव-उपकरण सब अंगारमें परिणत हो जाते हैं और पार्थिव-लवणोका जलकर बचा हुआ भाग भस्म-रूपमें पडा रहा करता है।

बायोकेमिक चिकित्साका मूल-सूत्र

जीव-देहमें जैव और अजैव पदार्थोंका रासायनिक सयोग है। इन सबोकी क्रियाकी गडबडी या किसी एकका अभाव होनेसे ही शरीर रोग-ग्रस्त हो जाता है। जीव-देहका यह स्वभाव प्रकृत अवस्थामे है या नही इसका निर्णय करना और नही रहनेसे उसको स्वाभाविक अवस्थामे लाना ही बायोकेमिक चिकित्साका उद्देश्य है। इसी चिकित्सा-शास्त्रके अनुसार रोगको दूर करना ही बायोकेमिक चिकित्सा है।

बायोकेमिक दवाएँ और उनका प्रयोग

इसके पहले हमलोगोने देखा है कि शरीरके निर्माण और धारणके लिये सभी उपकरण रक्तके सहारे सब शरीरमें फैलते हैं। ये सभी उपकरण धमनीका शरीर भेदकर आस-पासके तन्तुओमें आकर मिल जाते हैं। जब पार्थिव-लवण उपयुक्त परिमाणमें शरीरमें रहता है, उस समय सभी तन्तु और कोष अपनी स्वाभाविक अवस्थामें अपना-अपना कार्य किया करते हैं, ऐसी अवस्थामें मनुष्यका स्वास्थ्य भी एकदम ठीक रहता है।

रक्तके सहारे रहनेवाले इन सब उपकरणोंमेंसे कोई एक या एकसे अधिक न रहे अथवा उसमें कमी पड जाये, तो किसी भी अंगमें गडवड़ी पैदा हो जाती है। दर्द, ज्वर, सूजन, प्रदाह वगैरह बीमारियाँ पैदा हो जानेपर या उनका लक्षण प्रकट होनेपर, हमलोगोको वह कमी मालूम होती है; परन्तु रक्त-प्रवाहमे पार्थिव लवणोका परिमाण ठीक-ठीक रहने-पर भी, किसी खास श्रेणीके तन्तुमें इस तरहकी कमी जब हो जाती है, तो वह रक्त-प्रवाहसे अपने प्रयोजनके अनुसार वह नमक ले लिया करता है और इसीलिये बहुत ज्यादा क्षयकी वजहसे रक्त भंडारमें उस खास नमकका स्वाभाविक भाग घट जाता है और रोगवाली अवस्था पैदा हो जाती है।

रक्तके सहारे रहनेवाले नमककी कमी या अभाव—चाहे किसी भी कारणसे क्यों न हो, जिसका लक्षण मालूम हो, उस लवणका क्षीण-द्रव अथवा सूक्ष्म मात्राका प्रयोग करनेपर वह कमी या अभाव दूर होकर फिर स्वास्थ्य प्राप्त हो जाता है—**यही प्रकृतिका नियम है।** शारीरिक क्रिया ठीक-ठीक सुसङ्खलित रखनेके लिये और स्वास्थ्यको ठीक-ठीक बनाये रखनेके लिये शरीरके उपकरणोंकी मात्रा और विभागका अंश सभी सुश्रृङ्खलित रखना होगा। यह नियम सिर्फ पार्थिक लवणके सम्बन्धमें ही नही प्रयोग होता, बल्कि जैव-उपकरणोकी सम्बन्धमे भी यही लागू होता है। हमलोगोको मालूम हुआ है कि भेद (fat), शर्करा (carbo hydrates) और अंडलाल (albumen) की मिलावटसे कोष और तन्तुओंके अवयब प्राप्त होते हैं; परन्तु इन सब पार्थिव-लवणोके संयोगकी वजहसे उनमें उनकी श्रेणीके अनुसार गुण पैदा होते हैं, नही तो ये तन्तु एकदम निश्चेष्ट और जीव-देहमें रहनेके उपयुक्त नही रह जाते। हमलोग अपनी भोजन-सामग्रीसे ही नित्यप्रति ये जैव उपकरण प्राप्त करते है। यदि कोई व्यक्ति अन्यान्य भोजन-सामग्रियाँ त्यागकर केवल भेद-जातीय खाद्य-पदार्थपर ही निर्भर रहे, तो जैव-उपकरणोके

अनुपातसे शृङ्खला बिगडकर रोग पैदा हो जानेकी सम्भावना पैदा हो जाती है।

जिन्हे खानेको नही मिलता है, ऐसे व्यक्तिको यदि सर-दर्द, बुखार इत्यादि हो जाये और उसके कारणका विना पता लगाये केवल बाहरी लक्षणोंकों देखकर ही दवा दे दी जाय, तो उससे रोगीको कोई भी फायदा न पहुँचेगा ; बल्कि उससे जल्द ही उसकी मृत्यु हो जायगी। इस अवस्थामें उसकी धीरे और थोडी मात्रामें सहजमें ही पचनेवाली भोजन-सामग्री खिलानेपर उसकी वीमारी दूर हो जायगी और उनको जान बच जायगी।

प्राकृतिक नियमसे किसी कोष या तन्तुको रक्त-प्रवाह जवर्दस्ती जैव अथवा अजैव—कोई भी पदार्थ खिला नही देता। **ये तन्तु और कोष अपने-अपने आवश्यक पदार्थ रक्तके प्रवाहसे आप-ही-आप ले लेते हैं।** अजैव-लवणका परिमाण और अनुपात तो ऊपर जो सूची लिखी गयी है, उसमें दिखा दिया गया है। चिकित्साके काममें, लक्षण-संवलित रोग दूर करनेके लिये, ठीक-ठीक अजैव-लवण सूक्ष्म परिमाणमें प्रयोग करना ही नियम है। सुसलरकी दवा तैयार करनेकी प्रणाली देखनेसे ही यह सूक्षमत्व समझमें आ जायगा।

डाक्टर सुसलर कहते हैं—"सभी साध्य रोग तन्तु-स्थित और रक्त-अवलम्बित अजैव पदार्थोंके प्रयोगसे आरोग्य किये जाते है। लक्षण वतानेवाली दवाका प्रयोग करनेपर न्यायसंगत स्वाभाविक नियमसे अवश्य ही आरोग्य होगा। क्विनाइन, पारा इत्यादि पदार्थ वहुत वार स्थूल मात्रामें सेवन करनेकी वजहसे वढ़ी हुई दीर्घकाल स्थायी पुरानी वीमारी भी इन सब तन्तु-लवणोंका सूक्ष्म मात्रामें प्रयोगकर आरोग्यकी जाती है।"

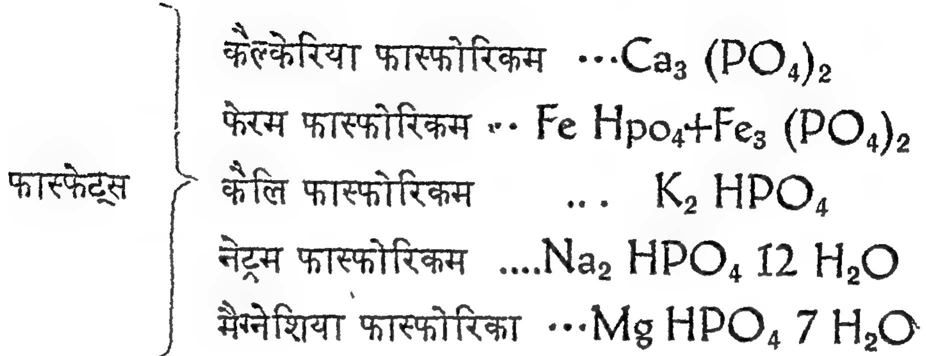
वायोकेमिक मतसे चिकित्सा करनेके लिये तीन नियमोका पालन करना आवश्यक है। जैसे—(क) चिकित्साके समय इस विषयमें

जानकारी रखना कि किस-किस लवणकी गड़बडी हो गई है। (ख) तन्तु द्वारा पूरा करने योग्य परिमाण और मात्राके सम्बन्धका ज्ञान। (ग) दवा तैयार करनेकी प्रणाली और प्रयोगकी प्रथाके सम्बन्धमें उपयुक्त शिक्षा।

रक्त कणिका या कोषाणुके सूक्ष्म अवयवकी अपेक्षा भी अधिकतर जबतक पार्थिव-लवणोका सूक्ष्म चूर्ण नही होता, तबतक तन्तु या कोष द्वारा न तो वे ग्रहण किये जाते हैं और न वे ठीक-ठिकानेपर पहुँचते है। किसी रोगको आरोग्य करनेके लिये इस सूक्ष्मत्वकी कितनी अधिक जरूरत है, वह हमलोगोके रोजाना खान-पानके सम्बन्धमें विचार करनेसे ही मालूम हो जायगा। खाद्य-पदार्थोंमें अजैव-लवण बहुत सूक्ष्म मात्रामे मौजूद रहनेके कारण ही जैव-जन्तु उनको अपनी देहमें ग्रहण कर सकते हैं।

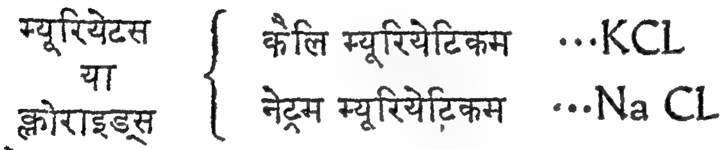
बचपनसे ही मनुष्यका सबसे श्रेष्ठ खाद्य दूध है। उसी दूधका विश्लेषण करनेपर देखा गया है कि गायके एक सेर दूधमें प्रायः $\frac{१}{१६}$ ग्रेन लौह रहता है। अतएव, जो बच्चा रोज एक पाव दूध पीता है, उसे उस $\frac{१}{१६}$ ग्रेनका चौथाई भाग अर्थात् कुल $\frac{१}{६४}$ ग्रेन लौह उस दूधसे प्राप्त होता है और इसी मात्रामें लौह उसके पोषण और वृद्धिमें सहायता पहुँचाता है। इसी हिसावसे दूसरे दूसरे पार्थिव लवण भी कितनी सूक्ष्म मात्रामें वर्तमान रहकर उस बच्चेका उपकार किया करते हैं, इसपर नजर डालनेसे ही आश्चर्यमें पड जाना पडता है।

नीचे लिखे बारह तन्तु-लवणोंका रोगमें प्रयोग किया जाता है :—

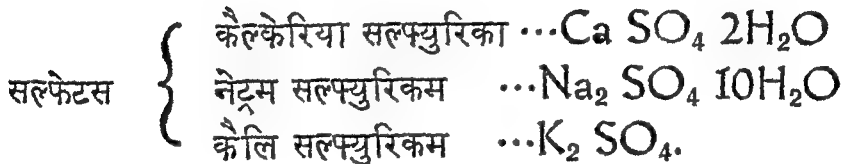


फास्फेट्स

फास्फेट्स	कैल्केरिया फास्फोरिकम	...$Ca_3 (PO_4)_2$
	फेरम फास्फोरिकम	... $Fe\ Hpo_4 + Fe_3 (PO_4)_2$
	कैलि फास्फोरिकम	... $K_2 HPO_4$
	नेट्रम फास्फोरिकम	....$Na_2 HPO_4\ 12\ H_2O$
	मैग्नेशिया फास्फोरिका	...$Mg\ HPO_4\ 7\ H_2O$



म्यूरियेटस या क्लोराइड्स	कैलि म्यूरियेटिकम	...KCL
	नेट्रम म्यूरियेटिकम	...Na CL



सल्फेटस	कैल्केरिया सल्फ्युरिका	...$Ca\ SO_4\ 2H_2O$
	नेट्रम सल्फ्युरिकम	...$Na_2\ SO_4\ 10H_2O$
	कैलि सल्फ्युरिकम	...$K_2\ SO_4$.



फ्लुओराइड—कैल्केरिया फ्लुओरिका ..$Ca\ F_2$



विशुद्ध अयौगिक सिलिका	साइलिसिया	...$Si\ O_2$

इस सूचीसे यही मालूम होता है कि सिलिकाके सिवा सभी लवण यौगिक याने मिलावटकी अवस्थामे व्यवहृत हुए हैं। कैल्केरिया फास्फोरिकाके रासायनिक सकेतसे प्रमाणित होता है कि Ca_3 अर्थात् कैलसियम मूल पदार्थके तीन परमाणुओके साथ $(PO_4)_2$ अर्थात्

फास्फोरिक एसिडके दो परमाणुओंको मिलाकर यह लवण तैयार हुआ है।

इन सब लवणोंका स्थूल मात्रामें प्रयोग करनेपर, तन्तु और कोष उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते। अगर स्थूल मात्रामे लौहका प्रयोग किया जाता है, तो उसका अधिकांश भाग ही मलके साथ निकल जाता है। खासकर स्थूल मात्रामें पेटमें जानेपर जब यह पाचक-रसके साथ सम्मिलित होता है, तो वह एक दूसरे ही तरहके पदार्थमें परिणत हो जाता है। इसीलिये उससे इच्छानुसार फायदा नही दिखाई देता; परन्तु दूधकी चीनीके साथ द्रवयोग-विश्लेषण या विचूर्ण (trituration) प्रक्रियासे सूक्ष्म बनाये हुए अजैव-लवण पेटमें जानेके पहले मुँहके भीतरी भागके, कंठ, तालु और जीभकी उपत्वचाके तन्तु और कोषोसे भीतर ले लिये जाते है और इनके पासकी केशिक-धमनीके सहारे खूनके दौरानके साथ मिल जाते है और जिन तन्तुओंमें उनकी कमी रहती है, वहाँ पहुँचकर जो क्षय हो गया है, उसे पूर्ण किया करते हैं। बायोकेमिक चिकित्सा-प्रणालीकी यही परम विशेषता है।

इसके अलावा, रक्तका **जैव-पदार्थ** (जैसे—अंडलाल) जब इस प्रक्रियासे खूब ही सूक्ष्म हो जाता है, तो उसके मौलिक उपादान (elements) विश्लिष्ट हो पडते हैं; परन्तु **पार्थिव अजैव-लवण**को जब सूक्ष्म किया जाता है, तो उस समय यह भय बिलकुल ही नही होता; उन्हे चाहे कितना ही रगडा और घोटा क्यो न जाये, कितने ही परिमाणमें वह सूक्ष्मीकृत क्यों न हो, यौगिक पार्थिव लवणके हरेक अणु-परमाणु कभी भी अपने उपादानसे अलग नही होते।

बायोकेमिक दवाओंका सूक्ष्मतम (पाँच ग्रेन) मात्रामें ही प्रयोग करना श्रेय है। जरूरत होनेपर बार-बार प्रयोगकर इच्छानुसार फल प्राप्त किया जा सकता है; परन्तु बड़ी मात्रामें

यदि उनको प्रयोग किया जाता है, तो यह मात्राकी अधिकता ही रोगके आरोग्य होनेमें गड़बड़ी पैदा कर देती है और चिकित्सामें सफलता नहीं प्राप्त होती।

बायोकेमिक चिकित्साका श्रेष्ठत्व

बायोकेमिक चिकित्सा विज्ञान-सम्मत, सहज और सरल है। केवल बारह ही औषधियोंका भेषज-तत्त्व जाननेसे ही औषधका प्रयोग किया जा सकता है। ये सब औषधे विषाक्त नही है। ये दवाएँ सबोको सभी अवस्थाओमें रोज प्रयोग किया जा सकता है। यह सेवन करनेमें बेस्वाद नही है और औषधोंका मूल्य भी बहुत थोडा है।

औषध-प्रस्तुत-प्रक्रिया

ट्राइटुरेशन (विचूर्ण) द्वारा ३x, ६x, १२x, ३०x, २००x दशमिक क्रमसे ऊँचे चढ़ाकर, विचूर्ण अवस्थामे या टिकिया (tablet) के आकारमें इन सब औषधोंको प्रस्तुत किया जाता है।

एक भाग विशुद्ध मूल औषध (crude) के साथ ९ भाग दूधकी चीनी मिलाकर और एक घंटातक खलमें घोटनेपर प्रथम दशमिक (१x) क्रम तैयार होता है। इस प्रथम दशमिक क्रमके एक भागके साथ दूधकी चीनी ९ भाग मिलाकर फिर एक घटातक खलमें घोटनेपर दूसरा दशमिक क्रम तैयार होता है। इसी तरह लगातार पहलेके क्रमकी दवाके १ भागके साथ दूधकी चीनी ९ भाग मिलाकर और एक घटातक घोटकर बादका दशमिक क्रम तैयार किया जाता है।

हरेक क्रमकी दवा प्रस्तुत करनेके पहले और पीछे खल तथा लोढ़ेको अच्छी तरह धो-रगडकर साफ कर लेनेपर गरम जलसे फिर धो लेना

चाहिये। इसके बाद सूख जानेपर विशुद्ध अलकोहल (सुरासार) से जला देना चाहिये।

औषध प्रस्तुत करनेके समय दवा जिससे हाथमे न लगे अथवा कोई दूसरी चीज उसमें न मिल जाये—इसपर पूरा खयाल रखना आवश्यक है।

औषधका क्रम खूब प्रकाश और हवादार कमरेमें प्रस्तुत करना चाहिये, जिसमें धूल, मिट्टी और किसी तरहका गन्ध न हो।

हरेक क्रमकी दवाको अच्छी तरह साफ किया हुआ और विशुद्ध सुरासार द्वारा धोये हुए काँचके शीशीमें उत्तम रूपसे ठेपी खूब कसकर अवश्य लगा रखना चाहिये। ठेपीके ऊपर दवाका नाम और शक्ति लिखकर रखना चाहिये तथा शीशीपर औषधके नाम और शक्ति लिखा हुआ लेबुल चिपका देना चाहिये।

जिससे औषधमें धूल, मिट्टी और हवा मिलकर वह नष्ट न हो जाय, इसलिये उसे अच्छी तरह ठेपी-कसा शीशियोंके मुँहको कागज या केप्सुलसे ठीक तौरपर बाँधकर रखना चाहिये।

मात्रा और प्रयोग-पद्धति

यह सूक्ष्म विचूर्ण एक मटरकी मात्रामें (प्रायः पाँच ग्रेन) जीभपर डाल लेना या इसी मात्राकी टिकियाँ (tablet) चबाकर खाना पड़ता है। बालक-बालिकाओंको उनकी उमरके मुताबिक इसकी आधी या चौथाई मात्राका प्रयोग करना चाहिये। डाक्टर सुसलर ये सब दवाएँ सूखी अवस्थामें अथवा पानीमें गलाकर प्रयोग करते थे। बहुतोंका ऐसा मत है कि आधा गिलास अन्दाजन पानीमें (प्रायः ८ औंस) १०-१५ ग्रेन विचूर्ण या २-३ टिकियाएँ गलाकर उसीसे यदि एक चम्मचकी

मात्रामें प्रयोग किया जाये, तो बहुत शीघ्र फायदा होता है। गर्म पानीमें बायोकेमिक दवा गलाकर प्रयोग करनेसे और भी अधिक उपकार होता है।

क्रम-निरूपण

साधारणतः नये रोगमें तथा बच्चे और कम उमरवाले रोगियोंके लिये ३x, ६x, १२x शक्तिकी दवाएँ बार-बार व्यवहार किया जाता है और पुराने रोगमें ३x, २००x इत्यादि ऊँची शक्तिकी दवाएँ अधिक समयका अन्तर देकर व्यवहृत होती हैं। तब रोग और रोगीकी अवस्थाके अनुसार मात्रा और शक्तिका निर्णय करना पडता है। यदि यह सन्देह हो कि रोगी औषधिकी प्रतिक्रियाको सहन नही कर सकता, तो उस अवस्थामें निम्न शक्तिकी दवा अल्प मात्रामें अधिक समयका अन्तर देकर प्रयोग करना उचित है। अच्छे चिकित्सक और बुद्धिमान गृहस्थको इस बातपर पूरा ख्याल रखना चाहिये कि रोगीके ऊपर अनावश्यक प्रतिक्रिया न हो।

कितनी देरके अंतरसे दवा देना चाहिये ?

नयी बीमारीमें २-३ घण्टेके अन्तरसे और पुरानी बीमारीमें दिनमें ३-४ बार औषध प्रयोग करना चाहिये। कभी-कभी सुबह और शामको भी दवा सेवन करनेका नियम है।

कठिन और कष्टदायक रोगमें ५ या १० मिनट अथवा आधा घण्टाके अन्तरसे दवाका प्रयोग किया जा सकता।

सो जानेपर याने निद्रितावस्थासे रोगीको जगाकर कभी भी दवा नही देना चाहिये।

दवाका बाहरी प्रयोग

बायोकेमिक दवाका अनेक समय धावन या प्रलेपके रूपमें बाहरी प्रयोग होता है। चिकित्साके आदेशानुसार या पुस्तकमें निर्दिष्ट मात्राके मुताबिक निम्न शक्तिका बायोकेमिक विचूर्ण परिश्रुत पानीके अभावमें औटे हुए जलके साथ मिलाकर गरम पानीमें खौलाये परिष्कृत कपडेसे छानकर साफ शीशीमें रख, ठेपी (कार्क) से बन्दकर प्रलेप तैयार होता है। इस तरहका धावन, घाव, आँख उठना, फोडा, मुँहमें घाव इत्यादिमे व्यवहार होता है। कभी-कभी पिचकारीके सहारे भी औषध प्रयोग किया जाता है। निम्न-शक्तिकी औषधोके विचूर्णको सफेद भेसलिनके साथ अच्छी तरह मिला लेनेसे बायोकेमिक मलहम प्रस्तुत होता है। इस तरहका मलहम नाना प्रकारके घाव, फोड़ा, एकजिमा, चोट इत्यादिमे व्यवहृत होता है। मुँह, मसूढा और गलेके किसी-किसी रोगमें बायो-केमिक दवा कुल्ला करनेके रूपमें व्यवहृत होता है और यह निम्न शक्तिकी चुनी हुई दवा विचूर्ण या टिकियाको गरम जलमें घोलकर कुल्ला करनेके लिये तैयार होता है। कुल्ला करनेकी औषधको छाननेकी जरूरत नही पडती। मैदा और सूजी आदिका गरम पुल्टिस भी व्यवहृत होता है। रोगग्रस्त स्थानमें औषधका लेप देकर उसके ऊपर पुल्टिसका प्रयोग होता है अथवा पुल्टिसके उस हिस्सेमें दवा लगा दिया जाता है, जो हिस्सा रोगग्रस्त स्थानमें चिपकाया जाता है। ठंण्डे पुल्टिसके लिये तुकमलंगाका व्यवहार होता है। इसे भीगाकर प्रयोग किया जाता है ; कभी-कभी गरम करके भी दिया जाता है।

मिश्रित दवा व्यवहार करना चाहिये अथवा नहीं ?

यदि रोगके लक्षणों द्वारा एकसे अधिक औषधकी आवश्यकता जान पड़े, तो वही दोनों या उससे अधिक औषध एक-एकके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये ; परन्तु उन सभी दवाओंको **एक साथ मिलाकर प्रयोग करना उचित नहीं।**

किसी-किसीके मतसे मिश्रित दवाके व्यवहारसे लाभ हुआ है, ऐसा भी दिखाई देता है।

साधारणतः फास्फेटोंको एक साथ मिलाकर, इस तरह म्यूरियेट्स और सल्फेट सबोंको क्रमसे परस्पर एक साथ व्यवहार होता है। साइलिशिया सभीके साथ मिश्रित है।

प्रयोजनीय आनुसंगिक उपदेश

रोगीका घर—रोगीका घर खुला, प्रकाशयुक्त और हवादार होना चाहिये और यह घर हमेशा साफ-सुथरा रखना उचित है। एकान्त घर ही रोगियोंके लिये उपयोगी है। रोगीके घरमे अनावश्यक आदमियोका भीड या किसी तरहका शोरगुल न हो—इस बातपर विशेष ख्याल रखना उचित है।

जहाँतक हो सके रोगीके घरमें समान कम रखना ही उचित है। रातमें घरके बत्ती या लालटेनकी रोशनीको कम कर देना या किसी चीजसे ढँक देना चाहिये, जिससे रोगीके आँखमें रोशनी न लगे—इस तरहकी व्यवस्था करनी चाहिये।

रोगीका बिछावन यथासम्भव नरम होना जरूरी है। बिछावनका चादर, तकियेका खोल प्रभृति प्रत्येक दिन बदल देना आवश्यक है। अगर हो सके तो इन सबोको धूपमें रोज सुखा लेना और भी निरापद है।

रोगीका व्यवहार किया हुआ गमछा और वस्त्रादि प्रत्येक दिन गर्म जलमें उवाल तथा सावुनसे धोकर रखना चाहिये। अनावश्यक और दूषित वस्त्रादिको जलाकर फेंक देना उचित है।

थूक, खखार और पाखाना-पेशाव किसी भी वर्तनमें रखकर उसे जल्द ही वासस्थानसे दूर नाली या ड्रेनमें डालकर, उसमें फिनाइल छीट देना चाहिये और वर्तनको दुवारा व्यवहारमें लानेके लिये अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये।

घरको रोज अच्छी तरह धो-पोंछकर संक्रामक दोपनाशक द्रव्यादि (जैसे—फिनाइल, लाइजल, ब्लिचिंग-पाउडर इत्यादि) व्यवहार करना चाहिये। सुबह और शामको गन्धकका धुआँ, धूप प्रभृति जलाना उपयोगी और कल्याणकारी है।

स्नान—रोग भोगनेके समय नहाना मना है। वदन पोंछ देना, माथा धोना इत्यादि चिकित्सकके आदेशानुसार किया जा सकता है।

पथ्य—हल्का और सहजमें पचनेवाली और वलकारक पथ्यादि सेवन करना चाहिये। रोग भोगनेके समय दूध, पानीमें वनी सावूदाना मिश्रीका पानी और जरूरत पडनेपर फलका रस इत्यादि दिये जा सकते है। एक साथ ज्यादा न देकर कम मात्रामे बार-वार देना चाहिये।

विशुद्ध औषध—हमेशा विश्वासी दवाखानासे ही औषध खरीदना चाहिये। चिकित्सा-क्षेत्रमे औषध निर्वाचित होनेपर ही वह उपकारी नही होता, परन्तु वह प्राकृतिक और ठीक वैज्ञानिक प्रणालीसे तैयार होना आवश्यक है; अन्यथा औषधका भरपूर लाभ दिखाई नही देता। बहुतसे लोग सस्ता बिक्रीके कम दामका दूध-शर्करा द्वारा औषध तैयार करते है, इसलिये औषध खरीदते समय चिकित्सकोको इस विषयमें सतर्क रहना चाहिये।

मेटिरिया-मेडिका

कैल्केरिया फ्लुओरिका
(Calcarea Fluorica)

दूसरा नाम—केलसाई फ्लुओरिकम, केलसियम फ्लुओराइड, कैल्केरिया फ्लुओरेटा।

उपयोगिता—इसकी विशेष क्रिया अस्थि और ग्रन्थियोंपर है। अस्थि-गात्रपर गांठ-जैसा अर्बुद निकल आना ; कठिन गांठें ; अस्थि-संयोग या अस्थिवेस्टके स्थानोका वढ़ना ; गांठोंका फूलना, उनमें पीव होना ; अस्थियोका वढ़ना और क्षय ; शिराओका बढ़ना ; शारीरिक यंत्र, खासकर गर्भाशयका अपने स्थानसे हट जाना ; जरायुमें छोटा अर्वुद ; स्नायुओका फूलना ; भगन्दर ; भगन्दर रोगमें नासूर पैदा हो जाना ; ववासी ; कानमें कड़ा मैल ; हाथ पैर फटना ; दाँत अलग, असमान और दर्द-भरे रहना ; जरायुसे स्राव प्रभृति रोगोमें लाभ दिखाता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—बहुत अधिक मानसिक अवसाद, धन-नाशकी वृथा ही घोर चिन्ता। हमेशा ही सोचा करता है कि धन नष्ट होकर उसकी बहुत हानि होगी।

मस्तक और खोपड़ी—नये पैदा हुए बच्चोंकी खोपडीमें रक्तमय अर्वुद, उसमें बहुत दर्द। मस्तककी हड्डियोमें जखम और उसके किनारे कडे, रुखडे, जैसे—मूर्छा-भाव तथा मिचली लिये सरका दर्द, दर्द तीसरे पहर पैदा हो, शामको अच्छा हो जाये।

आँख—आँखोमें जाला पडनेकी बीमारीमें यह बहुत लाभदायक है। आँखोंके सामने आगकी चिनगारीकी तरह उडता दिखाई देना। कार्नियामें छोटे-छोटे दाग, कुछ देरतक आँख हिलानेपर धुँधला दिखाई देना। आँखकी पुतलीमें दर्द, आँखें बन्द करने या उसके ऊपर धीरे-धीरे दबाव देनेपर दर्द घटना ; पलकोपर कडा अर्बुद।

नाक—माथेमें सर्दी, छींकनेकी बहुत इच्छा, सूखा, कडा, कफ। बदबूदार, गाढ़ा हरा—पीला आभा लिये या गांठ-गांठ नाकका स्राव। नाककी हड्डीका फूलना, इस औषधके सेवनके बाद सड़ी हड्डीकी बदबू गायब हो जाती है।

चेहरा—दाँत-दर्दके कारण गाल फूले, जबडेकी हड्डीका फूलना, ओठोपर सर्दीके जखम।

मुँह—मसूढ़े फूले, जबड़ा फूला, जबडेकी हड्डीमें कड़ापन और सूजन। मुँहके कोनेमें सर्दीके जखम, मुँह बहुत सूखना। वंशगत उपदंश बतानेवाला मुँह और कंठमें जखम।

जीभ—जीभ फटी, कभी दर्द रहता है, कभी नही।

दाँत—देरसे दाँत निकलना, दाँतोंका रंग बदरंग ; रुखड़ा ; दाँतमें पीले, दर्द हो या न हो। दाँत अपरिपुष्ट। भोजनके पदार्थ दाँतमे लगनेसे ही दर्द।

कंठ—वायुनलीमें डिफ्थीरियाका प्रसार। अलिजिह्वा लटकी, सुरसुरी और कफ। सवेरे कफ निकालनेकी चेष्टा, कंठमें जलन, गर्म चीजें पीनेपर आराम मिलना।

पाकाशय—अनपची चीजोका कै होना ; हिचकी आना ; दिनमें अधिक पेट फूलना ; यकृतमें काटने-जैसा दर्द ; हिलने-डुलनेसे आराम।

उदर और मल—वायु-रोध ; मलद्वार फटना ; खूनी बवासीर, मलद्वारमें खुजली, मानो चीटी काट रही हो ; भीतरी या बाहरी बवासीर, पीठतक दर्द और कब्जियत।

मूत्रेन्द्रिय—बहुत वार वदबूदार पेशाब होना, पेशाब थोड़ा और गहरे रंगका और उससे दुर्गन्ध आती है।

जननेन्द्रिय—अंडकोषका कडा और गांठ-गांठ हो जाना। अण्ड-कोषमें जल-संचय ; जरायुका स्थानच्युत होना ; जरायु और जांघमें खीचन-जैसा दर्द होना। जरायु मानो नीचे झूलता आ रहा हो।

गर्भावस्था—ठीक-ठीक संकोचन न होनेकी वजहसे प्रसवके बादका दर्द। स्तन कडे, गांठ-गांठ ; गर्भावस्थामें खिलानेपर सरलतासे प्रसव होता है।

श्वासयन्त्र—स्वरनलीमें सुरसुरी, सूखापन और रुखड़ापन, जोरसे पढ़नेके कारण गलेमें खराश पैदा हो जाना ; **घुंड़ी खाँसीकी प्रधान दवा है।**

ज्वर—ज्वरका आक्रमण, एक सप्ताह या उससे अधिक रहना, बहुत प्यास, भूरी जीभ।

निद्रा—भयदायक बहुत तरहके डरावने सपने ; सपनेमें नये-नये स्थान और दृश्य देखना।

शक्ति—३x, ६x और १२x।

कैल्केरिया फास्फोरिका

(Calcarea Phosphorica)

दूसरा नाम—कैलसिस फास्फस, फास्फेट आफ कैलसियम, फास्फेट आफ लाइम। यह औषध विचूर्ण रूपमें तैयार की जाती है।

उपयोगिता—सब तरहके अस्थि-रोगोंपर इसकी क्रिया होती है। जैसे—शरीरमें चूनेका भाग कम हो जाना, इस कारणसे शरीरका न बढ़ना ; रक्तहीनता ; **अच्छे-अच्छे भोजन मिलनेपर भी बच्चेका**

शरीर पुष्ट न होना। अजीर्ण ; शरीर सूख जाना ; हड्डियोका न बढ़ना ; बालास्थि विकृति (रिकेटस) ; शरीरकी टूटी हुई हड्डी जल्दी नही जुड़ती, **बच्चोंका ब्रह्मतालु जल्दी नहीं भरता** ; बहुत दिनोतक पिलपिला रह जाता है। बच्चोके दाँत जल्दी नही निकलते ; घुटनेकी जोड़की जगह फूली और सफेद रंगकी रहती है। बच्चोको दॉत निकलनेके समय तकलीफ, अकड़न और सुस्ती ; हाथ-पैर ठण्डे ; रक्त-संचालन क्रियामें गडबड़ी। दॉत निकलनेके समय पतले दस्त आना ; मल हरा, आँव मिला, पानीकी तरह, अजीर्ण पदार्थ जैसा, बदबूदार और छानाके जैसे सफेद पदार्थ मिले रहते है। बच्चो और बालिकाओकी बहुत कमजोरी, खड़े नहीं हो सकते, जल्दी चल नही सकते। **गलेमें कमजोरी और सर सीधा नहीं रख सकता।** क्षयकी बीमारी तथा अन्य ऐसी बीमारियॉ जिनमें शरीर बहुत क्षय हो जाता है, उनमें यह बलकारक औषध जैसा रोगमें काम करता है। जहॉ पेशाबमें चूना दिखाई दे तथा अन्य चीजे भी उसमें सम्मिलित हो, वहाँ यह तुरन्त लाभ दिखाता है।

जल्दी-जल्दी बढ़नेवाले बालोंकी रक्तहीनता, बहुत या जल्दी-जल्दी बच्चे होनेके कारण जो स्त्रियॉ दुर्बल हो गई हो ; बहुत दिनोतक रजः-स्राव या श्वेत-प्रदरकी वजहसे दुर्बलता। इसी तरह शरीरको क्षय करनेवाला ब्रांकाइटिस, यक्ष्मा, उदरामय ; रात्रिके समय होनेवाला पसीना, गण्डमाला, फोडा वगैरहमें बहुत लाभ पहुँचाता है।

यौवनागमके समय बालिकाओंमें रक्तहीनता, मुँहासे, सरमें—खोपडीमें दर्द, पेट फूलना, अन्न न पचना और भोजन कर लेने बाद पेट फूलना घट जाना . मानसिक दुर्बलता ; बेचैनी ; कामोन्माद ; अंडलाल जैसा श्वेत-प्रदर ; नीदकी अवस्थामें रो उठना ; वर्षामें बात रोग होना ; मस्तिष्कमें जल-संचय होना ; मोटे-ताजे बच्चोके कपालमें बहुत ज्यादा पसीना ; शीत या वर्षाके समयका बात।

ऋतु-परिवर्त्तन, तरी या हिलने-डुलनेपर रोगका बढ़ना और सो जानेपर रोगका घटना, पूर्वी हवा और मानसिक परिश्रम करनेपर रोगका बढ़ना। गर्मी और वसन्त ऋतुमें तथा गर्म सूखी ऋतुमें आराम रहना।

संक्षिप्त लक्षण

मन—हमेशा भुलक्कर ; मानसिक चिन्ता सब रोगोके साथ रहती है ; मानसिक परिश्रम सहन नही होता ; कमजोर मस्तिष्कके लडके।

मस्तक—बुढ़ापेमें सरमें चक्कर आना, सरमें ठंडकका भाव ; दूसरी वार दॉत निकलनेके समय सर-दर्द तथा मानसिक परिश्रम और ऋतु-परिवर्त्तनमें सर-दर्द ; विद्यालयके युवक-युवतियोको सर-दर्द ; आँखोपर मानो किसीने वरफ रख दिया है ऐसा मालूम होना ; बच्चोका ब्रह्मतालु वहुत दिनोंतक नही भरता ; खोपडी नर्म और पतली ; मस्तिष्कमें जलसंचय, वहुत वड़ा सर, हड्डियाँ मानो अलग रहती है।

आँख—दॉत निकलनेके समय आँखोमें प्रदाह। कृत्रिम रोशनी सहन नही होती। कार्नियामें जखम।

कान—वाहरी कानमें ठंडक मालूम होना। कानके चारो ओरकी हड्डीमें दर्द, जलन और स्राव। कानमें नाना प्रकारके शब्द।

नाक—सर्दी, ठण्डे कमरेमें नाकसे पानी गिरना और गर्म कमरेमें कमी, तीसरे पहर नाकसे रक्तस्राव ; नाककी ठोर वहुत ठंडी रहती है।

चेहरा—लडकियोके चेहरेपर फुन्सियाँ ; चेहरा फूला, मैला, तेलहा-जैसा, चेहरेपर ठण्डा पसीना।

मुँह—सवेरे वेस्वाद मुँह, सर-दर्द ; तालु फूलनेकी वजहसे सवेरे मुँह खोलनेमें कष्ट। जीभ फूली, उसपर दाने, दाँत जल्दी न निकलना जल्दी-जल्दी दॉतोंका क्षय ; रातमें काटने-फाडने जैसा दाँतका दर्द ;

कंठकी बाहरी गांठें फूली हुईं ; निगलनेमें बहुत तकलीफ ; तालुमूलका बढ़ना ; गलेमें दर्द रहता है ।

पाकाशय—छातीमें जलन और पेट फूलना ; अस्वाभाविक भूख ; भोजनके बाद दर्द और छातीमें जलन ; थोडा खानेसे भी पेटकी तकलीफ बढ जाना ; उपवासमें मेरुदण्डमें दर्द ; बच्चा लगातार दूध पीना चाहता है और बीच-बीचमें कै कर देता है । ठण्डा पानी पीनेके बाद कै ; बहुत पेट फूलना ; पेट धँसा और थुलथुला रहता है ।

उदर और मल—नाभीके चारों ओर दर्द ; बदबूदार वायु निकलनेपर दर्द घटना ; शिशु-हैजा ; यक्ष्माका उदरामय ; दस्त गर्म, पानी-जैसा, बदबूदार, हडहडाहटकी आवाज ; पहली बार दाँत निकलनेके समय वायुके साथ दस्त ; मलद्वारमे सुई वेधनेकी तरह दर्द ; मलद्वारका फटना ; भगन्दर, उसके साथ ही पर्यायक्रमसे वक्षमें दर्द ।

मूत्रयन्त्र—बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, मूत्र-ग्रन्थिमें दर्द ; बहुत कमजोरीके साथ बार-बार पेशाब ; पेशाब बदबूदार ; पथरी, चूना, पेशाबकी अधिकता ; मूत्राशयमें पथरी ; अण्डकोषमें जल-संचय होता है ।

पु०-जननेन्द्रिय—विशेष कामेच्छा ; प्रमेहसे पैदा हुआ बात, सर्द ऋतुमें वृद्धि ; अंडकोषका फूलना ।

स्त्री-जननेन्द्रिय—जरायु प्रदेशमें दुर्बलता और सर्द ; जरायुका अपने स्थानसे हटना और बातका दर्द । जरायुकी स्थानच्युति, दुर्बलता, तबियत धँसती जाना ; पाखाना-पेशाबके समय तकलीफ बढ़ना ; श्वेत-प्रदर ; अण्डेके सफेद अंश-जैसा स्राव ; बालिकाओंको बहुत छोटी उमरमें ऋतु होना । ऋतुकालमें प्रसव-वेदना जैसा दर्द ; योनि-स्थानमे जलन ; स्तन कडे ।

श्वासयन्त्र—दिन-रात गलेमें सुरसुरी और कफ। हमेशा ठण्डी साँस, स्वरभंगता ; दाँत निकलनेके समय खाँसी।

गर्दन और पीठ—बच्चोंका गला पतला ; वात-जैसा दर्द और अकड़न, सवेरे सोकर उठनेपर पीठमें दर्द।

अंग-प्रत्यंग—कन्धे और वाँहमें वातकी तरह दर्द, सन्धियोंमें वातका दर्द ; जांघके ऊपर दर्द ; बच्चा चल नहीं सकता ; अस्थिकी सीवन या अस्थि और उपास्थिके संयोगमें दर्द होता है।

नींद—औंघाई, खासकर वयोवृद्धोंको, सवेरे जल्दी उठा नहीं जाता; हमेशा जम्हाई आती है।

त्वचा—सूखी, ठण्डी, नहानेबाद लाल हो जाती है और खुजलाती है। तांबेकी रंगकी फुन्सियाँ, ऊपरी अंगमें।

शक्ति—३x, ६x।

कैल्केरिया सल्फ्यूरिका

(Calcarea Sulphurica)

दूसरा नाम– कैलसियाई सल्फ ; कैलसियम सल्फेट ; जिप्सम ; प्लैस्टर आफ पेरिस।

उपयोगिता—पीव-स्रावपर इसकी विशेष क्रिया है। फोड़ा ; सर्दी ; सफेद पीला स्राव ; विषैले फोड़ा ; छाले जैसा घाव ; शरीरके किसी भी स्थानमें पीव पैदा होनेकी सम्भावना ; कार्नियाका जखम या पुराना आमाशय या पुराने जखमसे पतला पीव वहना ; ग्रन्थियोंका फूलना ; तालुमूल-प्रदाह ; इन कारणोंसे धीमा-धीमा बुखार ; मसूढ़ेमें फुन्सियाँ ; भगन्दर ; मलद्वारमें वहुत दर्द-भरे फोड़े ; यकृत और मूत्र-

यन्त्रकी बीमारियाँ ; खाँसी ; फेफड़ेका प्रदाह ; न्युमोनिया और ब्रांकाइटिसकी तीसरी अवस्था ; सरमें भार ; जी मिचलाना ; स्नायुशूल ; फल और खट्टी चीजे खानेकी इच्छा ; फुन्सी या फोड़े (खासकर मुँहमें) ; पुराना वात ; चर्म-रोग ।

संक्षिप्त लक्षण

मन—हमेशा परिवर्त्तनशील । एकाएक याददाश्तका गायब हो जाना अथवा ज्ञान लोप हो जाना । चिन्तित ; भयार्त्त ।

मस्तक और खोपड़ी—लडकोके माथेमें रूसी ; मिचलीके साथ सर-दर्द ; ऐसा मालूम हो, मानो आँखे धँसी जाती है ; सरके केश झडना ।

आँख—आँखोके सफेद अंशमें गहरा जखम ; आँखोका प्रदाह, गाढ़ा, पीला पीवका स्राव ।

कान—मध्य कानसे गाढ़े स्रावके साथ बहरापन, कभी-कभी रक्त-मिला पीव, कानके चारों ओर फुन्सियाँ ।

नाक—सर्दी, गाढ़ा, पीला-स्राव, कभी-कभी रक्त मिला ; नाकके एक ओरसे रक्त-स्राव ।

चेहरा—गाल फूलना, दाढ़ीमें फुन्सियाँ ।

मुँह—मुँहमें ओठोके भीतर जखम, मुँह सूखा, गर्म ; जीभ फूली, सफेद, मटमैला सूखा लेप ; दाँतोमें वात-जैसा दर्द ; पीली मैल जमी जीभ ।

पाकाशय—फल खानेकी या चाय पीनेकी इच्छा । बहुत प्यास और भूख ; मिचलीके साथ सरमें चक्कर ; पेटमें जलनकी तरह दर्द ।

उदर और मल—तेज उदरामय ; रक्त-मिश्रित रक्तामाशय, आँतोंमें जखम ; मलद्वारमें बिना दर्दका जखम ; भगन्दरमें काँच निकलना ।

मूत्रयंत्र—हेक्टिक ज्वरमे लाल पेशाव ; गर्मीकी पुरानी दवी अवस्था । ऋतुस्रावके बाद योनिमें खाज, भगोष्ठोमें सूजन ।

श्वासयंत्र—हेक्टिक ज्वरके साथ गाढ़ा वलगम ; दमा ; छातीके चारों ओर दर्द । ब्रांकाइटिसकी तीसरी अवस्था, छातीमे कमजोरी और जलन ।

पीठ—पीठ और गूदास्थिमें दर्द, पीठमें कार्वङ्कल ।

नींद—दिनमें तन्द्रा, रातमे जागरण, भयपूर्ण सपने ।

शक्ति—६x और १२x ।

फेरम फास्फोरिकम

(Ferrum Phosphoricum)

दूसरा नाम—फेरी फौस्फस ; फास्फेट आफ आयरन ।

उपयोगिता—मांस-तन्तुओपर इसकी विशेष क्रिया है ; लोहके अभावसे शरीरमें जो खराबियाँ पैदा हो जाती है, उनपर इसकी बहुत अधिक क्रिया है । अतएव आँख, कान, दाँत, पाशय वगैरह जहाँ कही प्रदाहकी पहली अवस्था हो, **दर्द, जो हिलने-डुलनेसे बढ़े और सर्द प्रयोगसे घटे, किसी यंत्र आदिसे जख्म**—इनपर यह बहुत काम करता है । वायुनलीभुज-प्रदाह (ब्राकाइटिस) ; फेफड़ेका प्रदाह (न्युमोनिया) ; फुस्फुसवेस्ट-प्रदाह (प्लुरिसी) ; सव तरहके प्रादाहिक ज्वर ; सरमें दर्द, सरमें चक्कर आना ; वात, कटिवात ; विसर्प रोग ; गलेका जखम ; खाँसी, सर्दी, माथेमें श्लेष्मा वगैरहकी पहली अवस्था । लाल चमकीला रक्तस्राव, अर्श, आमाशय, नाकसे रक्त गिरना, फोड़ा, पेशाव रोकनेमें असमर्थता, सरमें टपकका दर्द । सर्दी लगनेकी वजहसे उदरामय वगैरहमें इसका प्रयोग होता है ।

संक्षिप्त लक्षण

मन—उदासीनता, आशा और उत्साहहीनता ; थोड़ी-सी बात पहाड़-जैसी मालूम होती है। दिमागकी गड़बड़ी, भ्रम, टङ्कार, बहुत बकनेवाला, मुँहसे ठीक शब्द न निकले।

मस्तक—मस्तकमें रक्तकी अधिकता ; ऋतुकालमें खोपड़ीमें दर्द, दाहिनी कनपटीमें अधिक दर्द। बच्चोंका सर-दर्द ; धूप या गर्मीका बुरा प्रभाव ; लाल चेहरा, चढ़ी हुई आँखें, खोपड़ीमें दाने निकलना।

आँख—आँखोमें प्रदाह, आँखें बहुत लाल, तेज दर्द, पीव नदारद, जलन, ऐसा मालूम हो मानो आँखोमे बालू पड़ी है।

कान—आवाज अच्छी न लगे, सर्दीसे कानमे दर्द, प्रदाह, रोगवाली जगह लाल, काटने जैसा तेज दर्द, कानसे पीव बहना, उसमें खून मिला रहना, प्रदाहके कारण बहरापन, स्राव निकलनेपर तकलीफका घटना।

नाक—सर्दीकी आरम्भिक अवस्थाका स्राव, नाकसे चमकीला लाल रक्त गिरना।

चेहरा—चेहरा लाल, आँखोके चारो तरफ काला दाग, गाल और गर्म ; चेहरेका स्नायुशूल, सर हिलाने या झुकानेसे बढ़ना।

मुंहके भीतर—मसूढ़े गर्म और प्रदाहित ; मुँहकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंमे लाली ; रोआँदार जीभ या साफ ; लाल जीभके साथ सर-दर्द ; जीभमें प्रदाह ; गाल लालके साथ दाँतमें दर्द ; गर्मीसे बढ़ना ; सर्दीसे घटना ; जाड़ा ; बन्द कमरेमें दर्द ; जखम-भरा तालु ; **कंठ-नलीका जखम, सूखा, लाल, प्रदाहित और दर्द-भरा।** डिफ्थीरियाकी पहली अवस्था।

पाकाशय—मांस और दूधसे अरुचि ; ठण्डे पानीकी प्यास, उत्तेजक पदार्थोंकी इच्छा ; **अजीर्ण, खाई हुई चीज वमन, लाल चमकीला रक्त-वमन** ; खट्टी डकार आना।

उदर और मल—आँतोंके प्रदाहकी पहली अवस्था ; पानीकी तरह अजीर्ण या रक्त-मिला मल ; रक्तामाशयकी पहली अवस्था, बहुत रक्त-स्राव, अंश ; बच्चोंका गर्मीके दिनोंका उदरामय, हरा पानी-जैसा मल।

मूत्रयन्त्र—पेशाबकी बहुत इच्छा, खाँसीके साथ पेशाव, अनजानमें पेशाव, वार-वार पेशाव।

पु०-जननेन्द्रिय—अंडकोषमें दर्द ; बाघी—बहुत गर्म, ज्वर-भाव, प्रमेह रोगकी पहली अवस्था।

स्त्री-जननेन्द्रिय—प्रति तीसरे सप्ताह ऋतुस्राव, इसके साथ ही जरायुका नीचेकी ओर आकर्षण, माथेकी खोपड़ीमें दर्द, योनिमे अकड़न, सूखापन और गर्मी।

श्वासयन्त्र—किसी भी तरहकी प्रादाहिक बीमारीकी पहली अवस्था। फेफड़ेमें रक्तकी अधिकता, रक्त-वमन, सूखी खाँसी, छातीमें जखम मालूम होना ; स्वरभंग ; न्युमोनिया रोगमें केवल रक्त मुँहसे निकलना। रातमे आराम मालूम होना ; छोटे बच्चोंका नांकाइटिस।

अंग-प्रत्यंग—गला अकड़ा, सन्धिवात, कन्धेका वात, हाथोंका फूलना और दर्द ; तलहत्थी गर्म, अंगुलहाड़ा।

नींद—नींद न आना और बेचैनी, चिन्ताभरे सपने, दोपहरमें औंघाई।

ज्वर—सब तरहके सर्दी ज्वर और प्रादाहिक ज्वरकी पहली अवस्था ; रोज एक बजे दिनके समय जाड़ा। तेज बुखार, तेज नाड़ी, रातमें दुर्गन्धित पसीना।

शक्ति—६x से १२x ; रक्तहीनतामें १x या २x।

कैलि म्यूरियेटिकम
(Kali Muriaticum)

दूसरा नाम—पोटासियम क्लोराइड, कैलि क्लोराटम, कैलि, क्लोरिडम आदि।

उपयोगिता—शरीरके किसी भी स्थानकी प्रदाहकी दूसरी अवस्था अर्थात् पकनेके पहले और सर्दी रोगमे यह बहुत लाभदायक है। जीभकी जड़में सफेद या धुमैले रंगका लेप और गाढ़ा सफेद कफ निकलना इसका निर्देशक लक्षण है। वात रोगके बाद सन्धियोका फूला रह जाना और तालुमूलकी गांठके नये प्रदाहमें यह अत्यन्त लाभदायक है। रोगकी पुरानी अवस्थामे थक्का-थक्का कफ, खाँसी, स्वरभग; सूखा श्लेष्मा, गले या कानके पीछेकी गांठका सूजना, वायुनली-सम्बन्धी बीमारियाँ; जी मिचलानेके साथ सरमें दर्द, कानमें भों-भों आवाज; मुँहमें जखम, मुँहमें लारका अभाव; **डिफ्थीरियाकी प्रधान दवा है।** वात, वातसे पैदा हुआ दर्द; अस्थिके जोडकी जगह फूली; समूचे शरीरमें खुश्की और रूसी; कब्जियत; पांडु रोग; कार्बङ्कल; कानमें पुराना पीव; गलेका जखम; चेचक; आरक्त ज्वर; विसर्प रोग; एकजिमा; फेफड़ेका प्रदाह (न्युमोनिया); फुस्फुसवेस्ट-प्रदाह (प्लुरिसी); श्वेत-प्रदर; उपदंश; प्रमेह; रक्त-प्रदर; शोथ; उदरामय; सान्नि-पातिक ज्वर; प्लेग; अजीर्णकी वजहसे दमा वगैरहमें बहुत लाभ करता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—रोगी उपवासकी इच्छा करता है।

मस्तक—मिचलीके साथ कफ, दूधकी तरह कफ निकलना, माथेमें रूसी।

आँख—आँखसे सफेद अथवा पीला श्लेष्मा निकलना, आँखमें मानो बालू पड़ी हो, मोतियाबिन्द।

कान—मध्य कानका पुराना पीव-स्राव। मध्य कानमें सूजनकी वजहसे बहरापन। कानकी ग्रन्थियोंका फूलना ; कंठ रोगके कारण बहरापन ; कानमें भिन्न-भिन्न आवाज।

नाक—सर्दी, बलगम सफेद, गाढ़ा, माथेमें बलगम ; जीभ भूरी, सूखी सर्दी, दोपहरमें नाकसे रक्तस्राव।

चेहरा—गाल फूले और दर्द भरे।

मुँह—बच्चे या दूध पिलानेवाली माताके मुँहमें सफेद छाले, सैंकर, जबड़े और गलेकी गाठ फूली ; जीभ प्रदाहित, जीभकी जड़में भूरा सफेद, सूखा लेप। दाँतोंके मसूढ़े फूले ; गाल फूला और मसूढ़ेमें दर्द। **डिफ्थीरियाकी प्रधान दवा है।** इसीका कुल्ला करना चाहिये। कंठमूल फूला, कफ निकालनेमें दर्द। गर्मीकी वजहसे कंठमें घाव। तालुमूल-प्रदाहकी सूजन पैदा होते ही दूसरी दवा।

पाकाशय—भूख न लगना, अजीर्ण और मन्दाग्नि ; जीभ धुमैला लेप-चढ़ी, अजीर्णमें सफेद कफ, कफ-मिला वमन, कब्जियत, पेटमें दर्द, मुँहका स्वाद बिगड़ा।

उदर और मल—यदि सर्दीकी वजहसे कामला रोग हो ; यकृतकी क्रियाकी गड़बड़ी ; कब्जियत और जीभपर मैल ; टाइफायड ज्वरमें दस्त पतले, पेट फूला। तेल या चर्बी-मिश्रित पदार्थ खानेके बाद उदरामय ; पीला, मिट्टीके रंगका सफेद, चिकना दस्त। रक्तस्राव, खून-भरे मसे, खून काला और गाढ़ा।

मूत्रयन्त्र—मसानेमें प्रदाहकी दूसरी अवस्था, जब सूजन पैदा हो जाती है और गाढ़ा श्लेष्मा-स्राव होता है। प्रमेहकी प्रधान दवा। उपदंशकी पुरानी अवस्था या दबी अवस्था।

स्त्री-जननेन्द्रिय—बहुत देरसे ऋतु या रुका हुआ ऋतु ; बहुत स्राव, थक्का और काला खून। ऋतु रुका हुआ—रजोरोध। श्वेत-प्रदर—दूध जैसा श्लेष्माका स्राव ; स्राव गाढ़ा। जरायु-मुखमें जखम, उससे भी सफेद गाढ़ा स्राव होता हो। गर्भावस्थामें—सवेरे तबियत खराब, सफेद श्लेष्मा वमन ; सूतिका ज्वरकी खास दवा है।

श्वासयन्त्र—स्वरबद्ध ; कंठमें सूखापन ; जीभ सफेद, पेटकी गड़बडीसे दमा, कफ, सफेद, कडा, जल्दी नही निकलता। यक्ष्मामें कफ गाढ़ा, सफेद, दूध जैसा। घुॅडी खाँसीमें कफकी प्रधान दवा है। न्युमोनिया और प्लुरिसीकी दूसरी अवस्था।

अंग-प्रत्यंग—गलेकी गांठ फूली हुई ; वात ज्वर ; जोडोंके चारों ओर सूजन। गठियाका दर्द—चलनेसे बढ़ना। बिछावनकी गर्मीसे वातका दर्द बढना ; कूल्हेके जोडमें दर्द ; वातकी दूसरी अवस्था।

निद्रा—थोडी-सी आवाजमें ही चौक उठना। अस्थिर निद्रा।

ज्वर—किसी भी अंग-प्रत्यंगमें प्रदाहकी दूसरी अवस्था। आन्त्रिक अथवा टाइफायड ज्वरकी दूसरी दवा। वात-ज्वर तथा सूतिका ज्वरमें पसीना होनेकी प्रधान दवा है।

त्वचा—जखम, फोडा, कार्बङ्कल आदिकी दूसरी अवस्था। टीका लेने बाद चर्म-रोग। खुजली ; विसर्प ; मुॅहासे ; चेचककी प्रधान दवा है।

शक्ति—६x या १२x। डिपथीरियामें १०-१५ ग्रेन ३x शक्तिका एक बडे गिलासमें घोलकर उससे कुल्ला करना चाहिये।

कैलि फास्फोरिकम

(Kali Phosphoricum)

दूसरा नाम—पोटासियम फास्फेट, फास्फेट आफ पोटास इत्यादि ।

उपयोगिता—मास-पेशी, स्नायु, मस्तिष्क और रक्तपर इसकी प्रधान क्रिया है । अत्यधिक स्नायविक दुर्बलता, मन दुर्बल हो जाना, स्नायविक अवसन्नता, स्नायु-रोग, रक्ताल्पता, रक्त दूषित हो जाना, सडनेवाली अवस्था ; मूल, मूत्र; पसीना आदिमें वहुत बदबू ; सारे शरीरमें फुन्सियाँ ; बदबूदार सर्दी, नाकसे वहुत बदबूदार स्राव निकलना ; उदरामय ; कानमें दर्द ; गला अकडना ; दमा ; सर्दी-खाँसीकी वजहसे गर्मीके दिनोंका बुखार ; मृगी ; सरमें चक्कर, मस्तिष्कमें रक्तका अभाव ; मस्तिष्कमें विकार ; स्मरण-शक्तिकी कमी ; दुबलापन ; मृगी ; अनिद्रा ; बहुत शराब पीनेकी वजहसे अनिद्रा ; पेटमें दर्द ; अत्यन्त मानसिक दुर्बलता ; रक्तका रंग काला ; नाडी दुर्वल ; अजीर्ण ; सूतिका ज्वर ; काले रंगका चेचक ; रक्तस्राव ; सारे शरीरमें फुन्सियाँ ; जरायुसे रक्तस्राव ; गुल्मवायु ; उन्मत्तता ; आमाशय-प्रदाह, पाकाशयका जखम, हूप खाँसी, वात, आमवात वगैरहमें इसका प्रयोग होता है ।

संक्षिप्त लक्षण

मन—उत्कंठा, स्नायविक उत्तेजना, अवसाद ; हमेशा बुरी भावना, वहुत कामकी वजहसे मस्तिष्कमें क्लान्ति, स्मृतिहीनता, रातमें भय, व्यवसाय या धन-सम्बन्धी हताश-भाव ; स्वप्नमें घूमना । हिस्टीरिया, पागलपन तथा अन्य मस्तिष्क-विभ्रम । सौरी-बाई, ठण्डी साँसें ।

मस्तक—सोने और खडे होनेपर सरमें चक्कर आना, बैठने और ऊपर देखनेपर और भी बढ़ जाना ; मस्तिष्कमें खूनकी कमी ; सरमें

दर्द, उठ बैठनेसे दर्द घट जाना ; थकावटकी वजहसे सरमें दर्द, सरमें दर्दके साथ पेट खाली मालूम होना ।

कान—कानमें गुनगुन या गरजनेका शब्द, कानसे बदबूदार स्राव होना ।

नाक—नाककी कितनी ही बीमारियाँ ; पीला स्राव निकलता है।

चेहरा—चिपटा, धसा हुआ । गड्हेमें धसी आँखें ; लाल, गर्म, जलती हुइ आँखें और गुलाबी, फिर पीला और उतरा हुआ, चेहरेकी दाहिनी ओर स्नायुशूल ; ठण्डे प्रयोगसे आराम मालूम होता है ।

मुँह—बहुत बदबूदार श्वास-प्रश्वास, ओठपर दाने और जखम ; जीभ सवेरे बहुत सूखी, मानो तालुसे सट जायगी, जीभ पीली, दाँतमें दर्द, मसूढोंसे सहजमें ही रक्त निकलना ; गलेमें सडनेवाला गलक्षत, दिन-रात कुछ निगलनेकी इच्छा, स्वरभंग, गलग्रन्थिका बढ़ना, दाहिनी गलग्रन्थिमें दर्द ।

पाकाशय—पाकाश खाली मालूम होना, पाकाशयका जखम ; स्नायविक दुर्बलताके कारण मन्दाग्नि, भय या उत्तेजनासे पेटमें दर्द ; बहुत प्यास, मिचली और खट्टी कै होती है ।

तलपेट—यकृत स्थानको दबानेसे दर्द, पेट फूलना और कलेजेमे गडबडी मालूम होना ; तलपेट वायुसे भरा ; उदर-शूल—झुकनेसे आराम मिलता है ।

मल—दुर्बलता अथवा भय आदि कारणोसे उदरामय, बहुत पतला दस्त । मांड-जैसा, खून-मिला, बदबूदार । अकडनके साथ पानीकी तरह दस्त । हैजाका लक्षण ; भोजनके समय दस्त ; रक्तामाशय और रक्त-मिला मल, प्रलाप ; मलद्वारका अपने स्थानसे हट जाना ।

मूत्र—बडे लडके भी शय्यापर पेशाब कर दे ; पेशाब रोकनेमें असमर्थ, पीले रंगका पेशाब ; मूत्रनलीसे रक्तस्राव होना ।

पु०-जननेन्द्रिय—अतिशय कामेच्छा ; स्वप्नदोष ; रति-क्रियाकी कमजोरी ; संगमके बाद बहुत कमजोरी ।

स्त्री-जननेन्द्रिय—समयसे पहले ऋतु ; अनियमित, थोड़ा, काला बदबूदार ऋतुस्राव । स्वल्परजः विलम्बसे रजःस्राव, मन बहुत दुर्बल तथा स्नायविक दुर्बलता । मानसिक स्रावके बाद बहुत कामेच्छा । हिस्टीरिया, मानो कंठतक एक गोला चढ़ता है ; दुर्बल स्त्रियोंको बाधक-वेदना । गर्भावस्थामें—सौरी-बाई ।

श्वास-यन्त्र—कुछ खाते ही दमाका जोर हो जाना । सीढ़ी चढ़नेमें श्वासकष्ट, खाँसी और पीले रंगका बलगम निकलता है ।

अंग-प्रत्यंग—कमजोर ; पीठ और हाथ-पैर सुन्न ; परिश्रमसे बढ़ना ; पक्षाघात या गठियाका लंगड़ापन ; तलहत्थी और तलवेमें जख्म ।

स्नायविक लक्षण—शरीरके किसी भी अंगमें स्नायविक दर्द ; सुस्ती; ताकतका घटना ; रोशनी और आवाज अच्छी न लगना, प्रसन्नता तथा थोड़ा हिलनेसे आराम मिलना ; आराम करने और एकान्तमें रहनेसे वृद्धि ।

निद्रा—स्नायविक कारणोंसे अनिद्रा, सवेरे उठनेकी इच्छा न होना ।

ज्वर—स्वल्पविराम ज्वर, दुर्बल करनेवाला पसीना होना ; टाइफस ज्वर, सान्निपातिक ज्वर ; जीभ रूखी और पीली, अनिद्रा, मस्तिष्क-विभ्रम । बहुत दुर्बलता, मुँहमें बदबू ; दाँतमें काला दाग, प्रलाप, अवसाद ।

शक्ति—२x, ३x, ६x, १२x ।

कैलि सल्फ्युरिकम
(Kali Sulphuricum)

दूसरा नाम—पोटासियम सल्फेट, कैलि-सल्फेट ; सल्फेट आफ पोटास।

उपयोगिता—यह प्रदाहकी तीसरी अवस्थामें प्रयोग किया जाता है। पीले बलगमका स्राव होना। लसदार स्राव और श्लेष्माकी तीसरी अवस्थाकी उत्तम दवा है। कितने ही चर्म-रोगोंमें भी यह लाभदायक है। श्लेष्मा ढीला, घरघर आवाज और सर्दीके साथ दमा ; गला, कान, पाकाशय आदिसे पीला कीचड़-जैसा कफ निकलना ; सरमें दर्द, ठण्डेसे आराम मिलना। रूसी ; प्रदरका स्राव भी पीला ; शरीरमें दर्द, सारे शरीरमें दाद या रुसी। जाड़ा लगना ; दाँतमें दर्द। आरक्त ज्वर, चेचक, विसर्परोग ; वायुनलीभुज-प्रदाह (ब्रांकाइटिस), घुंडी खाँसी, डिफ्थीरिया, हूप-खाँसी, फुस्फुस-प्रदाह (न्युमोनिया), हैजा, सान्निपातिक ज्वर इत्यादिकी तीसरी अवस्था, मैलेरिया ज्वर पाकाशयमे श्लेष्मा की वजहसे पांडु रोग शूलका दर्द, पाकाशयमें भार, अजीर्ण, आधे अंगका पक्षाघात, नाक या कानसे बदबूदार पीव स्राव, कानमें फोडा खुजली, छोटी माताकी गोटियाँ बैठ जाना वगैरह रोगोमें इसका प्रयोग होता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—गिरनेका भय ; बहुत उत्तेजनशील। मानसिक परिश्रमसे वृद्धि। हमेशा जल्दवाज।

मस्तक—देखने और उठनेमें सरमें चक्कर, गर्म घरमें और शामको जोरका सर-दर्द, ठंडी हवामें आराम। खोपडी साफ, केश झड़ना, रूसी।

आँख—आँखोंसे पीला या हरी आभा लिये स्राव ; आँखमें जाला, कार्नियामे जखम।

कान—कानसे स्रावके कारण बहरापन, कानमें दर्द, पीला पानी-जैसा स्राव।

नाक—पानी-जैसा या पीला लसदार स्राव। शामको रोगी बेचैन रहता है। पुरानी सर्दी, जिसमें पीला कफ निकलता है, उसमें यह लाभ करता है।

चेहरा—उतरा हुआ या पीला चेहरा।

मुँह—निचला ओंठ फूला, सूखा, मुँहमें जलन। जीभपर पीला लेप, कभी-कभी किनारा सफेद। ओठ, जीभ और मसूढ़े सफेद ; शामको और गर्मीमें दाँतका दर्द बढ़ जाना ; कंठमें सूखापन, बार-बार बलगम निकलना, तालुमूल फूला ; निगलनेमें कष्ट।

पाकाशय—पेटमें जलन, प्यास, मिचली, वमन, अजीर्ण, मानो पेटमें भार आर बोझ-सा रखा हो ; पेटमें शूलका दर्द। गर्म चीजें पीनेसे भय।

तलपेट और मल—पीला पानी-जैसा चिकना उदरामय ; शूल-जैसा दर्द। उत्तेजना, गर्मी या एकाएक सर्दी लगनेकी वजहसे दर्द। पाखानेके समय मलद्वारमें दर्द ; बाहरी और भीतरी रक्तस्रावी अर्श। सवेरे ज्वर कम होनेवाला टाइफायड ज्वर। मलद्वारमें खुजली।

पु०-जननेन्द्रिय—सूजाक—पीला या हरा स्राव। अवरुद्ध प्रमेहकी अवस्था।

स्त्री-जननेन्द्रिय—श्वेत-प्रदर—पीला, हरी आभा लिये या पानी-जैसा स्राव। मासिक-स्राव बहुत देरसे और बहुत कम। तलपेटमें भार, सर-दर्द, पीली जीभ।

श्वासयंत्र—ब्रांकाइटिस—पीला कफ या हरी आभा लिये, चिकना या पानी-जैसा, बदबूदार। शामको बलगमका बढ़ जाना। न्युमोनिया—बलगम निकाल नहीं सकता ; रोगी निगल जाता है। गलेमें घरघराहट या पीला ढीला बलगम निकलना।

अंग-प्रत्यंग—पीठमें और गर्दनमें स्नायविक या वातज-वेदना। शामको बढ़ना। शरीरके किसी भी अंशमें घूमनेवाला दर्द ; कभी इस जगह, कभी उस जगह दर्द।

निद्रा—बहुत तरहके सपने। अस्थिर निद्रा। बहुत जल्दी जागता है।

ज्वर—सन्ध्यासे आधी राततक ज्वर बढ़ना। फिर घटना ; इस समय पसीना आता है। स्वल्पविराम ज्वर, मैलेरिया ज्वर, आंत्रिक ज्वर, आरक्त ज्वर प्रभृति।

त्वचा—खुजली, पीली या हरी आभा लिये पीव निकलना ; त्वचा सूखी, रुखड़ी ; विसर्प ; नाखूनोंकी रोगी अवस्था।

शक्ति—६x और १२x।

मैग्नेशिया फास्फोरिका
(Magnesia Phosphorica)

दूसरा नाम—मैग्नेशियम फास्फोरिकम, फास्फेट आफ मैग्नेशिया।

उपयोगिता—यह जीर्ण-शीर्ण और स्नायु-प्रधान मनुष्योंके लिये विशेष उपयोगी है। **खोंचा मारने, अकड़न, स्नायु-शूल वगैरह कितनी ही तरहके दर्दकी यह अत्युत्तम दवा है।** दाहिनी ओरके दर्दमें ही विशेष काम करती है। तेज कतरने-जैसा, छुरी भोंकने जैसा या डंक मारने जैसा अथवा सुई वेधने जैसा दर्द, दर्दसे छटपटाना, पेट या उदरका स्नायुशूल और अकड़न जैसा दर्द इसका लक्षण है। इसका दर्द जोरसे दबाने, सामनेकी ओर झुकने और **गर्म प्रयोगसे आराम होता है।**

सर, मुँह, दाँत, पाकाशय आदिमें दर्द ; स्नायुशूल, घ्राण-शक्तिका गायब हो जाना ; अकड़न, खींचन; हूप-खाँसी ; पेशियोंमें अकड़न ; धनुष्टङ्कार ; आक्षेपकी वजहसे पेशाब रुक जाना ; आक्षेपके साथ खाँसी ; शरीरमें कम्पन ; इच्छा न रहनेपर भी शरीर और मुँह आदिकी पेशियोंका काँपना ; बहुत दिनोंतक शराब पीनेके कारण कितने ही तरहके उपसर्ग ; गुल्मवायु ; हृत्पिण्डका दर्द ; दमा ; खूनी बवासीर, कब्जियत, पानीकी तरह सर्दी ; बातका दर्द ; दाँती लगना ; तुतलाना, तालुमूल प्रदाह ; पित्त-शिला और उसके साथ शूल-वेदना, मिचली और कै, पाकाशयमें वायु एकत्र होना, अजीर्ण ; मृगी रोग ; बहुत ज्यादा पसीना ; अनिद्रा वगैरहमें लाभ करता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—भुलक्कड़, सोचनेकी शक्तिकी कमी ; दर्दकी वजहसे हमेशा अनुपात ; अजीर्णके कारण नींद न आना।

मस्तक—बच्चोंका मानसिक रोग ; माथेका कितने ही तरहका दर्द—**गर्म प्रयोगसे हमेशा आराम** सरमें स्नायविक दर्द, मानसिक परिश्रम करनेके बाद सरमें दर्द ; माथेके पीछेकी ओर आरम्भ होकर समूचे सरमें दर्द फैल जाता है। चलने-फिरनेपर सरमें चक्कर आना, आँखें बन्द करनेपर सामनेकी ओर झुक पड़ता है।

आँख—आँखके कोयेके ऊपर स्नायुशूल, आँखोंके आगे काले दाग तैरते दिखाई देना।

कान—तेज स्नायुशूल, दाहिने कानके पीछे अधिक ; ठण्डी हवामें जाने या **ठण्डे पानीसे चेहरा और गला धोनेपर बढ़ना।**

नाक—घ्राण-शक्तिकी कमी ; सर्दी—कभी सूखी, कभी तर रहती है।

चेहरा—स्नायुशूल, बिजलीकी तरह दर्द, छूनेसे बढ़ता है।

मुँह—निचले जबडेके कोनेमें दर्द ; मुँह सूखा, सूखी लार ; ओंठके कोने फटे। दाँतका दर्द, रातमें और खाने-पीनेसे दर्दका बढ़ना। दाँत निकलनेके समयका दर्द। गलेमें अकडन और खीचनका दर्द, दाहिनी ओर अधिक ; दर्दवाली जगह फूली। जीभ दर्दके समय लाल और साफ ; दस्त आनेके समय सफेद लेप-चढ़ी जीभ।

पाकाशय—हिचकी, छातीमें जलन, पेटमें शूल ठण्डा पानी पीनेसे बढ़ना ; वायुके साथ दर्द। मिचली और वमन।

तलपेट—आँतोंका शूल, आध्मान शूल, दबाने या रगडनेसे दर्दका घटना ; दर्दसे रोगी सामनेकी ओर झुक पडता है। डकार आनेपर भी आराम नही मिलता। शिशुओंको शूलका दर्द।

मन—उदरामय—पानीकी तरह दस्त ; वमन और पैरोंमें अकडन, पेटमें ठण्ड और दर्द, जोरसे दस्त ; रक्तामाशय—तेज दर्द, अकडनकी वजहसे पेशाब रुकना। रक्तस्रावके समय इतना दर्द कि रोगी बेहोश हो जाये। बच्चोंको कब्जियत, मल कडा, गहरा भूरा, कष्टसे निकले।

पु०-जननेन्द्रिय—बार-बार पेशाब लगना, जब खडा हो या घूमे, तभी पेशाव लगे ; पित्त-शिला, अकड़नकी वजहसे पेशाब रुकना ; पेशाबमें दर्द ; कामेच्छाकी वृद्धि।

स्त्री-जननेन्द्रिय—बाधक-वेदना ; ऋतुस्रावके पहले दर्द, सेंकनेसे आराम ; रजःकृच्छ्रता ; बहुत जल्दी-जल्दी रक्त-स्राव ; काला, सूत-जैसा लम्बा स्राव ; बाहरी अंशका सूजन ; डिम्बाशयका स्नायुशूल ; योनिका आक्षेप। गर्भावस्थामें अकडन-जैसा प्रसवका दर्द।

श्वासयन्त्र—दमा, वक्षस्थलमें दबाव ; सूखी, सुरसुरी मिली और अकडनवाली खाँसी ; सोनेमें कष्ट, हूप खाँसी ; स्वरभंग ; स्वरनलीमें जखम और अकडन। हिलने-डुलनेपर छातीका दर्द बढना।

हृत्पिण्ड—हृत्शूल ; स्नायविक और आक्षेपिक स्पन्दन ; हृत्पिण्डके चारों ओर खोंचनकी तरह दर्द ।

अंग-प्रत्यंग—पीठ और गलेमें जखमकी तरह दर्द; इधर-उधर हटनेवाला दर्द, मेरुदंडमें दर्द, कंधे और बाँहमें, खासकर दाहिनी ओर दर्द, सभी जोर दर्द-भरे । कम्पनशील पक्षाघात, पैरकी एँडीमें अकडन, कटि-स्नायुका दर्द ; पैरका तलवा छुआ न जाये । पांडु-रोग ; लेखक और खेलाड़ियोंकी अकडन; धनुष्टङ्कार ; हाथ-पैरोंकी कमजोरी ; अंगुलियोंका अगला भाग कडा और अकडा ; पेशियोंकी कमजोरी ।

ज्वर—स्वल्पविराम ज्वर ; पैरोंमें अकड़न ; भोजनके बाद शामको ७ बजे शीत, कँपकँपी । शीत पीठमें ऊपर नीचे चढ़ता-उतरता है । दम रुकनेका भाव ।

निद्रा—बराबर जम्हाई, औंघाई ; भयानक सपने देखकर नींद खुलना ।

शक्ति—६x, ३०x ।

नेट्रम म्यूरियेटिकम
(Natrum Muriaticum)

दूसरा नाम—सोडियम क्लोराइड, क्लोरुरेटम सोडिकम, क्लोराइड आफ सोडियम, कामन साल्ट आदि ।

उपयोगिता—इसका रोगी अपनेको बिलकुल निराश और निराश्रय समझता है । जरा-सी बातमें रो देता है । अनवरत प्यास, शरीर बहुत दुबला, मुँह सूख जाना । नमक खानेकी तेज इच्छा, कब्जियत, ये सब इसके प्रधान लक्षण हैं । दुबलापन, ग्रन्थियोंकी बीमारी, रक्तहीनता ; चेहरा उतरा हुआ ; सरमें दर्द ; हृत्पिण्ड आदिका स्पन्दन ; मानसिक विषन्नता ; गला पतला और क्षीण ;

ओठ सूखे, ओठोंके किनारे जखम, ओठ फटे ; कफ लसदार और सफेद ; अंगुलहाडा ; पैरकी अंगुलियोंमें गट्टे ; नखकी कितनी ही तरहकी बीमारियाँ ; **सविराम मैलेरिया ज्वर ; वह ज्वर दिनके १०-११ बजेके बीचमें आता है।** साफ पानीकी तरह श्लेष्मा निकलना। खाना-पीना अच्छा रहनेपर भी बच्चेका शरीर कमजोर पड़ता जाना ; भगन्दर ; मसूढ़े जखमसे भरे ; पीठमें दर्द ; रोगीका शरीर मानो तेलहा-जैसा मालूम हो ; सफेद लसदार लार ; एकाएक रक्त-संचालन क्रियाका रुक जाना, किसी नयी बीमारीकी वजहसे हृत्पिण्डका पक्षाघात; फेफड़ा, पाकाशय वगैरहसे रक्तस्राव ; बहुत ज्यादा शराब आदि पीनेकी वजहसे कितने ही उपसर्ग ; फेफड़ेका शोथ ; गर्मीके दिनोंका सर्दी-खाँसीका बुखार ; गहरी नींद या नींद न आना। मृगी रोग और मुँहसे फेन बहना ; सर्दी-गर्मी ; क्विनाइनकी वजहसे दबा हुआ बुखार ; विषैले कीड़े काटना ; आमवात ; सारे शरीरमें खुजली ; सन्धिवात आदि रोगोंमें इसका प्रयोग होता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—भविष्यके सम्बन्धमें निराशा, शोक, दुःख, भय वगैरहकी वजहसे मानसिक रोग, पुरानी बीमारीके कारण सुस्ती। शोक—सान्त्वना देनेपर उसका बढ़ना ; रोगी प्रकृति, कब्जियत और रोग-चिन्ता। सामान्य कारणसे ही क्रोध ; मस्तिष्क दुर्बल, अकेला बैठकर रोना चाहता है।

मस्तक—सूर्योदयसे सूर्यास्ततक सर-दर्द। ब्रह्मतालुमें दर्द, आँखसे दिखाई न देना। दृष्टिहीनताके साथ सर-दर्दका आरम्भ होना। कब्जियतके साथ दर-दर्द। अधकपारीका दर्द, मानो कोई हथौड़ीसे ठोक रहा है। पुराने सर-दर्दके साथ चेहरा पीला, मिचली, कै ; स्कूली

वालक-वालिकाओंका पुराना सर-दर्द। केश उड जाना। केशोके किनारे-किनारे गर्दनपर दाने और खुजली ; रूसी।

आँख—धुँधला देखना। पलकें भारी और फूली हुई। आँखोंकी मांस-पेशियाँ कमजोर और अकडी हुई। अक्षर पढनेके समय सट जाते है। सभी पदार्थोंके चारो ओर आगकी चिनगारी जैसा टेढ़ा-मेढ़ा दिखाई देता है ; दो दिखाई देना ; अश्रुनालीमें पीव, आँखोंमें जलन ; श्लेष्माकी तरह स्राव ; आँखोमें स्नायविक पीड़ा।

कान—कानमें गरज ; गाढा स्राव ; चिवानेके समय कडकड़ आवाज होना।

नाक—पुरानी सर्दी, गन्ध न आना। इन्फ्लुएञ्जा, रक्तहीन रोगियों की पुरानी सर्दी, जिसमें साफ पानीकी तरह स्राव होकर फिर सूख जाता हैं ; गन्ध और स्वादका न मिलना और श्वासकष्ट। वहुत छीक।

चेहरा—फूला चेहरा, तेलहा चेहरा, चमकीला मिट्टीकी तरह चेहरा, ज्वरके दाने निकलते हैं।

मुँह—लारमें नमकीन स्वाद, मुँहके चारो तरफ मोती-जैसे दाने, ओठ फटे ? जीभ सूखी, उसपर दाग और सुन्न, जीभपर मानो नक्शा वना है ऐसा जखम, दादकी तरह उद्भेद, बीच-बीचमें लाल और सफेद लेप, ऐसा मालूम हो, मानो जीभपर सफेद लेप चढ़ा है, मुँह और जीभ सूखी। जखम-भरे मसूढ़े, सहजमें ही रक्त निकल पडता है। दाँतमें दर्दके साथ वहुत लार वहना। दाँत ढीले, डिफ्थीरियाकी पूर्वावस्था, चेहरा पीला, पतला दस्त, लार वहना आदि। केवल पतली चीजे निगल सकता है। अलि-जिह्वामें प्रदाह।

पाकाशय—हिचकी। मिचली या वमनके साथ अजीर्ण। वमनमें फेन-भरी पानी या डोरी-जैसी लार निकलना ; वदबूदार श्वास, नमक

खानेकी इच्छाके साथ पेटमें गड़बड़ी। बहुत ज्यादा पानी पीनेकी इच्छाके साथ तेज प्यास, भोजनके बाद कलेजेमें जलन, खट्टा जायका।

तलपेट—पेटमें कतरने जैसा दर्द ; फूलना ; आँतोंमें शूल, वायु निकलनेसे शान्ति। प्लीहा-प्रदेशमे दर्द ; खाँसनेके समय पेट और अंडकोषमें दर्द।

मल—आँतोकी कमजोरीके कारण कब्जियत, सूखा, कड़ा, मल, मलनालीमें जलन, मलद्वारमे संकोचन, फटना और रक्त निकलना ; पुराना उदरामय ; पानी जैसा दस्त। एक बार पतला दस्त, फिर कब्जियत ; बदबूदार वायु निकलना।

पेशाब—पेशाब करनेके बाद ही जलन; घूमने, खाँसने और छींकनेसे पेशाब निकल जाना ; कोई जबतक सामने रहता है अथवा किसीके सामने पेशाब नही उतरता।

पु०-जननेन्द्रिय—अंडकोषमें खुजली, सूजन, पुराना प्रमेह ; कामोत्तेजना और सगमके समय विलम्बसे रेतःपात ; ध्वजभंग।

स्त्री-जननेन्द्रिय—साधारणतः बहुत ज्यादा और अनियमित रजः-स्राव, श्वेत-प्रदर—सफेद, गाढ़ा, चमकीला स्राव। योनिमें सूखापन ; जरायुका नीचेकी ओर खिचाव मालूम होना और सवेरे इसकी वृद्धि। देरसे रजःस्राव, मूत्रनालीमें कतरनेकी तरह दर्द ; रजोरोध निष्फल प्रसव-वेदना, पानी-जैसा जलन पैदा करनेवाला श्वेत-प्रदर। ऋतुकालमें बहुत सुस्ती, पीठके बल सोनेसे जरायुके रोगमे आराम मिलना, जरायुकी स्थान-च्युति।

श्वास-प्रश्वास—वायुनलीका नया प्रदाह, पानीकी तरह श्लेष्मा। पाकस्थलीमें सुरसुरी होकर खाँसी ; इसके साथ ही यकृतमें सुई बेधनेकी तरह दर्द। ब्राकाइटिस—वक्षोस्थिके पीछे शब्द, बलगम भरा रहता है। कफके कारण सरमें दर्द, दमा—पानी-जैसा श्लेष्मा निकलना।

हूप खाँसी ; श्वा-प्रश्वासमें कष्ट, खासकर सीढ़ी चढ़नेके समय और खाँसनेके समय वहुत अश्रु-स्राव होना।

हृत्पिण्ड—वहुत ज्यादा स्पन्दन। हृद् गह्वरमें दर्द ; हृत्पिड-प्रदेशमें ठण्डक मालूम होना। हृत्पिड और वक्षस्थलमें संकोचन मालूम होना। हृत्स्पन्दनकी वजहसे सारा शरीर काँपना। नाडी तेज और सविराम।

अंग-प्रत्यंग—पीठमें दर्दकी वजहसे कोई कड़ी चीज पकड रखनेकी इच्छा ; कड़ी चीजपर सो जानेसे पीठका दर्द आराम होना, पीठमें ठंड। हाथ-पैर विशेषकर घुटनेमें वहुत कमजोरी, नखके कोने वढना और प्रदाह हाथकी अंगुलीकी चारो ओर सूखापन। चलनेके समय सन्धियोंमें खटखट आवाज। पैरकी शीतलताके साथ छाती और पाकाशयमें खूनकी अधिकता।

स्नायविक लक्षण—मांस-पेशियोकी दुर्वलता और ढीला पड जाना। हमेशा थकान। मेरुदंडमें उत्तेजना। हिस्टीरियाकी कमजोरी—सवेरे अधिक ; सहजमें ही सर्दी लग जाना ; थकावट आ जाना।

निद्रा—हमेशा औंघाई। रातमे नीद न होना, परन्तु सवेरे उठते ही तकलीफ, डाकुओके सपने, अस्थिर निद्रा।

त्वचा—तेलही, पीली, खासकर जो स्थान केशसे ढॅके हो। केशके वगलमें गर्दनपर और सन्धियोंमें सूखी खुजली, ज्वरके छाले ; खुजली, जलनवाला आमवात। हाथ-पैरकी सन्धियाँ, कानके पीछे फुन्सियाॅ, तलहत्थीमें मसे। खसरा नमक खाने और समुद्रके किनारे रहनेसे वढना।

ज्वर—सवेरे १० से ११ वजेतक ज्वर आता है। ज्वरमें शीत, ताप, तेज प्यास ; ज्वर वढ़नेके साथ-ही-साथ प्यास वढती है। सारे शरीरमें शीतलता और लगातार जाडा मालूम होना। आरक्त ज्वर—भ्रम वकना आदि। अधिक क्विनाइन प्रयोगके कारण स्वल्पविराम या सविराम ज्वर।

शक्ति—६x, ३०x।

नेट्रम फास्फोरिकम

(Natrum Phosphoricum)

दूसरा नाम—सोडियम फास्फेट ; नेट्राई फास्फस ; फास्फेट आफ सोडा।

उपयोगिता—खट्टा डकार, मुँहका स्वाद खट्टा, खट्टी कै ; **अम्ल-शूल ; यह अम्ल रोगकी उत्कृष्ट दवा है।** वात या सन्धिवात ; पसीनेमें खट्टी गन्ध ; शरीरमें मूत्राम्ल (युरिक एसिड) ज्यादा रहना ; आँखोंसे पीले रंगका स्राव ; मूत्राशयसे **पीले रंगका** स्राव और उसके साथ ही जलन ; सविराम मैलेरिया ज्वर और उसके साथ ही खट्टी कै। वहुत ज्यादा परिमाणमें खट्टा दूध कै करना ; शुक्रमेह ; मेरुदंडकी क्षीणता; शरीर कमजोर ; अरज्ञकी वजहसे पतले दस्त आना ; बच्चेके शरीरसे खट्टी गन्ध आना ; ज्यादा चीनी खानेकी वजहसे लैक्टिक एसिडकी वृद्धि ; मेद या रस बहनेवाली सूजन ; प्रमेह रोग ; छातीमें जलन, मुँहमें पानी भर आना, पाकाशयका अम्ल ; अम्लकी वजहसे अजीर्ण ; पीव पैदा होना ; मृगी रोग ; विसर्प रोग। टीका लेनेका दुष्परिणाम ; सरमें भार और चक्कर आना ; सरमें खट्टी गन्ध। आँखोका प्रदाह ; नाक खुजलाना, नाकसे हमेशा बदबू आना, चेहरा लाल और फूल उठना। खट्टा या तांबे-जैसा स्वाद ; जीभकी जडमें पीला दाग ; पाकाशयका जखम ; पाकाशयमें वायु एकत्र होना ; पेटमें क्रिमि रहनेकी वजहसे पेटमें दर्द और डेरा देखना ; कब्जियत ; पाखाना होते समय काँखना ; मलका रंग सफेद या हरा ; बहुमूत्र रोग ; अम्ल रोगकी वजहसे पेशाब रोकनेमें असमर्थ ; श्वेत-प्रदर ; क्षयकास हृत्पिडका काँपना, कमजोरी, पैर लटपटाना ; खुजली आदिमें इसका प्रयोग होता है।

संक्षिप्त लक्षण

मन—हमेशा कुछ खराब होनेका भय ; रातमें नींदसे जागकर घरकी चीजोंको मनुष्य समझकर डरता है। समझता है कि बगलके कमरेमें कोई चल रहा है। भुलक्कड।

मस्तक—खोपडीमें दर्द, सवेरे मस्तकमें जडता, भार और टपक ; सर-दर्दके साथ मिचली और वमन होती है।

आँख—आँखोंसे पीला, सुनहरा स्राव, आँखोंकी पुतलीका फैलना, आँखोका सफेद अंश अधिक पीला, दृष्टि-क्षीण, आँखसे पानी गिरना, आँखोंके आगे चिनगारियाँ, आँखोंमें दर्द होता है।

कान—कानमें खुजली, जलन, जखम। एक कान लाल, गर्म और उसके साथ ही पाकाशयकी गडवडी और अम्लत्व। कानोंमें गरजनेकी आवाज होती है।

नाक—नाकमें खुजली, वदवूदार गन्ध, सर्दी, गाढ़ा पीला स्राव। नाककी जडमें अकडन होती है।

चेहरा—लाल और चितकवरा चेहरा ; नाक और मुँहके चारों ओर सफेदी। चेहरेका स्नायविक दर्द। जीभके आगे फुन्सियाँ और सन्ध्याके समय डंक मारनेकी तरह दर्द ; ओंठ और गालमें जखम ; जीभ तर और **पतली लेप चढ़ी, परन्तु जीभ और मुँहमें सुनहरे रंगका पीला लेप** ; निगलनेमें कष्ट ; तालुमूलकी ग्रन्थि और कोमल तालुमें घना पर्दा। मुँहका स्वाद खट्टा ; तांवे-जैसा स्वाद। नीदमें वच्चोंका दाँत कड़मडाना। तालुमूल-ग्रन्थिमें प्रदाह और कोमल तालुपर घना पर्दा पड़ा रहता है।

पाकाशय—अम्ल, खट्टा-स्वाद, काला पदार्थ या खट्टी कै ; मन्दाग्निमें मुँहका स्वाद खट्टा। भोजनके दो घण्टेके वाद पेटमें दर्द। अम्लशूल ;

भोजनके बाद पेट फूलना, गड़गड़ाहट, दर्द, दबाव मालूम होना ; छूनेसे तकलीफ। बच्चोंको शूल-वेदना। पेट खाली मालूम होता है।

मल—हरा मल, मलमें खट्टी गन्ध, आँतोंका शूल ; वायु त्यागनेके समय ऐसा मालूम हो, मानो मल निकल जायगा। बच्चोंको गर्मीके दिनोंका उदरामय, कृमि, मलद्वारमें खुजली, जख्म।

पेशाब—बहुमूत्रमें—बहुत बार पेशाब, धार टूट जाती है, जोर लगना पड़ता है। पेशाब गाढ़ा लाल।

पु०-जननेन्द्रिय—बिना सपनेके ही रेतःपात। कमर और पीठमें कमजोरी और हाथ-पैरका काँपना। लिंगमें उत्तेजना हुए बिना ही कामेच्छा, प्रमेहका स्राव।

स्त्री-जननेन्द्रिय—बहुत जल्दी-जल्दी फीका, पतला पानीकी तरह स्राव, वन्ध्यत्व। जरायु-स्थानकी कमजोरी, दर्दके साथ जरायुका अपने स्थानसे हट जाना। श्वेत-प्रदरमें जलन पैदा करनेवाला, पानीकी तरह या मलाई-मक्खनके रंगका स्राव।

श्वासयन्त्र—अम्लके साथ सर्दी। यक्ष्मा—छातीमें दर्द, दबने या लम्बी साँस लेनेपर दर्द बढ़ना।

हृदय—हृदय काँपना ; हृदयकी जड़में दर्द।

अंग-प्रत्यंग—गर्दनकी गांठें फूलना ; जानु-सन्धिमें वात ; कमरमें थकन ; कलाई और अंगुलियोंकी सन्धियोंमें दर्द। सन्धियोंमें खटखट आवाज ; वातसे सन्धियोंका प्रदाह ; पैर अवश हो जाते है।

त्वचा—त्वचा पीली, जगह-जगह खुजली, खासकर ऍडीमें ; त्वचा चिकना, चमकीली और लाल ; विसर्प।

ज्वर—खट्टी कैके साथ स्वल्पविराम ज्वर, पसीनेमें खट्टी गंध, दिनमें पैर ठण्डे, रातमें गम। तीसरे पहर गर्मी और सर-दर्द मालूम होना।

शक्ति—३x, ६x।

नेट्रम सल्फ्युरिकम

(Natrum Sulphuricum)

दूसरा नाम—सोडियम सल्फेट, सोडा सल्फस, सल्फेट आफ सोडा आदि।

उपयोगिता—जिनके शरीरमें जलका भाग अधिक है, जो तर स्थानमें रहते है और तर हवा जिन्हे बर्दाश्त नहीं होती, उनके लिये यह विशेष उपयोगी है। पित्तजनित रोगोंमें भी यह बहुत लाभ करता है। पित्त-ज्वर, पित्त-मिला तीता वमन, डकार या दस्त; पित्तसे पैदा हुआ सरका दर्द; तीता स्वाद। **यह इन्फ्लुएञ्जाकी एक मात्र दवा है।** पांडु-रोग, शीत-ज्वर; वायुकी वजहसे पाकाशयमें मीठा-मीठा दर्द; मलेरिया ज्वर; यकृतकी बीमारी; सर्दी, पीला या पीली आभा लिये स्राव; बहुमूत्र रोग, मूत्रपिण्डकी बीमारी; अजीर्ण रोग; दमा, वायु-भुजनलीमें श्लेष्मा एकत्र होना और उसके साथ ही पीला या हरे रंगका कफ निकलना; नीदके समय हाथ-पैरमें खीञ्चन, प्रलाप, मस्तिष्कमें चोटकी वजहसे मानसिक कष्ट; कब्जियत, हैजा, उदरामय; बच्चोंका हैजा; सीस-शूल; रातमें श्वेत-कणोंकी अधिकता; पित्त-कोषका दर्द; पुराना प्रमेह रोग; विसर्प रोग; वात या सन्धिवात; यकृतमें दर्दकी वजहसे शोथ; पेशाब रुकना; पेशाब धारण करनेमें असमर्थ; स्नायुशूल (मलेरियाकी वजहसे), पलकें सट जाना; कानोंका शूल; लारसे बदबूदार स्राव; नाक-मुँहमें जलन, बेस्वाद मुँह। पथरी, गर्भावस्थामें वमन, पैरकी ऍड़ीमे शोथ; दमाकी वजहसे नींद न आना; फोडा; दाह इत्यादि।

संक्षिप्त लक्षण

मन—आत्महत्याकी प्रवृत्ति; गाना-बजाना अच्छा न लगे, हताश; गिरने या सरमें आघातकी वजहसे मानसिक बीमारियाँ होती है।

मस्तक—सरकी चोटीमें तेज दर्द ; पेटकी गड़बड़ीसे सरमें चक्कर आना, माथेके पीछे दर्द, खोपडीमें जलन। केश झाड़नेमें तकलीफ होती है।

आँख—पीली आँखे, आँखोंमें दाने-जैसा पदार्थ, छालेकी तरह उद्भेद, रोशनी सहन न होना।

कान—सुई वेधने-जैसा दर्द ; कर्णशूल ; तर हवा लगनेसे दर्दका बढ़ना।

नाक—रजःस्रावके समय नाकसे खून जाना, बहुत सूखापन और नाकमें जलन ; नाककी दीवारमें खुजली ; नमकीन श्लेष्माका स्राव।

मुँह—गाढ़ा, लसदार, चिकना; सफेद श्लेष्मा ; तीता स्वाद, मुँहमें जलन, कोमल तालुमे फुन्सियाँ। जीभपर मैला, भूरा या हरा लेप ; चिकनी लार-भरी जीभ, लाल जीभ, तम्बाकू पीनेसे दाँतका दर्द आराम, डिफ्थीरियामें जब हरा कफ निकले।

श्वासयंत्र—स्वरभंग ; दमा, ऋतु-परिवर्त्तनके समय वृद्धि, श्वास-कष्ट, विशेषकर आर्द्र-ऋतुमें ; खाँसनेके समय रोगी छाती जोरसे दबा रखता है। छातीमे कफकी घरघराहट ; गाढ़ा, डोरीकी तरह या हरे रंगका कफ। बाईं छातीमें सुई बेधनेकी तरह दर्द होता है।

पाकाशय—सन्ध्याके समय प्यास ; पेट भारी ; हमेशा मिचली ; पेट फूलना ; छातीमें जलन। खट्टा पदार्थ हजम न हो। सीस-शूल ; यकृत-प्रदेशमें दर्द ; बाईं करवट सोनेसे यकृत-स्थानमें तकलीफ, पित्त-पथरी होती है।

तलपेट—यकृत छूनेपर दर्द होता है। कसकर धोती नही पहन सकता ; पेट फूलना, वायुशूल, भोजनके पहले बढ़ना। कामला रोग पित्त-वमन, उदर और मलद्वारमें जलन होती हैं।

मल—उदरामय, मलद्वार पित्त-मिला या काला, सवेरे ढीला पाखाना ; वर्षाके समय बढ़ना । वृद्धाओंके पतले दस्त ।

पेशाब—पित्तमय पेशाब ; ईंटके चूर-जैसी तली जमना, जलन, वहुमूत्र, पेशावमें वालूके कण ।

पु०-जननेन्द्रिय—इन्द्रियपर कोमल और थुलथुल मसे । प्रमेह, गाढ़ा, हरी आभा लिये विना दर्दका स्राव ।

स्त्री-जननेन्द्रिय—ऋतुके समय नाकसे वहुत ज्यादा रक्त-स्राव ; ऋतु ज्यादा और क्षय करनेवाला ; प्रमेहके वाद पीली हरी आभा लिये प्रदरका स्राव । ऋतुकालमें दर्द, कब्जियत, सवेरे ठण्डे और पतले दस्त आना ।

अंग-प्रत्यंग—वगलकी गांठें फूलना, नखकी जडमें प्रदाह, पैरके तलवेमें जलन, हाथ-पैरमें दर्दकी वजहसे वारम्बार हिलाना ; वस्ति-स्थानमें दर्द ; वाईं ओर झुकनेपर वढना । घुटने अकडे ; सन्धियोंमें कडकड़ाहट वात, सर्दी और तरीसे वढ़ती है ।

त्वचा—खुजली, पीला पानी जैसा स्राव, अंगुलियाँ फूली ; विसर्प; चिकना, लाल और दर्द-भरा ; दाह ; कॅवल ।

ज्वर—पित्त-ज्वर, मलेरिया ज्वरकी सभी अवस्थामें पित्तज स्वल्प-विराम ज्वर ; हरी कै या भूरी काली कै । शामको शीत और कम्प, पसीना, प्यास नदारद रहती है ।

निद्रा—अस्थिर निद्रा, चिन्ताजनक सपने । वायु-शूलसे निद्रा-भंग ।

शक्ति—सीस-शूलमें १x और २x वार-वार तथा ६x शक्तिका व्यवहार होता है ।

साइलिसिया
(Silicea)

दूसरा नाम—सिलिका, साइलिसिया टेरा, साइमेक्स, एसिडम साइलिसिकम।

उपयोगिता—इसकी क्रिया हड्डी, जोड, गांठें, चमड़ा, श्लैष्मिक-झिल्लियाँ आदिपर है। पीव उत्पत्तिमें बहुत काम करती है। अतएव पृष्ठाघात, अंगुलहाड़ा, जखम, व्रण, फोडा, टीका लगानेसे पैदा हुआ घाव, अर्बुद वगैरह सब तरहके ऐसे प्रदाह, **जिनसे पतला पीव बहता है,** मोटे-ताजे लडकोंके माथेमें पसीना, पेट बडा, हाथ-पैर छोटे, कब्जियत, शरीरमें जीवनी-शक्ति और गर्मीकी कमी; सहजमें ही सर्दी लग जाना; पुराना सर-दर्द, **पैर और बगलमें बदबूदार पसीना**; हड्डीकी जखम, जांघकी सन्धिकी बीमारी; रातमें पसीना; पुराना अस्थिगत ज्वर, यक्ष्मा, पुराना वात या सन्धिवात, मिचली; भीतर खूब जाडा मालूम होना; मांस या गर्म भोजनमें अरुचि; केश झड जाना; पक्षाघात; संन्यास रोग; बहरापन, नाककी हड्डीमें घाव और पीव बहना; जीभ और ओठमें घाव; श्वेत-प्रदर; स्नायुशूल; पथरी रोग; आँखसे पीव बहना; मृगी (अमावस्या और पूर्णिमाको बढ़ना); स्तन और स्तनकी घुण्डीमें जखम; क्षयकासकी वजहसे फेफडे में फोड़ा: हृत्पिण्डका काँपना; **नासूरकी बहुत बढ़िया दवा है।**

संक्षिप्त लक्षण

मन—जी न लगे, सोच नही सकता; जीवनसे निराश; आवाज बुरी मालूम हो; सोचना चाहता है; परन्तु सोच नही सकता है।

मस्तक—सरमें चक्कर ; बायें या सामने गिर जानेका लक्षण। सर-दर्द विशेषकर दाहिनी ओर ; रोशनी, आवाज, पढ़ने और गर्मीसे वृद्धि। संन्यास—दाहिनी ओर सरमें सुई बेधने जैसा दर्द और बाँहमें भार तथा दर्द ; खोपडीमें फोडे, खुजली। बच्चोंके माथेमें पसीना, माथा कपड़ेसे लपेटकर गर्म रखना चाहते हैं। ब्रह्मतालु खुला। सरके केश झड़ जाते है।

आँख—पलको और आँखोके चारो तरफ फोडे, कार्नियाका जखम, दर्द, जाला, छानी, आँखके कोनेमें प्रदाह। पढ़ने-लिखनेके समय अक्षर सट जाते हैं।

कान—ऊँची आवाज असह्य ; कानमें गरज ; मध्य कानमें प्रदाह, पीव, सुननेमें कमी। नहाने बाद कानोका प्रदाह।

नाक—नाककी ठोर लाल, खुजली, छींक, नाकमें सर्दी, बदबूरदा स्राव, पुरानी सर्दी, श्लैष्मिक-झिल्लियोंमें सूजन, सूखापन, गन्ध नहीं आती है।

चेहरा—चेहरेपर दाने, त्वचा फटी, ओंठपर अर्बुद ; पीला, मिट्टीकी तरह चेहरा।

मुँह—लाला-ग्रन्थियोमें पीव, मुँहमें सड़ना, कोमल तालुमें जखम ; जीभपर छाले, जीभमें मानो केश सटा है, दाँत ढीले, मसूढ़ा दर्द-भरा, रातमें दाँतमें तेज दर्द ; कष्टसे दाँत निकला ; कंठकी गांठें बढ़ी रहती है।

पाकाशय—बच्चोंको खानेके साथ ही कै ; अजीर्ण, अम्ल, छातीमें जलन और सर्दी, सवेरे वमन। गर्म भोजन और मांस न पचे ; बहुत भूख लगती है।

तलपेट—बच्चोंका पेट बडा, मलद्वारमें गड़बड़ीकी वजहसे कब्जियत ; मल आधा निकलता है और फिर भीतर चला जाता है।

बच्चोंका उदरामय, सरमें खट्टा पसीना, पेट कड़ा, गर्म, गोलमाल ; दर्द-भरा अर्श या ववासीर ; कीटजनित शूल ; भगन्दर इत्यादि ।

पेशाब—पाखानेमें पीव, पेशाबमें पोव और श्लेष्मा-मिला ; पेशाबमें लाल श्लेष्मा, युरिक एसिड रहता है ।

पु०-जननेन्द्रिय—पुराना उपदंश, पुराना प्रमेह, गाढ़ा, सड़ा स्राव । ध्वजभंग, हमेशा काम-चिन्ता, संगमके वाद दुर्वलता, अंडकोष फूले ।

स्त्री-जननेन्द्रिय—ऋतुकालमें सारा शरीर वरफकी तरह ठण्डा, कब्जियत, पेटमें पसीना ; ऋतु समयसे पहले और थोडा, सर्दी लगनेसे रजोरोध, गर्भकालमें छाती कडी और दर्द-भरी ; स्तनकी घुंडीमें जखम ।

श्वासयन्त्र—न्युमोनिया—पीव पैदा हो जानेवाली अवस्था, गाढा, पीला, हरा, कफ ; रातमें पसीना और कमजोरी । पुराना ब्रांकाइटिस और यक्ष्मा ; बच्चोंको कफ और रातमें पसीना ; यक्ष्माका फेफडेमें फोडा ; कंठका जखम ।

हृदय—वैठे रहनेपर भी जोरसे कलेजा धड़कना पुराना हृद्रोग ।

अंग-प्रत्यंग—कन्धोंके बीचमें सूजन, मेरुदंडका टेढ़ापन । सवारीमें पिकचंचु-अस्थिमें चोट, मेरुदंडके पास कार्वङ्कल, कूल्हेकी हड्डीकी बीमारी अंगुलहाडा, अंगुलियोके सिरेपर जखम । पुराना जखम—जलन जैसा दर्द । घुटनोमें सूजन और दर्द, हड्डियोंमें दर्द ; पैरमें पसीना ; नाडी कमजोर ; लिखनेमें कलाई अकडना ; देरतक चलनेसे पैर और अंगूठेमें अकड़न होता है ।

स्नायविक लक्षण—रातमें विशेष, शरीरके कितने ही स्थानमें दर्द, कमजोरी, वैठे रहनेकी इच्छा ।

नींद—धडकन, नाड़ी तेज ; नीदमें बोलना ; बुरे सपने ।

त्वचा—खुजली, जलन, जखम, कार्बङ्कल और रक्तस्रावी जखम। त्वचापर फोड़े होनेकी बहुत सम्भावना। त्वचापरके फोडे जल्दी अच्छे नहीं होते और पीव तुरन्त पैदा हो जाता है।

ज्वर—हेक्टिक ज्वर। दिनभर शीत, सर्दी लग जानेका भय। तीसरे पहर ताप; रातमें पसीना; भूख न लगना; सरमें बहुत पसीना; पेटमें बदबूदार पसीना।

शक्ति—६x और १२x।

चिकित्सा

फोड़ा (Abscess)

इस शरीरके किसी स्थानमें अगर प्रदाह हो जाय और फूल जाय, तो उसे साधारणतः स्फोटक या फोड़ा कहते हैं। पहली अवस्थामें यह लाल दिखाई देता है, उसमें गर्मी रहती है—यह या तो बैठ जाता है अथवा इसमें पीव पैदा हो जाया करता है। व्रण और स्फोटक—ये पर्यायवाचक शब्द हैं पर यह अपेक्षाकृत छोटा होता है और अधिककर इसका सिरा सूक्ष्म या पतला होता है।

दुष्ट व्रण या कार्बङ्कलमें बहुतसे मुँह होते हैं। उसमें जलन भी बहुत ज्यादा होती है। इसका रंग हमेशा बैंगनी होता है। जिनको बहुमूत्र रोग हो, उनका कार्बङ्कल जल्दी अच्छा नहीं होता और बहुत आशंका-जनक होता है। इससे अधिकांश रोगियोंकी मृत्यु ही हो जाती है।

फेरम-फास ६x, १२x—ज्वर, रोगवाली जगह गर्म, उसमें टपक और दर्द। पहली ही अवस्थामें देनेसे पीव पैदा होना रुक जाता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x, १२x—पीव पैदा होनेके पहले ही यदि इसका प्रयोग किया जाता है, तो अक्सर फोड़ा बैठ जाता है। यह स्तनके फोडेमें विशेष लाभदायक है। रोगवाली जगहपर इसकी जलपट्टी दी जा सकती है।

सिलिका ६x, १२x—पीव पैदा होनेके बाद (जल्दी-जल्दी फोडा पकनेके लिये)। अंगुलबेढ़ाकी यह एक बहुत लाभदायक दवा है।

कैल्के-फ्लुओर ३x, ६x, १२x—पीव-भरा जखम या घाव, जखमसे चारो ओरका कच्चडा कड़ा। जखम यदि हड्डीतक फैल जाये, तो यह और भी उपयोगी है। स्तनमें फोडा होनेकी वजहसे यदि नासूर पड जाय, तो उसकी यह बहुत ही बढिया दवा है।

कैल्के-सल्फ ६x, १२x—सिलिकाके प्रयोगसे सब पीव न निकल गया हो, तो यह बहुत बढ़िया काम करता है। इसके प्रयोगसे पीव बहुत जल्द सूख जाता है और जखम आराम हो जाता है गुदा-स्थानके फोडेमें और मसूढ़े फूलकर उसमें पीव हो जाय, तो यह बहुत अधिक फायदा करता है।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—बहुत दिनोका पुराना नासूर, उससे पुराना पानीकी तरह पीव या रस बहना। नखकी जडमें प्रदाह और नखकी जडसे पीव बहना।

एडिसन रोग

(Addison's Disease)

टामस ऐडिसन नामक एक मनुष्यने सबसे पहले इस रोगका वर्णन किया था। इसीलिये, इसका नाम ऐडिसन रोग हुआ है। इसका कारण-तत्व अबतक ठीक-ठीक निर्णय नही हुआ। इसमें शरीरमें खूनकी कमी और पेशियोकी क्रमसे बढनेवाली दुर्बलता और उनका पतला पड

जाना प्रभृति लक्षण पैदा हो जाते हैं और त्वचाका रंग तांवे जैसा हो जाता है। सर-दर्द और कमरमें दर्द हमेशा ही रहता है ; चेहरा, हाथ-पैर आदि खुले अंगोका रंग अधिक गहरा होता है तथा मुँहका भीतरी भाग भी भूरा हो जाता है। वमन, मन्दाग्नि वगैरह लक्षण भी रहते है। यह बीमारी बहुत कम दिखाई देती है और इसके आरोग्य होनेकी सम्भावना कम रहती है।

नेट्रम म्यूर ६x, ३०x—इसकी प्रधान दवा है। मूत्रपिण्ड प्रदेश गर्म, ऐसा मालूम होता है मानो उसे किसीने खीच रखा है। चेहरा उतरा हुआ और कुछ हरी आभा लिये। बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक दुर्वलता ; चिडचिड़ा और क्रोधी स्वभाव ; उठनेसे ही सरमें चक्कर आता है। हाथ-पैर ठण्डे। अकसर जम्हाई आया करती है, पर नीद नही आती। खडे होनेपर पैर कॉपते हैं, धुँधली दृष्टि, मिचली, कै, भूख न लगना, कब्जियत और पेटमें दबाव मालूम होना।

रजोरोध

(Amenorrhœa)

हमारे देशकी लडकियोको प्रायः बारह-तेरह वर्षकी उम्रमें पहले-पहल ऋतु आरम्भ होता है और ४०-४५ वर्षतक अथवा किसी-किसीको ५० वर्षकी उम्रतक हुआ करता है। महीने-महीने नियमित ऋतु इस तरह होता है। खूनकी कमी ; सर्दी लगना, रोग, शोक वगैरह कितने ही कारणोंसे ऋतु आरम्भ होनेके वाद, असमयमें ही यह नियमित मासिक रजःस्राव बन्द हो जाता है ; इसे ही रजोरोध कहते हैं। यदि अवस्था वढ़ जाने और ऋतुकी अवस्था हो जानेपर भी ऋतु न हो, तो उसे भी "रजोरोध" ही कहते हैं। गर्भ-संचारके समयसे प्रसवके कई महीने वादतक ऋतु वन्द रहना स्वाभाविक है।

कैल्के फास ६x, १२x—रक्तस्वल्पताकी वजहसे रजोरोध होनेपर यह फायदा करता है ।

कैलि-फास ३x, ६x—सारे शरीरका स्नायविक दौर्वल्य, रजोरोधकी वजहसे छातीमें तकलीफ, सरमें दर्द और चिडचिड़ा स्वाभाव रहनेपर यह फलप्रद है ।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—जीभ सफेद लेप-चढ़ी, रस-प्रधान धातु, यकृतका क्रिया विकार, ग्रन्थियाँ निश्चेष्ट ।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—पहली वार ही महीना होनेमें देर और वहुत थोड़ा स्राव ; ऋतुस्राव देरकर होता है; कभी कभी तो दो-दो, तीन-तीन महीनेका अन्तर देकर होता है ।

कैल्के-फास ३x, ६x—खूनकी कमीके कारण रजोरोध ; अण्ड-लालकी तरह स्राववाला प्रदर ।

कैलि-सल्फ ३, ६x—रजःस्राव थोड़ा और विलम्बसे, तलपेटमें भार मालूम होना ।

रक्त-स्वल्पता

(Anæmia)

पोषण-क्रियाकी गडबडी, बहुत ज्यादा रजःस्राव या शुक्रक्षय, बहुत दिनोतक रोग भोगना वगैरह कारणोसे रक्त-स्वल्पता पैदा हो जाती है ; इससे शरीर दुवला और रक्तहीन (उजला) दिखाई देता है। इस रोगमें शोथ हो जानेका भय रहता है ।

स्नायविक चिकित्सा—पुष्ट, परन्तु हल्की चीज खानेको देना चाहिये । खुली हवा सेवन और जितना सहन हो, उतना नदी या तालावमें स्नान या गर्म पानीसे स्नान करना लाभदायक होता है ।

कैल्के फास ३x, ६x, १२x—पोषण क्रियामें गडबडी पैदा हो जानेके कारण या किसी क्षय करनेवाले रोग होनेके बाद रक्त-स्वल्पता होनेपर यह दवा उपयोगी है। खडे होनेपर सरमें चक्कर आना, जीभपर सफेद लेप जैसा दिखाई देना, मुँहका स्वाद बिगडा, जी मिचलाना, पतला दस्त, बहुत कमजोरी, छातीमें धडकन प्रभृति लक्षण दिखाई देते हैं।

फेरम फास ३x, ६x—कैल्के-फासके सेवनके बाद भी रक्तके कण यथेष्ट परिमाणमें न बढ़ें, तो इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—रक्त पतला पानीकी तरह, जमा नही, हरित् रोग। बालिकाओंका ऋतुस्राव अनियमित और बहुत ज्यादा होनेकी वजहसे बीमारी। मैलेरिया और क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे पैदा हुई रक्त-स्वल्पता, कब्जियत, छातीमें धडकन, छातीमें गड़बडी मालूम होना। सवेरेके समय खाँसी, क्षय होनेवाली बीमारीके बाद रक्त-स्वल्पता, सहजमें ही सुस्त और क्लान्त हो पडना।

नेट्रम फास ६x, १२x—रक्त-स्वल्पताके साथ अजीर्ण, खट्टी कै या डकार आना। सारे शरीरकी दुर्बलता, चलने-फिरने या सीढी चढ़नेसे ही थकान मालूम होना, थोड़ा चलनेसे ही पैर इतने अवश हो जाते हैं कि फिर चला नही जाता।

कैलि-फास ६x, ३०x—मानसिक अवसादसे पैदा हुई बीमारीमें प्रयोग होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—चर्म-रोगके साथ बीमारीमें।

सिलिका ६x, ३०x बच्चोंके हरित रोगमें।

धमनीका प्रसारण या सूजन
(Aneurism)

चोट लगना, प्रदाहयुक्त जखम, खासकर गर्मी रोग, रक्त-संचालमें गड़बड़ी, बहुमूत्र, वात वगैरह कारणोसे यह बीमारी होती है। इससे भीतरी रक्त-स्राव हो सकता है। इसी वजहसे रोगवाली जगहमें खूनके चकत्ते या खूनके दाग अर्थात् लाल, नीले, पीले दाग दिखाई देते है। स्त्री-जातिकी अपेक्षा पुरुषोको यह बीमारी ज्यादा होती है।

कैल्के-फ्लुओर ३x, ६x, १२x—इस रोगकी यह प्रधान दवा है।

फेरम-फास ३x, ६x—हृत्पिण्डकी बहुत ज्यादा क्रिया होनेका या धडकनका लक्षण दिखाई देनेपर यह उपयोगी है। रोगीको चुपचाप बिछावनपर सुलाये रखना चाहिये।

हृत्शूल
(Angina Pectoris)

यह बहुत ही तकलीफ देनेवाली बीमारी है। हृत्पिण्डमें एकाएक भीषण यन्त्रणा आरम्भ होकर, बायाँ कन्धा और वहाँसे समूची बाईं बाँह यहाँतक कि नखके अगले भागतक यह बीमारी फैल जाती है। यह आक्रमण कई मिनटसे लेकर आध घण्टेतक रह सकता है। यह अकसर रातके समय ही होता है, दिनमें शायद ही कभी होता है। इसमें जल्दी-जल्दी श्वास-प्रश्वास, उत्कंठा, ठंडा पसीना, चेहरा ठण्डा और रक्तहीन, भय, मूर्च्छा वगैरह उपसर्ग दिखाई देते है। कितनी ही बार आक्रमणके समय जो मूर्च्छा होती है, वही मृत्युमें परिणित होती है। वायु निकलना, वमन या वहुत ज्यादा पेशाव होना—यह सब होनेपर तकलीफ घट जाती है। औरतोंकी वनिस्वत पुरुषोंको ही यह बीमारी ज्यादा होती है। बहुत

ज्यादा चिन्ता, बहुत अधिक परिश्रम, ज्यादा मात्रामें तम्बाकू या बीड़ी पीना, अजीर्ण, कब्जियत वगैरह कारणोंसे यह बीमारी पैदा होती है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—स्नायविक अकड़न या स्नायुशूलके साथ खींचन ; तेज दर्द। गर्म पानीके साथ इसका सेवन करना चाहिये।

कैलि-फास ६x, ३०x—कमजोर या निस्तेज अवस्था ; हृत्पिंडकी क्रिया कमजोर और सविराम ; बेहोशी आ जाना।

फेरम-फास ३x, ६x—जलन पैदा करनेवाला ताप मालूम होना, चेहरा लाल आभा लिये ; मैग्नेशिया फासके साथ पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

स्वरभंग

(Aphonia)

चिल्लाना, व्याख्यान देना, खाँसना, पानीमें भीगना, सर्दी लगना वगैरह कारणोंसे स्वरभंग होता है या गला फँस जाता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—गर्म दूध या गर्म पानी पीना अच्छा है। गलेमें गर्म कपड़ा बाँधे रहना फायदा करता है।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रधान दवा है। गवैये या व्याख्यान देनेवालोंका स्वरभंग, पानीमें भीगना या सर्दी लगनेकी वजहसे स्वरभंग ; यह स्वरभंग विशेषकर शामके वक्त बढ़ जाता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सर्दी लगकर स्वरभंग या स्वरलोप। दुरारोग्य स्वरभंगमें **कैल्के-सल्फ**के साथ पर्यायक्रमसे इसका व्यवहार करनेपर ज्यादा फायदा होता है।

कैलि-फास ६x, १२x—ऊँचे स्वरसे चिल्लानेकी वजहसे कमजोरी और स्नायविक अवसादके साथ स्वरभंग।

मुँहमें घाव
(Aphthæ Thrush)

अजीर्ण, कब्जियत, मुँहको साफ न रखना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी पैदा होती है। इसमें जीभपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती है, उनमें दर्द होता है और मुँहके भीतर घाव हो जाता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—गर्म पानीमें सोहागा मिलाकर दिनमें तीन-चार बार मुँह धोना चाहिये।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—इस रोगकी प्रधान दवा है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—पारेके अपव्यवहारके बाद ज्यादा लार निकलना।

फेरम-फास ३x, ६x—बच्चे और धायके मुँहमें घाव रहनेपर यह लाभ करता है।

उपांग-प्रदाह
(Appendicitis)

बडी आँतके साथ लगी हुई कृमिके आकारवाली एक खास नलीको "उपाग" (appendix) कहते हैं। भारी चीजें उठाना, दौडना, कूदना, चोट, खाने पीनेका दोष, न पचनेवाली चीजें (मछलीका काँटा, फलोंके बीज), भोजन वगैरह कारणोसे यह प्रदाह हो जाता है। यह रोग वृद्धोंकी अपेक्षा युवाओंको और स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंको ही विशेष होता। इसमें पेटकी दाहिनी ओर दर्द, कब्जियत, शरीरमें गर्मी बढना, सरमे दर्द, भूख न लगना, मिचली या कै और बहुत कमजोरी तथा सुस्ती आदि लक्षण दिखाई देते हैं। इससे फोडा पैदा हो जा सकता है या अंत्रावरण झिल्ली-प्रदाह (peritonitis) भी पैदा हो सकता है।

फेरम-फास ३x, ६x, १२x—रोगके आरम्भकालमें और ज्वर रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—अगर सूजन रहे।

कैल्के-सल्फ ३x, १२x—फोड़ा, निकलने या फोडेमें पीव पैदा होनेके समय (सिलिकाके साथ इसे पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये)।

सन्धि-प्रदाह
(Arthritis)

यह बहुत-कुछ वात-ज्वरके समान ही होता है। इसमें गांठ-गांठमें दर्द पैदा हो जाता है, सूजन रहती है और उसके साथ ही बुखार भी दिखाई देता है। इस रोगमें सन्धि-स्थानकी हड्डियाँ बढ़ सकती हैं, विकृत हो सकती हैं और कोमल भी हो जा सकती है।

फेरम-फास ३x, ६x—नये आक्रमणमें (ज्वरका लक्षण जबतक दूर न हो जाय, तबतक इसका सेवन करना चाहिये), हिलने-डुलनेपर सन्धि-स्थानमें दर्द बढ़ता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—नया आक्रमण, रोगवाली जगह फूली; जीभ सफेद लेपसे ढॅकी हुई; हिलाने-डुलानेपर दर्दका बढ़ना।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—पुराने रोगकी प्रधान दवा है। सर्दीसे हो, तो भी यह उपयोगी है।

नेट्रम-फास ३x, ६x, ३०x—क्षार पैदा करनेवाला धातु; सन्धि-स्थानोंका वात। नया ग्रन्थिवात (फेरम-फाससे फायदा न होनेपर), पुराना ग्रन्थिवात, खट्टी गन्ध लिये बहुत पसीना; पेशाब घोर लाल; घूटनेमें सूजन, गर्मी तथा बहुत तकलीफ रहती है।

दमा (Asthma)

दमा बहुत ही तकलीफ देनेवाली बीमारी है। इसमें बहुत ज्यादा श्वासकष्ट और छातीमें दबाव मालूम होना वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। इस बीमारीकी तेजी रातके समय ही ज्यादा दिखाई देती है। इसके आक्रमणके समय रोगी न तो सो सकता है, न बैठ ही सकता है; परन्तु बहुत ज्यादा खुली हवा पानेके लिये व्याकुल हो उठता है। खाँसते-खाँसते जब कुछ श्लेष्मा निकल जाता है; तब उसे आराम मिलता है।

पिता-माताको दमा रहनेपर, कितनी ही बार सन्तानमें भी यह बीमारी आ जाती है। नाकके छेदमें अर्बुद, अजीर्ण, जरायु या डिम्ब-कोषकी बीमारी, हृत्पिण्डकी बीमारी, वात, उपदंश, सीड-भरी जगहमें रहना, श्वासयंत्रमें साँसके साथ धूलके कण या धुआँ प्रवेश करना वगैरह इस रोगकी उत्पत्तिके गौण कारण हैं। इस रोगमें मृत्युकी आशंका कम रहती है, बल्कि रोगी दीर्घजीवी ही हुआ करता है। कभी-कभी साँस रुककर मृत्यु हो जानेके विषयमें सुना गया है; परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। यह बीमारी विशेषकर एकदम अच्छी नहीं होती।

आबहवा या स्थान-परिवर्त्तनसे लाभ होनेकी सम्भावना है। बहुतेरे मनुष्य बैद्यनाथ धाम वगैरह ऊँचे और सूखे स्थानोंमें रहना पसन्द करते हैं और कोई-कोई समुद्रके किनारेकी जगहमें रहना अच्छा समझते हैं। इसीलिये स्थान्-निर्वाचनके सम्बन्धमें निश्चयपूर्वक कुछ कहा नहीं जा सकता। जब दमाका दौरा आरम्भ हो, उस समय सूखे धतूरके पत्तेका चुरुट बनाकर उसका धुआँ पीने अथवा हमारे "ऐजमा-रिलिफ" को सूँघनेसे उसी समय कुछ देरके लिये फायदा दिखाई देता है।

कैलि-फास ३x, ३०x—इसकी प्रधान दवा है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—पाकाशयकी गड़बड़ी, सफेद, कड़ा श्लेष्मा, हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे दमा।

नेट्रम म्यूर ६x, ३०x—ऐसा मालूम हो, मानो हृत्पिण्ड और फेफड़ा सिकुड़ गया है। खाँसनेपर सहजमें ही बलगम न निकला हो; बलगम सफेद और फेन-भरा रहता हो; खाँसनेपर आँखोंसे पानी गिरता हो।

नेट्रम-सल्फ ६x, २००—युवक-युवतियोंके दमा रोगमें। जिन आदमियोंका धातु प्रमेह-विषसे दूषित हो गया हो, उनका दमा। सबेरे ४ या पाँच बजनेके समय दौरा आरम्भ होना; खाँसते-खाँसते पीले रंगका बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलना; छोटे बच्चोंका दमा। ठंडी हवा या सर्द ऋतुमें बीमारीका बढ़ना।

सिलिका ६x, ३०x—कष्टकर श्वास प्रश्वासमें यह दवा लाभ-दायक है।

बच्चोंकी क्षीणता
(Rachitis)

परिपोषणकी क्रिया अच्छी तरह न होनेपर यह बीमारी होती है। इसमें बच्चेके हाथ-पैर पतले हो पड़ते हैं और कितनों ही का शरीरकी तुलनासे सर और पेट बड़ा दिखाई देता है। इनकी हड्डी अच्छी तरह कड़ी नहीं होती और बच्चा यथा समय चल नहीं सकता, यहाँतक कि खड़ा भी नहीं होता।

अपुष्टकर भोजन, अस्वास्थ्यकर स्थानमें रहना, धूप और साफ हवाकी कमी, माताको अजीर्ण रोग रहना, खायी हुई चीजका अच्छी तरह न पचना, जल्दी-जल्दी माता दूध छुड़ा देना या बहुत दिनोंतक माताका दूध पिलाना वगैरह इसके कारण हैं। इन्हीं वजहोंसे यह बीमारी पैदा होती है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—इस रोगकी प्रधान दवा है। असमीकरण अर्थात् पीने और खानेकी चीजोंका रक्त, मांस वगैरहमे परिणत न होना। पतले दस्त आना या पेट फूलना प्रभृति लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

कैलि-फास ३x, १२x—अवसाद—सुस्ती, नीद न आना, स्नायविक दुर्बलता, क्षय करनेवाली बीमारियाँ, बदबूदार स्राव, हड्डीकी शीर्णता।

नेट्रम-फास ३x, १२x—अम्लके उपसर्ग, जैसे—रोगीके शरीरसे निकलनेवाले दस्त, कै, पसीना वगैरह सभी स्रावमें खट्टी बदबू, पेट फूला, यकृत बडा, अनपच-जैसा पाखाना हो, तो इससे लाभ होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—बच्चेके गलेका पिछला भाग और गला जल्दी-जल्दी दुबला होता जाता है। उसका स्वभाव चिडचिडा रहता है; बच्चा देरसे बात करना सीखता है। उसका शरीर ठण्डा रहता है और पीला रंग तथा कब्जियत बनी रहती है।

सिलिका ६x, ३०x—शरीर दुर्बल; सर बडा; बच्चेको बहुत पसीना होता है और सहजमें ही क्रोध आ जाता है। वह स्तन पीना नही चाहता, पीनेसे ही कै हो जाती है। दस्त पतला और बदबूदार।

ब्राइट रोग

(Bright's Disease)

यह मसानेकी एक खास बीमारी है। रिचर्ड ब्राइट नामक चिकित्सकने पहले इसका वर्णन किया था। उनके नामके अनुसार ही इस रोगका नाम रखा गया है।

यह बहुत कड़ी बीमारी है। आराम होनेकी आशा बहुत ही कम है।

इसमें मूत्र-ग्रन्थिमें प्रदाह हो जाता है। पेशावका वजन या परिणाम घट जाता है। वार-बार पेशावका वेग आता है। पेशावमें अंडलालका अंश अधिक रहता है और तली जमती है। शरीर रक्तहीन होकर पहले आँखोंके नीचे कुछ फूल जाता है, इसके बाद पैर भी फूलते है, सामान्य ज्वर, कै या मिचली, उदरामय वगैरह लक्षण इस रोगमें दिखाई देते है।

सर्दी लगना, पसीना वन्द हो जाना, पानीमें भीगना और छोटी माता चेचक, टाइफायड, यक्ष्मा, उपदंश वगैरह संक्रामक रोगियोंके संसर्गके कारण यह वीमारी हो सकती है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—अण्डलाल रोकनेकी यह प्रधान दवा है।

कैलि-फास ६x, १२x—स्नायविक उपसर्गोंमें और कमजोरी रहनेपर इसे देना चाहिये।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रदाह और बुखारका लक्षण मौजूद रहनेपर यह उपयोगी होता है।

वायुनली-प्रदाह
(Bronchitis)

यह वच्चे और वूढ़ोंको ज्यादा हुआ करता है। एकाएक सर्दी लग जाना। धुआँ, धूलके कण और एसिड वगैरहकी तेज भाफ साँसके साथ वायु नलीमें प्रवेश करना इत्यादि कारणोंसे वायुनली-प्रदाह होता है। कितनी ही जगह छोटी माता, चेचक, टाइफायड वगैरह रोगोंके साथ भी यह रोग हुआ करता है। इसमें जाड़ा लगना, बुखार, वक्षस्थलमें दवाव मालूम होना, खाँसी, जल्दी-जल्दी श्वास-प्रश्वास, खून-मिला वलगम वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। पहले सूखी और कष्टकर खाँसी, इसके बाद थोडा-थोडा श्लेष्मा निकलने लगता है। इस अवस्थामें खाँसी कुछ दव जाती है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्थामें (जैसे—ज्वर और रक्तकी अधिकता), कष्टकर श्वास-प्रश्वास ; बलगमका छातीमें जमकर बैठ जाना।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, सफेद और जमा हुआ बलगम निकलता है।

कैलि-सल्फ ६x ३०x—तीसरी अवस्था अर्थात प्रदाह दब जानेके बाद पानी जैसा बहुत ज्यादा बलगम निकलना।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—फेन-भरा सफेद बलगम आना ; रोगका पुराना आकार धारण करनेपर इससे फायदा होता है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—अंडलाल-जैसा श्लेष्मा, खूनकी कमी। रोग आराम होनेकी ओर बढ़ने लगे, उस समय इसका प्रयोग होता है।

सिलिका ६x, ३०x—गाढ़ा, हरा बलगम निकलना ; ठंडा पानी पीनेपर खाँसीका बढ़ना, गर्म पानी पीनेपर कुछ आराम मालूम होना, पीवकी तरह श्लेष्मा, श्लेष्मा पानीमें डूब जाता है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—श्लेष्मा निकालनेमें तकलीफ होती है। खाँसनेके समय रोगी हाथसे छाती दबा रखता है।

कैल्के-सल्फ ६x, ३०x—पीला बलगम अथवा पीली आभा लिये हरे रंगका बलगम, खून-मिला श्लेष्मा। यह उस अवस्थामें खूब लाभ करता है, जब श्लेष्मा तरल होने लगता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—लघुपात तरल पथ्य देना चाहिये (जैसे—साबू, बार्ली इत्यादि)। खुली हवाका सेवन बहुत ही जरूरी है। इसपर नजर रखनी चाहिये कि छातीमें सर्दी न लगने पाये।

कर्कट-रोग
(Cancer)

दूषित फोड़ा या मस्तिष्क, कन्धा, पाकस्थली, जरायु, डिम्बकोष, जीभ वगैरह शरीरके किसी अशमें यह हो सकता है। इसमे असह्य तकलीफ, ज्वर, प्रदाह इत्यादि उपसर्ग दिखाई देते हैं। कभी-कभी दर्द नही भी दिखाई देता है ; यह मारात्मक रोग है ; इसका नतीजा अच्छा नहीं होता।

कैलि-सल्फ ६x, ३०x—उपत्वक (जैसे—ओठ, स्तनका अगला भाग और श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपरवाला पतला चमड़ा), कर्कटिका पतला पीले रंगका स्राव।

कैलि-फास ३x, ३०x—दर्द-भरा कर्कट रोग, बदबूदार स्राव होना।

कैल्के-फास ६x, ३०x—गंडमाला या घेघाग्रस्त रोगियोंके लिये यह उपयोगी है।

सर्दी (Catarrh)

सर्दी लगना, एकाएक पसीना बन्द हो जाना, पानीमें भीगना, कब्जियत, ऋतु-परिवर्त्तन वगैरह कारणोसे सर्दी होती है : नयी सर्दीमें नाकसे पानी गिरना, छीक, सर और शरीर भारी, सरमें दर्द, नाक और तालुमें जलन, बुखार मालूम होना, आँखें लाल, गला भारी वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। सर्दी पुरानी हो जानेपर श्लेष्मा गाढा और कुछ पीला हो जाता है। बहुत बार नाक बन्द हो जाती है, खासकर रातके समय ऐसा होता है ; इसी वजहसे मुँहसे साँस लेना पड़ता है। खाँसी आती है और आवाज बिगड़ जाती है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था, नयी बीमारी ; खूनकी अधिकता। दर्दी-ज्वर, नासारंध्रमे जलन, श्वास-प्रश्वासका बढ़ना। गलकोषकी सर्दी, श्लेष्मा सफेद और फेन-भरा ; सर्दीके आरम्भकी यह बढ़िया दवा है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, सादा और लसदार श्लेष्मा, सूखी सर्दी।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—छीक, आँख, नाक वगैरहसे पानी निकलना वगैरह पानी निकलनेके लक्षण (watery symptoms) ; सफेद फेन जैसा श्लेष्मा ; इन्फ्लुएञ्जा ; खाँसने या सर झुकानेपर नाकसे खून गिरता है। सूँघनेकी शक्तिका गायब हो जाना।

कैल्के-फास ६x, ३०x—पुरानी सर्दी, अण्डलाल-जैसा स्राव ; खूनकी कमी।

कैलि-सल्फ ६x, १२x—तीसरी अवस्था (अर्थात् दूसरी अवस्थामें कैलि-म्यूर सेवनके वाद प्रदाह उपशमित होनेपर) ; पीला लसदार स्राव निकलना ; सन्ध्याके समय और गरम कमरेमें वढना।

सिलिका—नाकके छेदमें सडा घाव, वदबूदार स्राव, सूखा या जखम-भरा पुराना नाककी झिल्लीका प्रदाह।

छोटी माता

(Chicken Pox)

इसमें पहले फुन्सियोंकी तरह छोटे-छोटे दाने होते हैं। इसके वाद इनमें पानी भर जानेपर ये छले-जैसी दिखाई देने लगती हैं और पक जाती हैं। सात-आठ दिनोंमे ही ये सूख जाती हैं ; कभी-कभी कुछ अधिक दिवस भी लग जाते हैं। कभी ऐसा भी देखा जाता है कि

पहलेसे ही इन गोटियोंमें पानी भर आया हो। इस बीमारीमें बुखार, सरमें दर्द, सर्दी, जलन वगैरह उपसर्ग मौजूद रहते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वरका लक्षण रहनेपर।

कैलि म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था।

कैलि-सल्फ ६x, १२x—गोटियाँ बैठ जानेपर।

वच्चोंका हैजा
(Cholera Infantum)

वहुत दस्त और कै—इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। इसमे पहले खायी हुई चीजकी कै होती है, इसके बाद पानी-जैसा वमन होने लगता है। कुछ हरे रंगका पीला या वदरंग पानीकी तरह पतला दस्त, कभी-कभी श्लेष्मा मिला दस्त, हाथ-पैर ठंडे, और मुँह सूखे, प्यास, वेचैनी, सर हिलना, क्षीण, पर तेज नाडी वगैरह उपसर्ग, इसके लक्षण वताये गये है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—इसकी प्रधान दवा है। हरा पानी-जैसा दस्त होनेकी वजहसे वच्चोंकी कमजोरी और दुवलापन, दाँत निकलनेके समयकी अजीर्णकी वीमारीकी वजहसे हैजा हो जाना; अनजानमें पाखाना हो जाना, दस्त वदवूदार।

फेरम-फास ३x, ६x—बुखारके लक्षणमें। अजीर्णकी वजहसे दस्त; प्रलाप, अंट-सट वकना मानसिक गड़वडी; वार-वार पानीकी तरह पतला और कभी-कभी खून-मिला दस्त। वच्चा कमजोर होता जाता है और सर हिलाया करता है। वेहोशी जैसा भाव, चेहरा लाल, आँखें फैली और फटी-फटी जैसी, पूर्ण नमनीय नाडी, पसीना एकाएक रुक जानेकी वजहसे हैजा हो जाना।

नेट्रम-फास ३x, १२x—अम्लके लक्षणमें (जैसे—कृमिके लक्षणके साथ वच्चोंका दस्त, कै या शरीरसे खट्टी गन्ध आना)।

मैग्नेशिया-फास—अकडन या खीचन, आक्षेपिक दर्द ; पतले दस्त और कै ; पैरकी ऍड़ीमें अकड़न ।

कैलि-फास ६x, १२x—कांजीकी तरहका मल, हिमांग, चेहरा नीला हो जाना, नाड़ी क्षीण ।

तांडव रोग (Chorea)

शरीरके किसी भी अंशकी पेशीके अनियमित रूपसे सिकुडनेकी वजहसे उस अंश-विशेष या सारे शरीरका इच्छा न रहनेपर भी फड़कने या काँपनेका नाम "तांडव रोग" है ।

अस्वास्थ्यकर स्थानमें रहना, अपुष्ट पदार्थ खाना, क्षय और कमजोर करनेवाली बीमारी भोगना, खूनकी कमी, कृमि, शारीरिक और मानसिक अवसाद, बहुत अधिक उत्तेजना वगैरह इस रोगके कारण हैं । पहले रजोदर्शनमें विलम्ब और अनियमित ऋतु वगैरहकी वजहसे यह बीमारी हो सकती है । कभी-कभी यह तांडव रोग वंशगत होता भी देखा जाता है । कोई-कोई तांडव रोगवाले रोगियोंके कम्पन आदिका अनुकरण करने लगते है ; इस वजहसे उन्हे भी रोग हो जाता है । इन लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है ।

पुष्ट करनेवाली हल्की चीजे खाना, खुली हवाका सेवन करना, स्वास्थ्यकर जगहमें रहना और दूसरे-दूसरे स्वास्थ्यके निमयम पालन करने चाहिये ।

मैग्नेशिया-फास—३x, ६x—इसकी प्रधान दवा है ।

कैल्के-फास ६x ३०x—रक्त-स्वल्पता या 'डमालाग्रस्त रोगियोंके लिये फलप्रद हैं ।

सिलिका ६x, ३०x—कृमिकी वजहसे बीमारी, सपनेमें भयानक चीजें देखना और इसी वजहसे नीदमें गड़बड़ी पैदा हो जाना, चेहरा

मलिन, राक्षसी भूख, बहुत प्यास, कब्जियत ; आँख, मुँह और हाथ-पैर फूले-फूले ।

नेट्रम-फास ३x, १२x—कृमिकी वजहसे, पर अम्लका लक्षण मिली बीमारी होनेपर ।

शूल-वेदना (Colic)

शूल एक बहुत ही तकलीफ देनेवाली बीमारी है ; यह कितनी ही तरहका होता है । अम्लशूल, ऋतुशूल, पित्तशूल, मूत्रशूल, स्नायुशूल, हृद्शूल वगैरह ।

अम्लशूल—अजीर्ण, अम्ल, कब्जियत वगैरह कारणोंसे यह रोग होता है । इसमें नाभीके पास बहुत दर्द होता है । रोगी तकलीफसे छटपटाने लगता है ; पेट सिमट जाता है । बहुत बार वायु निकलने या कै होनेपर यह बीमारी शान्त हो जाती है । किसी-किसीको बहुत ज्यादा कै होनेपर भी उनकी तकलीफ नही घटती ।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—बच्चोंकी शूल वेदना । बच्चा पेट मोड लेता है । रोगी तकलीफकी वजहसे सामनेकी ओर झुक पडता है । रगडने, गर्म प्रयोग करने और डकार आनेपर तकलीफ कुछ घटती है । नाभी-प्रदेशमे दर्द रहता है ।

नेट्रम-सल्फ ६x, ३०x—पित्तकी अधिकताकी वजहसे शूल-वेदना, मुँहका स्वाद तीता, बहुत ज्यादा वायु निकलना, पेट फूलना, सीसक-शूलमें निम्न क्रम (१x या २x) थोडी-थोडी देरके अन्तरपर व्यवहार करनेसे खासा फल प्राप्त होता है ।

कैलि-फास ३x, ६x—बच्चोको दाँत निकलनेके समय जो शूलका दर्द पैदा हो जाता है, उसमें विशेष लाभ करता है ।

नेट्रम-फास ३x, ६x—कृमिकी वजहसे पैदा हुआ शूलका दर्द ; अम्लका लक्षण मिला शूलका दर्द ; खट्टी गन्ध लिये बलगम ; बच्चे दहीकी तरह जमा हुआ कै करते है ।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वरके लक्षणमें ऋतुके समयका शूलका दर्द ।

कैलि-सल्फ ६x, १२—शूल वेदना ; बच्चोंकी पाकस्थली ठण्डी ; पाखानेका वेग होता है, परन्तु पाखाना होता नही ।

कब्जियत

(Constipation)

इस रोगमें कोठेमें मल संचित हुआ करता है । इसी वजहसे रोगीके पेटमें मीठा-मीठा दर्द ; बदन, हाथ और सरमें भार मालूम होना, शारीरिक और मानसिक अस्वाच्छन्द्य, भूख न लगना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते है ।

यकृतकी क्रिया ठीक-ठीक न होना, भोजनका दोष, शारीरिक परिश्रम न करना, रातमें जागरण, चाय, काफी, अफीम वगैरह सेवन, मलका वेग रोकना, बहुत ज्यादा पसीना, जरायु या डिम्बकोषकी बीमारी वगैरह इसके कारण हैं ।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—जीभ कुछ धुमैले रंगकी, सफेद लेप चढ़ी हुई, यकृतकी क्रिया अच्छी तरह न होना, पित्तकी आभाकी वजहसे मलका रंग फीका ।

कैलि-फास ६x, १२x—बडी ऑत और छोटी ऑतकी आंशिक पक्षाधातकी अवस्था ।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—बहुत सूखा और कडा मल । सरमें दर्द ; मुँहमें पानी भर आना ; सोनेपर लार बहना ; पाखाना होनेके बाद मलद्वारमें जलन पैदा हो जाना ।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—मल निकालनेकी शक्तिका न रहना।

सिलिका—अजीर्णकी वजहसे अपुष्ट बच्चेकी कब्जियत ; मलका कुछ अंश बाहर निकलकर फिर भीतर चला जाता है।

आनुसंगिक चिकित्सा—नियमित समयपर स्नान और भोजन करना ; अंडा, मांस वगैरह उत्तेजक भोजन, अधिक रातमें भोजन या ज्यादा खाना मना है। पके फल और निरामिश भोजन करना चाहिये। सवेरे खुली हवामें घूमनेसे लाभ होता है। जुल्लाव लेना अच्छा नहीं है।

आक्षेप

(Convulsion, Spasm etc,)

यह स्नायुमण्डलकी बीमारी है। किसी-किसीको खास मांसपेशीके सिकुड़नेकी वजहसे उससे मिले हुए अंगमें जैसे—मुँह, जीभ, जबड़े, गर्दन और पीठकी मिलनेवाली जगहपर, अंगुली, पेट इत्यादि) अकडन पैदा हो जाती है। तडका धनुष्टङ्कार वगैरहमें भी अकडन हो सकती हैं। चोट, भय, कृमि, प्रदाह, उत्तेजना वगैरह इसके अन्यतम कारण है।

दर्जी, क्लर्क, कम्पोजिटर, टाइपिस्ट, चित्रकार, जिन्हे झुककर बैठना पडता है और हाथ-पैरोंसे बहुत काम लेना पडता है, उन्हे ही यह रोग अधिकतर होते देखा जाता है।

विश्राम, व्यायाम, मालिश वगैरह आनुसंगिक उपाय अवश्य काममें लाने चाहिये। प्रबल इच्छा-शक्तिके प्रयोगसे भी यह बीमारी आराम हो सकती है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—नये उपसर्गोंकी बहुत बढ़िया दवा है। हाथ, पैर, गला वगैरह, शरीरके किसी भी अंशकी अकडन, धनुष्टङ्कार, दाँती लग जाना, किरानियोका शरीर अकडना वगैरहमें इसमें बहुत अधिक लाभ होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—दाँत निकलनेके समय बच्चोंको बुखारके साथ अकड़न पैदा हो जाये।

कैलि-फास ३x, १२x—भयकी वजहसे अकड़न, चेहरा उतरा हुआ, बेहोश अवस्थामें, मूर्च्छा, खीचनकी तरहकी अकड़न और बुदबुदाकर कुछ बकना।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—मृगी रोगकी तरह अकड़न।

खाँसी (Cough)

सर्दी, काली खाँसी, हूप खाँसी, न्युमोनिया, यक्ष्मा, दमा, यकृतका दोष वगैरह रोगोंमें खाँसी होती है। यह स्वय कोई नही है, दूसरे रोगका लक्षणभर है। अतएव, कारण खोजकर मूल रोगकी चिकित्सा करनेपर यह रोग आप-ही-आप आराम हो जाता है।

कैलि-म्यूर ३x, ३०x—श्लेष्मा गाढ़ा, कड़ा, बलगमके साथ, सूखे स्वरके साथ खाँसी होनेपर इसका प्रयोग करना चाहिये।

फेरम-फास ३x, ६x—रोगकी पहली अवस्थामें, सूखी, दर्द पैदा करनेवाली और तंग करनेवाली खाँसी आना।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—हूपिंग खाँसी ; अकड़न पैदा करनेवाले उपसर्ग, फेफड़ेमें दर्द, सूखी खाँसी रातमें ज्यादा आती है ; बच्चोंकी सूखी खाँसीमे खूब फायदा करता है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—गाढ़ा, डोरीकी तरह सफेद रंगका बलगम निकलना इसका विशेष लक्षण है।

सिलिका ६x, ३०x—यक्ष्मा या क्षयके रोगीको सवेरेके वक्त आनेवाली खाँसी। बदबूदार लार निकलना ; ठण्डा पानी पीनेसे खाँसीका बढ़ना ; रातके समय साँस रोकनेवाली खाँसी।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०—पानीकी तरह, नमकका स्वाद मिला स्राव या वलगम निकलना ; पुरानी खाँसी। दिन-रात सूखी और खुसखुसी खाँसी।

कैलि-सल्फ—पीले वलगमके साथ खाँसी, गर्म कमरेमें और सन्ध्याके समय खाँसीका बढ़ना।

घुंड़ी खाँसी (Croup)

घुंडी खाँसी दो तरहकी होती है—असली और नकली। नकली घुंडी खाँसीका हमला एकाएक होता है और अक्सर बच्चोंको एकाएक नींदसे जगा देता है। यह उतनी मारात्मक नहीं होती ; पर असली घुंडी खाँसी धीरे-धीरे आरम्भ होती है। अन्तमें गलेके भीतर नकली झिल्ली पैदा हो जाती है। यह अत्यन्त मारात्मक होती है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रधान दवा है। श्वासकी राहमें नकली झिल्ली पैदा होनेके वाद, उसके निकलनेके समय इसका प्रयोग होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—बुखार, साँस छोड़नेमें तकलीफ (ऐसा मालूम होना मानो छातीपर दवाव-सा पड़ा हुआ है।)

कैलि-फास ६x, १२x—स्नायविक दौर्बल्य ; पतन या हिमांग अवस्था पैदा हो जानेकी आशंका।

कैलि सल्फ ६x, १२x—श्लैष्मिक-झिल्ली निकल जानेके वाद इसका प्रयोग होता है।

कैल्के-फास ३x, ६x—बच्चेको गोदमें उठाने, वच्चेके रोने और भोजन करनेके वाद, वच्चेको, साँस रोकनेवाली खाँसी ; चेहरा नीला हो जाता है और बच्चा हाथ-पैर पटका करता है। चुपचाप पड़े रहनेपर कुछ अच्छा रहता है।

चक्षु-रोग (Eye Diseases)

आँखकी बीमारी बहुत तरहकी होती है। देखनेकी शक्तिमें गडबडी और कमी, तारकामंडल-प्रदाह, अंजनी, आँखोमें जाला, आँखोका प्रदाह या आँखें उठना वगैरह।

आँखे उठना यद्यपि साधारण रोग है, परन्तु बहुत ही तकलीफ देनेवाला है। सर्दी लगना, आँखोमें धूलके कण वगैरह पड़ना या बाहरकी दूसरी चीजे पडना, चोट लगना, खसरा, चेचक, प्रमेह वगैरह रोग भोगना इत्यादि कारणोंसे आँखें उठ सकती हैं। इसमें आँखें बहुत लाल हो जाती है; आँखोसे पानी पीव और पपड़ो गिरती है, पलकें सट जाती हैं, आँखे करकराती है और उनमें जलन होती है। तकलीफसे रोगी घबडा उठता है। रोशनी बिलकुल ही सहन नही होती, कितनोकी ही आँखोकी पलकोपर दाना हो जाता है और जखम होता दिखाई देता है।

मोतियाबिन्द—आँखके कोयेमें जालीकी तरह एक प्रकारका पर्दा पड जाता है; इसीको "जाला पडना" कहते है। पहले ही अच्छी तरह इलाज होनेपर दवाके प्रयोगसे इसके आराम होनेकी सम्भावना रहती है। यह जाला कडा पड़ जानेपर इसमें नश्तर लगवाना पड़ता है।

चोट लगनेके कारण या बुढ़ापेकी वजहसे भी यह बीमारी हो सकती है।

कैल्के-फास ६x, १२x—आँखकी पलकोंकी अकड़न या आँखोका स्नायुशूल (यदि मैग्नेशिया-फासके प्रयोगसे आशाके अनुसार लाभ न दिखाई दे); रोशनीका सहन न होना, गंडमाला धातुवाले रोगियोका सफेद कोयेका प्रदाह; द्वित्व-दर्शन अर्थात् एक ही चीजका दो दिखाई देना; आँखोंकी पुतली फैली, मानो उत्तेजनापूर्ण भाव रहता है।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—आँखें मानो सामनेकी ओर हिलती हों या चंचल-गति रश्मि-जैसा हो या आगकी चिनगारीकी तरह आँखोंके आगे दिखाई देती हो। आँखोको ढकनेवाली स्वच्छ-झिल्ली या सफेद अंशके ऊपर दाग, सफेद कोये या शुक्लमंडलका प्रदाह, मोतियाबिन्द।

कैल्के-सल्फ ६x, १२x—आँखोका प्रदाह, गाढ़ा, पीला सफेद स्राव निकलना। आँखोके सफेद अंशका जखम, सफेद अंशका प्रदाह।

फेरम-फास ६x, १२x—प्रदाहकी पहली अवस्थामें जब पीवका स्राव नही आरम्भ होता। आँखे लाल और उनमें तकलीफ होती है; ऐसा मालूम होता है मानो आँखोमें बालू गिर पडी है।

कैलि-फास ३x, ६x—कमजोर करनेवाले रोग भोगनेके बाद दृष्टि-शक्तिकी कमजोरी; थोडा या आंशिक अन्धापनका भाव; पलकोंका झूल पडना; तिर्यक या टेढ़ा देखना।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रदाहकी द्वितीय अवस्था; सफेद या पीली आभा लिये हरा स्राव; आँखोमें जखम; पलकोंपर सफेद या पीली आभा लिये फुन्सियाँ; पलकोंपर दाने या बहुत तरहके उद्भेद; ऐसा मालूम होता है, मानो आँखोंमें बालू गिर गयी है।

कैलि सल्फ ६x, १२x—प्रदाहकी तीसरी अवस्था; कुछ हरा या पीला पीव निकलना; लसदार, पीला अथवा पानीकी तरह स्राव; शुक्ल मंडलका प्रदाह; मोतियाबिन्द।

मैग-फास ३x, ६x—पलकोंका झूल पडना; रोशनीका सहन न होना; पुतली सिकुडी हुई। दृष्टि-विभ्रम—आँखोंके सामने मानो आगकी चिनगारियाँ और बहुतसे रंग दिखाई देते हों; दृष्टि-क्षीण; सेंक वगैरह गर्म प्रयोगसे तकलीफका घटना; सर्द प्रयोगसे बढना।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—पानीकी तरह पीव अथवा पानीका ही स्राव ; यह स्राव जहाँ लगता है, वही सफेद दाग पड़ जाता है ; पलकोंपर बहुतसे दाने या उद्‌भेद निकलना।

नेट्रम-फास ३x, १२x—शुक्लमंडलका प्रदाह, गंडमाला धातुवाले लोगोंके आँखोंका प्रदाह ; खून-मिला स्राव, सवेरे पलकोंका सट जाना, डेरा देखना।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—आँखोंका कोया पीला और पलकोंमें जलन होती है, पुराना शुक्लमंडलका प्रदाह, पलकोंपर छालेकी तरह दाना-दाना उद्‌भेद।

सिलिका ६x, ३०x—गहरा जखम, प्रदाह, इसके साथ ही गाढ़ा, पीला स्राव, गुहौरी, पसीना रुकनेकी वजहसे दृष्टिक्षीणता।

यक्ष्मा-कास या क्षय-कास

(Phthisis Pulmonary)

इसमें फेफड़ेमें जखम हो जाता है और जीवनी-शक्तिका बहुत तेजीसे क्षय हुआ करता है। सूखी खुसखुसी खाँसी, सामान्य मृदु ज्वर, श्लेष्माके साथ खून आना, कानमें बहुत दर्द, रातमें बहुत अधिक ठण्डा पसीना होना, छातीमें दर्द, स्वरभंग वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।

शायद एक तरहके जीवाणु इस मारात्मक रोगके कारण हैं। ये जीवाणु दूधके साथ या श्वास लेनेके समय धूलके कणके साथ शरीरमें प्रवेश कर जाते है और अपना बीज फैलाया करते है। तर या गीली जगहमें रहना, बन्द हवाका सेवन, पुष्ट न करनेवाली चीजें खाना वगैरह इसके गौण कारण हैं। यदि माँ-बापको यह बीमारी रहती है, तो सन्तानको भी हो जाती है। इस रोगका नतीजा अच्छा नही होता।

फेरम-फास ३x, ६x—बुखारका लक्षण ; सूखी खुसखुसी खाँसी ; चमकीला लाल रंगका रक्तस्राव होता है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—रोगके आरम्भमें या बीमारी स्पष्ट-रूपसे प्रकट न होनेपर ; अंडलाल-जैसा श्लेष्मा निकलता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—पानीकी तरह साफ फेन-भरा वलगम निकलता है।

सिलिका ३x, ३०x—यह एक बहुत ही आवश्यक दवा है। बहुत ज्यादा साफ बदबूदार वलगम ; बहुत ज्यादा पसीना रातमें होना ; रोज जाड़ा और पसीनेके साथ सविराम ज्वर।

कैलि-फास ६x, १२x—सारे शरीरको कमजोर करनेवाला सुस्ती।

मूत्रयंत्रकी बीमारियाँ
(Urinaty Dlsorder)

मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, मूत्राशय-प्रदाह, अनजानमे पेशाव हो जाना, मूत्र-कृच्छ्रता, मूत्ररोध, बिना चीनीका बहुमूत्र या मूत्रमेह या पथरी वगैरह बीमारियाँ मूत्रयंत्रकी बीमारियोंमें सम्मिलित हैं।

चीनीके साथ बहुमूत्र, मूत्रयंत्रकी बीमारी न होनेपर भी इसमें मूत्र-पिण्डपर कुछ-न-कुछ हमला हो ही जाता है।

मूत्रग्रंथि-प्रदाह—मूत्रग्रंथि या मूत्रपिण्ड (मसाने) दो तरहके होते हैं। ये दोनों पंजरेके अन्तिम भागमे कमरके नीचे रीढ़की दोनों ओर रहते हैं। ("नर-देह परियच" देखिये)। मूत्रग्रन्थिमें प्रदाह पैदा हो जानेपर, बुखार, मिचली, थोडा पेशाब अथवा लाल खून या पीव-मिला पेशाब, पेशाब करनेके समय दर्द या जलन, कमर, और रीढ़में दर्द, कभी-कभी पेशाब रुक जाना, विकार वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। इसमें दोनों गुर्दे कुछ बडे हो जाते हैं और फूल उठते हैं ; इसे नया ब्राइट रोग

भी कहा जा सकता है। कारण-तत्व और लक्षण आदि प्रायः ब्राइट रोगके अनुरूप ही होते हैं।

मूत्राशय-प्रदाह—यह मूत्राशय या मूत्राधार एक विशेष प्रकारकी थैली है। मूत्र-ग्रन्थिसे मूत्रनालीकी राहमे पेशाब आकर मूत्राधारमें जमा होता है और यह मूत्राधार भर जानेपर पेशाबका वेग होता है। मूत्राधार पुरुषोंके मलाशयके ऊपरी भागमें रहता है और औरतोके जरायुके ऊपरी भागमे रहता है।

इसी बीमारीमें मूत्राशय-प्रदेशमें दर्द, भार मालूम होना, बार-बार पेशाबका वेग होना, बून्द-बून्द पेशाब होना, खून या पीव मिला पेशाब होना, जाडा लगना वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं।

सर्दी लगना, पानीमें भीगना, ऋतु-परिवर्त्तन, मूत्ररोध वगैरह कारणोसे यह बीमारी होती है।

अनजानमें मूत्रस्राव और शय्यामूत्र—कितने ही कारणोसे अनजानमें पेशाब हो जाता है। बहुत बार मूत्रस्थलीमें पक्षाघातकी वजहसे यह बीमारी पैदा होती है। पेशाबका वेग हानेसे ही पेशाब हो जाता है, देर सहन नही होती। साधारणतः वृद्धावस्थामें ही ऐसा होता दिखाई देता हैं। कितने ही बच्चे नींदमें ही पेशाब कर देते है। कितनी ही बार तो यह अभ्यासके कारण होता है। माताके ध्यान न रखनेके कारण ही बच्चे बिछावनपर पेशाब कर देते हैं; कृमिकी वजहसे भी यह बीमारी हो सकती है।

मूत्राधिक्य या शर्करा-विहीन बहुमूत्र—इसमें बहुत ज्यादा परिमाणमे अनेक बार वर्णहीन पेशाब होता है। पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व घट जाता है। शरीरकी त्वचा रुखड़ी, प्यास, कब्जियत वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

इस रोगका ठीक-ठीक कारण अभीतक निर्णय न हो सका। चोट भय, एकाएक मानसिक उत्तेजना वगैरह इसके कारण; ऐसा ही लोग अनुमान करते हैं। संक्रामक लरछुत बीमारियाँ, सर्दी-गर्मी, खाने-पीनेका दोष, सर्दी लगना, बहुत पानी पीना, हस्तमैथुन आदि इसके अन्यतम कारण है।

मूत्रकृच्छ्रता—यह स्वयं कोई खास बीमारी नही। यह दूसरे रोगका लक्षणभर है। इसका मूल कारण खोजकर इलाज करनेपर जल्द ही अच्छा हो जाता है।

पेशाबका वेग बहुत ज्यादा, पर पेशाब नही किया जा सकता, कभी-कभी बून्द बून्द पेशाब होता है; कभी एकदम ही पेशाब नही होता।

मूत्र-पथरी, प्रमेह, मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, जरायुका रोग और कृमिकी वजहसे यह मूत्रकृच्छ्रता पैदा हो जाती है।

मूत्रशूल (पथरी)—डिम्बकोषकी तरह मूत्रपिण्डमें भी पथरी पैदा हो जाती है। यह पथरी जब मूत्रनालीमें आ पडती है, तब कमरसे अंडकोपतक कभी-कभी पैरके तलवेतक तेज दर्द पैदा हो जाता है। यह दर्द फिर सारे शरीरमें फैल जाता है, पेशाब आरामसे सरलतापूर्वक नही होता, कभी-कभी आप-ही-आप पेशाब हो जाता है। रोगी भयानक तकलीफसे बेचैन हो पडता है।

फेरम फास ३x, ६x—मूत्रस्थली और मूत्रनालीके सब प्रकारके प्रदाहकी नयी अवस्थामें और मूत्राशय-प्रदाहकी पहली अवस्थामें बहुत यंत्रणा, दाह और ज्वर रहना। बच्चोंका शय्यामूत्र, पेशियोकी दुर्बलताकी वजहसे अनजानमें पेशाब निकल पडना; खाँसनेपर औरतोंका पेशाब जोरसे निकलकर छिटक पडता है। प्रादाहिक अवस्थाके कारण पेशाब बन्द हो जाता है। अकसर बहुत देरतक पेशाबका वेग रोकते-रोकते

अन्तमें ऐसी अवस्था आ पड़ती है कि बार-बार पेशाबका वेग होता है। बहुत ज्यादा पेशाब होना।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—पुराना मूत्राशय प्रदाह ; सुजन ; मूत्रमेह ; सफेद रंगका गाढ़ा श्लेष्मा। पेशाब मैला, पेशाबमें तली जमती है, उसके साथ यकृतकी निष्क्रियता (नेट्रम-सल्फ) भी रहती है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—पेशियोंकी अकडनकी वजहसे पेशाब रुक-रुककर होना। कैथिटर व्यवहार करनेपर ऐसा मालूम होता है, मानो पथरी नहो सिकुडती ; पथरी-रोग हो जाना।

कैलि-फास ३x, ६x, १२x,—मूत्राशय-प्रदाह और कमजोरी ; बार-बार बहुत ज्यादा पेशाब होना ; पेशाबको रोक न सकना ; जलन करनेवाला पेशाब, उसके साथ ही मूत्रनालीसे रक्तस्राव (फेरम-फास)। शय्यामूत्र ; ईंटके चूर-जैसी तली जमना ; मूत्र-रेणु (पेशाबमें बालूके कण) ; बदरंग पेशाब ; वात या पित्तकी अधिकता ; पथरीकी वजहसे पेशाबमें बालूके कण-जैसी तली जमना।

कैल्के-फास ३x, ६x—पथरी ; कैल्के फास व्यवहार करते-करते बीच बीचमे नेट्रम-फास व्यवहार करनेपर. फिर पथरी पैदा नही हो सकती। पेशाबके साथ वीर्य निकल जाना (नेट्रम-फास)। बूढ़ोंकी पेशाब रोकनेमें असमर्थता ; पेशाब रुक जाना।

कैल्के-सल्फ ६x, १२x—मूत्राशयका प्रदाह ; पेशाबके साथ पीबका स्राव होता है।

नेट्रम फास ३x, ६x—अम्ल या कृमिकी वजहसे बच्चोंकी पेशाब रोक रखनेकी शक्तिका न रहना। पथरी, लाल रंगका पेशाब, उसके साथ ही वात-रोगका रहना।

नेट्रम-म्यूर ६x, १२x, ३०x—बहुत ज्यादा पेशाब होना ; अनजानमें पेशाब होना।

प्रलाप (Delirium)

यह स्वयं कोई खास रोग नही है। दूसरे रोगका एक भयानक उपसर्ग-मात्र है। जब किसी बीमारीका हमला मस्तिष्कपर होता है, तब अर्थहीन अंट-संट बकना और प्रलाप या भ्रम बातें कहनेका लक्षण दिखाई देता है। पागल भी प्रलाप ही बका करते हैं। बहुत दिनोंतक बहुत ज्यादा शराब पीनेवालोंको "कम्पनशील" प्रलाप रोग हो जाया करता है।

कैलि-फास ६x, १२x—अंट-संट बकना, भय; नींद न आना; बेचैनी; शराबियोंका कम्पन; शीत; प्रलाप; नेट्रम म्यूरके साथ इसे पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x, १२x—बुदबुदाकर बकना, चौंक उठना; जीभकी ऊपरी भागमें फेन भरा थूक लिपटा रहता है; हल्की प्रकृतिका बुखार (इस अवस्थामें कैलि-फासके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये)।

फेरम-फास ३x, ६x—बुखारके साथ प्रलाप; लक्षणके अनुसार दूसरी दवा पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये।

दाँत निकलना
(Dentition)

बच्चोंको छठेसे दसवें महीनेतक दाँत निकलते हैं। किसी-किसी बच्चेको और भी देरसे दाँत निकलते हैं। इस समय बहुतसे बच्चोंको पतले दस्त, अकड़न, कब्जियत, अजीर्ण, वमन वगैरह उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

कैल्के-फास १२x, ३०x—इसकी प्रधान दवा है। समयपर दाँत न निकलना, अच्छी तरह हजम न होना, ब्रह्मतालुका न भरना, चलनेको न सीखना, अतिसार।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—अकड़न होना या अकड़न होनेकी आशंका होनेपर, गर्म पानीके साथ सेवन करना चाहिये। पर्यायक्रमसे कैल्केरिया-फासके साथ व्यवहार करनेपर बहुत फायदा होता है।

फेरम-फास ६x, १२x— बुखार और यदि मसूढ़े फूले या गर्म रहें और चेहरा लाल आभा लिये हो आँखोंकी पुतली फैली हों, सूखी खाँसी आती हो, जल्दी-जल्दी श्वास-प्रश्वास, बेचैनी और चिड़चिड़ा स्वभाव हो, तो इससे बहुत लाभ होता है।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—रोगीके दाँत चिकने और सुन्दर न होकर विकृत हो जाते हैं।

सिलिका ६x, ३०x—कब्जियत, माथा बड़ा, पेट बड़ा हुआ और माथेमें बहुत पसीना होना; अच्छी तरह पोषण नहीं होना; लड़का अच्छी तरह हृष्ट-पुष्ट नहीं रहता।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—बहुत ज्यादा लार बहती है।

बहुमूत्र
(Diabetes)

इस रोगमें बहुत बार और बहुत ज्यादा-ज्यादा पेशाब होता है, इसलिये इसे बहुमूत्र कहते है। "शर्करा विहीन" बहुमूत्रके सम्बन्धमें मूत्रयंत्रोकी बीमारियाँ अध्यायमें बहुत-कुछ बताया जा चुका है। इस जगह चीनी-मिले "बहुमूत्र" के विषयमें ही बताया जायगा। यद्यपि बहुमूत्र मूत्रयंत्रकी बीमारी नही है, तथापि इसमें मूत्र-ग्रन्थिपर कुछ-न-कुछ बीमारीका हमला हो ही जाता है।

इस बीमारीकी उत्पत्तिका कारण अबतक निर्णय न हो सका। जिन्हें शारीरिककी अपेक्षा मानसिक परिश्रम ज्यादा करना पड़ता है, उनको ही यह रोग अधिक होता देखा जाता है। औरतोंकी अपेक्षा पुरुषोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

पहली अवस्थामें पुरुषोंको बार-बार बहुत पेशाब करना पड़ता है; साथ ही बार-बार प्यास लगती है और उन्हे पानी भी बहुत ज्यादा पीना पड़ता है। इसके बाद रोगीका शरीर धीरे-धीरे कमजोर और दुबला होता जाता है। त्वचा सूखी और बदन रुखड़ा मालूम होता है, बदनमें खुजली होती है। शरीरकी उष्णता स्वाभाविक रहती है; कभी-कभी घट भी जाती है। स्वाभाविक भूख; दुर्निवार प्यास; बहुत खाता है, पर शरीर पुष्ट नहीं होता, दिनों-दिन सूखता ही जाता है; मुख-गह्वर और जीभ सूखी रहती है, कभी-कभी लसदार लार बहती है वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। कब्जियत भी रहती है; बहुमूत्र रोगियोंका फोड़ा या व्रण वगैरह बहुत ही आशंकाजनक होते हैं।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x, १२x—इसकी प्रधान दवा है।

कैलि-फास ६x, १२x—स्नायविक दौर्बल्यका रहना; राक्षसी भूख; नींद न आना प्रभृति उपसर्ग।

नेट्रम फास ६x, १२x—बार बार पेशाब होना; पेशाबका वेग रोकनेमें असमर्थ।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—दुबला; निराशा; अदम्य प्यास; अनिद्रा; भूख न लगना; सरमें भार या दर्द; रोगीकी तेजी एक दिन कम, एक दिन ज्यादा रहती है।

अतिसार

(Diarrhœa)

बहुत ज्यादा खाना-पीना, बिना साफ किया पानी पीना, अच्छी तरह चबाये बिना अथवा भूख न रहनेपर भी खा लेना, सर्दी लगना, मानसिक उद्वेग वगैरह कारणोसे साधारणतः पतले दस्त आया करते हैं। डकार, मिचली और सुस्ती वगैरह भी दिखाई देते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—(पहली अवस्था) बार-बार पानीकी तरह पतला दस्त, उसके साथ खायी हुई चीज अनपचकी अवस्थामें निकलना।

कैल्के-फास ३x, १२x—पतले दस्त, अजीर्णकी वजहसे और दाँत निकलनेके समय पतले दस्त। गंडमालाग्रस्त दुबले-पतले बच्चोंका अतिसार ; हरा, थक्का-थक्का, अनपचका मल ; बदबूदार पानीकी तरह बहुत ज्यादा पाखाना होता है ; जोरकी आवाजके साथ पाखाना होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—फीका या पीले रंगका मल ; जीभपर सफेद मैल चढ़ी रहती है।

कैलि-फास ६x, १२x—चावलके धोवनकी तरह पानी-जैसा दस्त, बहुत बदबू, शरीर कमजोर या अवसन्न हो जाना, पेट फूलना; आँतोका अपने स्थानसे हट जाना।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—पित्तभरे दस्त, पुराना अतिसार, सवेरेका अतिसार, खानेसे ही दस्त बढ जाते हैं। जाडा लगकर बुखार, दाँत निकलनेके समयका अतिसार, मल पतला, आँव-मिला, हरी आभा लिये पेशाब कम ; नाड़ी और श्वास-प्रश्वास तेज ; नीदके झोकमें चौक उठता है ; प्यास भी रहती है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—पेटमें वायु संचय होनेकी वजहसे पैदा हुआ शूलका दर्द तथा खीचन और अकड़न रहना।

सिलिका ३x, ३०x—बच्चोंका उदरामय।

नेट्रम-फास ३x, ३०x—दाँत निकलनेके समयका उदरामय। कच्चा फल खाकर गर्मीके दिनोंमें अतिसार होनेपर भी इसका प्रयोग होता है। अम्लकी वजहसे अतिसार, मल खट्टी गन्ध लिये और हरा। जीभपर पीला मैल चढ़ा रहता है।

झिल्लिक-प्रदाह
(Diphtheria)

यह अत्यन्त संक्रामक बीमारी है। खासकर यह बचपनकी अवस्थाका रोग है। दो वर्षसे लेकर सात वर्षतकके बच्चोंको यह बीमारी बहुत ज्यादा होती है। अधिक अवस्थावाले मनुष्योंको कम होती देखी जाती है।

यह शायद एक प्रकारके जीवाणुसे उत्पन्न होती है। शीत और वसन्त ऋतुमें इसका प्रादुर्भाव अधिक दिखाई देता है। तर और अस्वास्थ्यकर स्थानमें रहना वगैरह इस रोगके गौण कारण है।

इस बीमारीमें गलेमें एक तरहकी नकली झिल्लि या पर्दा पैदा हो जाता है। यदि समय रहते इस पर्देको रोकनेका उपाय नहीं किया जाता, तो यह पर्दा बढ़ जाता है और साँसको रोक देता है। साँस रुकनेकी वजहसे ही रोगीकी मृत्यु होती है।

इस बीमारीमें पहले बच्चा सुस्त और बीमार जैसा मालूम होता है। थोडा बुखार और जाडा या कम्प-जैसा भाव दिखाई देता है; माथेमें और सारे शरीरमें दर्द रहता है और पाचन-क्रियामें गडबड़ी दिखाई देती

है। किसी-किसीको पहलेसे ही तेज बुखार और कै आरम्भ हो जाती है और शरीरपर एक तरहकी फुन्सियाँ पैदा हो जाती है। तालु और उपजिह्वामें प्रदाह पैदा हो जाता है। कोई चीज खाते समय गलेमें अड़ती है और साँसमें वदबू मालूम होती है।

कैलि-म्यूर ६x, १२x—झिल्लीक-प्रदाह या डिफ्थीरिया रोगकी प्रधान दवा है। पहली अवस्थामें "फेरम-फास" के साथ अगर पर्याय-क्रमसे इसका व्यवहार होता है, तो अधिकांश स्थानोंमें अच्छा ही लाभ दिखाई देता है। दस ग्रेण "कैलि-म्यूर" एक गिलास पानीमें मिलाकर वार-बार कुल्ला करनेसे लसदार स्राव घट जाया करता है।

फेरम-फास ३x, १२x—पहली अवस्थामें बुखारके लक्षणमें "कैलि-म्यूर" के साथ पर्यायक्रमसे इसका सेवन करना चाहिये।

नेट्रम-म्यूर ६x, १२x—पानीकी तरह कै या पानीकी तरह दस्त ; चेहरा मलिन और फूला-फूला, उसके साथ ही तन्द्रा-भाव ; बहुत लार बहना ; जीभ सूखी , जोर-जोरसे आवाजके साथ श्वास-प्रश्वास।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—हरे रंगका या तीते स्वादका वमन ; गलेमें श्लेष्मा संचय होना।

कैलि-फास—३x, ६x—रोगीकी जिस किसी अवस्थामें भी रोगी अगर अत्यन्त कमजोर हो जाय, तो लक्षणके अनुसार इसके साथ ही दूसरी दवा पर्यायक्रमसे व्यवहार करनी चाहिये।

कैल्के-फ्लुओर १२x—अगर रोग कंठनालीतक फैल जाय, तो "कैल्के-फास" के साथ पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये।

कैल्के-फास ६x, १२x—रोगके बीच-बीचमें देना अच्छा है। रोग आरम्भ होनेपर कमजोरी हटानेके लिये भी इसे देना चाहिये।

नेट्रम-फास ६x, १२x—नकली झिल्ली-प्रदाहमें तालुदेश, तालुमूल और जीभके पिछले भागमें पीले रंगका लच्छा या लेप पड़ जानेपर इसका प्रयोग होता है।

शोथ
(Dropsy)

यह स्वयं कोई रोग नहीं है. दूसरे रोगकी वजहसे यह पैदा हो जाता है। प्लीहा, यकृत, हृत्पिण्ड, मूत्रयंत्र वगैरहकी बीमारीमे और बहुमूत्र, अतिसार और मैलेरिया बुखार बहुत दिनोंतक भोगनेपर पेट, हाथ, पैर, आँख, मुँह वगैरहमें पानी इकट्ठा हो जाता है और ये स्थान फूल उठते हैं। दबानेपर यह जगह बैठ जाती है। शोथसे यह भी मालूम होता है कि खूनकी कमी पैदा हो गयी है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—शारीरिक यन्त्र आदिपर रोगका हमला होनेपर जो शोथ हो जाता है, उसमें यह ज्यादा काम करता है। जीभपर सफेद लेप-चढ़ी रहती है; पेशाबमें सफेद श्लेष्मा रहता है, यकृत बडा; हृत्पिण्ड कमजोर और छातीमें अकडन रहती है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—(नेट्रम-म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये); साधारण ढंगका शोथ; एकशिरा या अण्डकोषका शोथ। (आरक्त ज्वरके बादका शोथ)।

नेट्रम-फास ६x, ३०x—रक्तके क्षयकी वजहसे शोथ (फेरम-फास); रक्तस्वल्पता।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—हृद्रोगकी वजहसे शोथ, बहुत दिनोंका पुराना एकशिरा रोग।

रक्तामाशय
(Dysentery)

इसमें बडी ऑतमें जखम और प्रदाह होता है। पेटमें दर्द, बार-बार मलका वेग और प्रत्येक बार थोडा-थोडा पाखाना होता है। पाखाना होनेके समय कूथन, मलहीन ऑव, खून-मिला दस्त, पेशाव कम होना, बुखार, भूख न लगना, मिचली, हाथ-पैर ठंडे, चेहरा लाल, नाड़ी तेज और क्षीण वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं; पहलेसे ही सावधान न होनेपर रोग कठिन और दूःसाध्य हो पडता है।

एक तरहके जीवाणु इस बीमारीके कारण हैं। खाने-पीनेका दोष तथा अस्वाथ्यकर और तर स्थानमें रहना, पसीना रुकना, सर्दी लगना इत्यादि इसके उत्तेजक कारण हैं।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—पेटमें असह्य दर्द होता है; हमेशा पाखाना लगा रहता है; बहुत ज्यादा कूथन; कुछ पीले रंगकी तली (अर्थात् रस, रक्त, पीव आदि) मिला दस्त होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रादाहिक अवस्था, प्रबल ज्वर; पानीकी तरह गर्म दस्त; कभी-कभी लाल चमकीले रक्तका दस्त और प्रलाप।

कैलि-फास ६x, १२x—बहुत बदबूदार दस्त और कभी-कभी केवल खूनका दस्त हो आता है। प्रलाप; पेट फूलना; पाखाना होनेके बाद कूथन प्रभृति भी रहती हैं।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—पेट और पाकस्थलीमें दर्द और खींचन; सेंकने, दबाने और मलनेसे आराम मालूम होता है; सरलान्त्रमें दर्द और बार-बार पेशाब और पाखानेका वेग होता है।

बाधक-वेदना या ऋतुशूल
(Dysmenorrhœa)

औरतोंको महीने-महीने नियमित समयपर ऋतु या रक्तस्राव होता है। कष्टकर रजःस्राव यदि हो तो उसे "बाधक या ऋतुशूल" कहते हैं। इसमें तलपेटमें असह्य दर्द होता है; सारे शरीरमें दर्द, कमरमें दर्द, कब्जियत, मिचली वगैरह यन्त्रणादायक उपसर्ग भी मौजूद रहते हैं। रोगिणी पड़ी रहती है और तकलीफसे छटपटाया करती है। रजःस्राव हो जानेपर और कभी-कभी रक्तके साथ झिल्ली जैसा पदार्थ निकलनेपर तकलीफ घट जाती है। खून चमकीला, लाल या काली आभा लिये और बदबूदार हो सकता है।

जरायुका अपने स्थानसे हटना, गर्भाशयके पेशी-तन्तुका संकोचन या जरायुमें बहुत ज्यादा रक्त-संचय वगैरह कारणोंसे यह बीमारी होती है।

मैग्नेशिया-फास १x,६x—अकड़न-जैसे दर्दकी यह प्रधान दवा है।

फेरम-फास ३x, ६x—ताजे दर्दके साथ झिल्लियोंके टुकड़े निकलना चमकीले लाल रंगका रजःस्राव ; रक्तकी अधिकता रोकनेके लिये ऋतुके पहले इसे सेवन करना चाहिये।

कैलि-फास ६x, १२x—थोड़ेमें ही रोनेवाली और चिड़चिड़े स्वभाववाली औरतोंको ऋतुशूल हो जानेपर इसका प्रयोग होता है। काली आभा लिये रक्तस्राव।

अजीर्ण (Dyspepsia)

बहुत ज्यादा भोजन, अंट-संट, प्रकृतिके विरुद्ध भोजन, ज्यादा उपवास, अच्छी तरह चबाकर न खाना, बहुत ज्यादा परिश्रमके बाद, बिना विश्राम किये ही खा लेना, क्रोध वगैरह मानसिक उत्तेजनाके बाद

ही तुरन्त खाना, गन्दा खाना-पीना, गुरुपाक चीजें खाना, चाय, काफी वगैरह उत्तेजक चीजें पीना ; किसी तरहका शारीरिक परिश्रम न करना इत्यादि कारणोसे पाचन-क्रियामें गड़बड़ी पैदा हो जा सकती है। खायी हुई चीज अच्छी तरह न पचने या परिपाक न होनेपर ही उसे अजीर्ण कहते हैं।

इस बीमारीमें भूख न लगना, खट्टी डकार आना, छातीमें जलन, सरमें भार, सरमें चक्कर आना, जी मिचलाना, पेट फूलना या बार-बार डकार आना, पेटमें दर्द, कब्जियत अथवा पतले अजीर्ण-जैसे दस्त, शारीरिक और मानसिक अवसाद, स्वप्न देखना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x, १२x—पाकस्थलीका प्रदाह ; पाचन-क्रियाकी गडबडी ; इन कारणोसे ज्वरकी पहली अवस्थामें इसका प्रयोग होता है। अजीर्ण रोगमें चेहरा लाल और गर्म आभा लिये होना ; खायी हुई चीज विना पची हुई अवस्थामें कै हो जाना ; खट्टी चीजोंकी कै होना ; पेट फूलना ; खायी हुई चीजका स्वाद डकारमें आना ; पेटमें दर्द, दबानेसे वह दर्द बढ़ता है। अग्निमान्द्य ; दूधमें अरुचि ; अच्छी तरह नींद न आना ; सपने देखना।

कैल्कि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, सफेद अथवा सफेद धुमैले मैलसे चढी जीभ और पेट फुलना ; यकृतकी निष्क्रियता ; चर्बी-मिली या तेल-मिली अथवा घीकी पकी मसालेदार चीजें खानेके बाद मिचली और तबियत खराब मालूम होना ; मुँहका स्वाद तीता ; कब्जियत और पेटमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—खट्टा स्वाद, राक्षसी भूख, तेज प्यास ; पेटमें दर्द ; मुँहमें पानी भर आना ; श्वास-प्रश्वासमें बदबू।

नेट्रम-फास ६x, १२x—अम्ल रोग, खट्टी डकार, छातीमें जलन; जीभ और तालुपर सफेद मलाई-जैसा या पीले रंगका लेप चढ़ा हुआ रहता है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—खायी हुई चीजोंका रक्त, मांस, अस्थि वगैरहमें परिणत न होना; सामान्य भोजन या ठण्डा पानी पीनेकी वजहसे दर्द।

कैलि-फास ६x, १२x—स्नायु-विधानकी क्रिया विगड़ जानेकी वजहसे अजीर्ण रोग; राक्षसी भूख; बहुत ज्यादा हर्ष विषाद; क्रोध या भयकी वजहसे अजीर्ण पैदा हो जाना और पेटमें दर्द।

मैग्नेशिया-फास १x, ६x (बहुत गर्म पानीके साथ)—खींचन और अकड़न; पाकाशय-प्रदेशमें दाँतसे चबानेकी तरह दर्दमें यह लाभदायक है।

नेट्रम-सल्फ ६x, ३०x—पित्तकी अधिकता, चिड़चिडा मिजाज; तीता स्वाद, तीती कै; छातीमें जलन; हरा मल; सरमें भार, सरमें चक्कर आना; पेट फूलना।

कर्ण रोग

(Diseases of the Ear)

कानमें दर्द, कानमें पीव, कानमें नाद या आवाज होना, बहरापन वगैरह बीमारियाँ कर्ण रोगमें आ जाती हैं।

सर्दी लगना, कानमें पानी प्रवेश करना वगैरह कारणोंसे और छोटी माता, चेचक, टाइफायड वगैरहके बाद कानमें पीव पैदा हो जा सकता है।

बहुत दिनोंतक कानमें पीव होनेकी बीमारी भोगनेके बाद, किसी कड़ी बीमारीके बाद, मस्तिष्कमें चोट लगनेकी वजहसे अथवा भीषण

कड़ी आवाजसे कान बन्द हो जाय या कर्ण-पटहमें फोडा वगैरहकी वजहसे कानमें छेद हो जाय, तो आदमी बेहोश हो जा सकता है।

फेरम-फास ३x, ६x—सुई बेधनेकी तरह तेज दर्द ; बुखारके साथ कानका प्रदाह ; रक्त-संचय ; कानमें भों-भों शब्द, प्रदाहकी वजहसे बहरापन।

कैलि-स्यूर ३x, ६x—नया प्रदाह उपशम हो जानेके बाद, कानके छेदसे रस या सर्दी निकलना, सफेद रंगका स्राव ; सब कर्ण-नालियोंमें सूजन आ जाना और बहरापन।

कैलि-फास ६x, १२x—बदबूदार पीव निकलना ; शीर्णावस्था ; स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे बहरापन।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—कानमें दर्द (स्नायविक प्रकृतिका दर्द), स्नायुशूलकी तरह दर्द।

कैल्के-फास ३x, ३०x—गंडमालाग्रस्त धातुके रोगियोंका कर्ण-स्राव या पुराना कर्ण-स्राव।

सिलिका ६x, ३०x—बदबूदार पीव-भरा स्राव निकलना ; कानोंका प्रदाह।

कैल्के-सल्फ ३x, ६x—गाढ़े स्रावके साथ बहरापन ; स्राव कभी-कभी रक्त-मिला भी होता है। यह पीव होना बन्द कर देता है।

नेट्रम-स्यूर ३x, ३०x—क्विनाइनके अपव्यवहारके बाद कानमें भों-भों आवाज होना ; कर्ण-कुहरकी सूजन ; इसी वजहसे बहरापन ; कानसे पानीकी तरह स्राव ; जीभ फेन-भरी ; बहुत ज्यादा लार बहना।

आँतोंका

आँतोंका प्रदाह

(Enteritis)

हमारी पाकस्थलीके निचले भागमें आँत या नाडियाँ रहती हैं। ये आँतें दो अंशोंमें विभक्त हैं—बडी और छोटी। बहुत दिनोतक बड़ी आँतमें प्रदाह मौजूद रहनेपर रक्तामाशय हो जाता है और उस आँतमें जखम पैदा हो जा सकता है।

यदि छोटी आँतमें प्रदाह हो जाये, तो कॅपकॅपी, बुखार, पेटमें दर्द, अरुचि, कब्जियत या पतले दस्त आना, पेट फूलना वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था, पेट कडा और फूला तथा यह उपयोगी है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, पेट कडा और फूला तथा कब्जियत रहनेपर।

कैल्के-फास ६x, १२x—नये उपसर्गोंके गायब हो जानेके बाद, जीवनी-शक्तिको बढ़ानेवाली और बल देनेवाली यह दवा है।

मृगी रोग

(Epilepsy)

एकाएक बेहोश हो जाना और उसके साथ ही थोडी-बहुत अकड़न इस बीमारीका प्रकृतिगत लक्षण है। यह रोग होनेके पहले रोगी समझ नहीं सकता कि उसे रोग हुआ है या होगा। बात करते करते, बोलते-बोलते या चलते-चलते रोगी एकाएक बेहोश हो जाता है और अकडन होने लगती है। कोई-कोई बहुत जोरसे चिल्लाकर बेहोश हो जाते हैं।

चेहरा उतरा, अधमुँदी आँखें, गर्दन अकड़ी, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, मुँहसे फेन निकलना वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। किसी-किसीकी जीभ बाहर निकल पडती है। इस बीमारीके आक्रमणके अन्तमें रोगी सो जाता है, नोद खुलनेपर चंगा हो जाता है और अपनी बीमारीकी कोई भी बात उसे याद नही रहती।

यह बीमारी अकसर दससे बीस वर्षके भीतर ही आरम्भ होती है। बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन, हस्तमैथुन, आँव, क्रिमि, चोट वगैरह कारणोसे यह रोग हो सकता है। इसका असली कारण-तत्व अबतक निर्णय नही हुआ।

यह एक दुरारोग्य रोग है। इसमें पानीमें डूबने, आगमें जलने, गिर पडने वगैरह ढंगसे अपमृत्युका बहुत भय रहता है। यदि सम्भव हो तो सब समय रोगीके साथ किसी-न-किसीको रहना चाहिये।

बीमारीका हमला होते ही रोगीको खुली जगह या खुली खिड़कीके बीचमें काग या साफ कपडोकी पोटली लगा देनेपर जीभ कट जानेका भय नही रहता।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रधान दवा है। खासकर यदि किसी तरहका उद्भेद (खसरा, छोटी माता, चेचक और खुजली) आदि दब जाये और उसके बाद यह बीमारी पैदा हो जाये।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—अकडन या अंग मरोडना, टेढ़ा-मेढ़ा करना।

कैलि फास ६x, १२x—बीमारीके आक्रमणके बाद, शीतलता, कलेजा धडकना, कमजोरी, अवसन्नता।

नेट्रम-फास ६x, ३०x—कृमि वगैरहकी वजहसे आँतोंका उपदाहसे पैदा हुई बीमारीमें।

नेट्रम-सल्फ ६x, ३०x—चोटकी वजहसे मृगी।

सिलिका ६x, ३०x—रातके समय और अमावस्याके दिन मृगी ; मृगीका आक्रमण होनेके पहले सर्दी मालूम होना।

नाकसे रक्त गिरना
(Epistaxis)

यह कोई खास बीमारी नहीं है। किसी-किसीको बुखार, मृगी वगैरह रोगके अन्तमें नाकसे खून गिरा करता है। बहुत बार इससे सरका दर्द, सरमें चक्कर आना वगैरह बीमारियाँ कभी-कभी आप-ही, आप अच्छी हो जाती हैं। पहली अवस्थामें रक्तस्राव बन्द करनेकी चेष्टा ही करनी चाहिये ; परन्तु यदि बार-बार रक्तस्राव होता रहे, तो दवा देकर रोकनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

चोट, मस्तिष्कमें रक्त-संचय, ऋतु बन्द होना या अर्शका रक्तस्राव बन्द होना, बहुत ज्यादा परिश्रम वगैरह कारणोंसे नाकसे खून गिरा करता है।

रक्तस्रावके पहले चेहरा लाल, नाड़ी तेज, दृष्टि-क्षीण, नाकमें खुजली वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—चोट अथवा और किसी दूसरे कारणसे नाकसे चमकीला लाल रंगका रक्तस्राव होता है। वह खून जल्दी-जल्दी जम जाता है। जो लड़के जल्दी-जल्दी बढ़ते हैं, उनकी नाकसे खून गिरना।

कैलि-फास ६x, १२x—सड़ा हुआ, पतला, काले रंगका खून और सारे शरीमें कमजोरी मालूम होना ; दुर्बल प्रकृतिके मनुष्य या रोग पैदा होनेवाली धातु।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—सर झुकानेपर तथा खाँसनेपर रक्तस्राव ; रक्त लाल, पतला, जमता नही ।

विसर्प

(Erysipelas)

इसमें त्वचा उजली, लाल और चमकीली तथा गर्म होती है। बीमारीवाली जगहपर छाले पड जाते हैं और सूजन वगैरह दिखाई देने लगती है। बुखार, कंपकँपी, शरीरमें दाह, तन्द्राभाव, सरमें दर्द, सूखी जीभ, मिचली वगैरह इसके लक्षण है।

चोट, सर्दी लगना, उत्तेजना, पाचन-क्रियाकी गडबडी, प्रबल उद्वेग या उत्तेजना वगैरह कारणोसे यह बीमारी हुआ करती है ; किसी-किसीको नश्तर लगवानेके बाद विसर्प हो जाया करता है। केंकड़ा, चिंगडी मछली इत्यादि खाने अथवा किसी तरहके वृक्षका रस लग जानेपर बहुतसे आदमियोको यह बीमारी हो जाया करती है। कभी-कभी यह संक्रामक भी हो पड़ती है।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रादाहिक अवस्थाकी यह प्रधान दवा है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—फेरम-फासके प्रयोगके बाद ज्यादा फायदा करती है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—पानी-भरे छालेके आकारका विसर्प रहनेपर यह उपयोगी है।

कैलि-सल्फ ६x, १२x—छालेकी तरह विसर्प ; उपत्वकको निकाल देनेमें विशेष सहायक है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—चिकनी लाल रंगकी यंत्रणादायक सूजनमें लाभदायक है।

साधारण ज्वर

(Simple fever)

जाडा, उत्ताप, तेज नाड़ी, प्यास, बेचैनी, सर गर्म, सर और हाथमें दर्द, जी अच्छा न मालूम होना, कब्जियत वगैरह इस बुखारके लक्षण हैं।

सर्दी लगना, धूपमें घूमना, पानीमें भीगना, खाने-पीनेका दोष, बहुत परिश्रम वगैरह इसके कारण हैं।

बहुत बार यह बुखार एकाएक आ जाता है और कई दिन उपवास करनेपर आप ही छूट जाता है। आवश्यक होनेपर लक्षणके अनुसार नीचे लिखी दवाओंका प्रयोग करना चाहिये।

फेरम-फास ३x, ६x—सर्दीका बुखार, वात-ज्वर, किसी भी तरहका प्रदाह ज्वर, चोटकी वजहसे बुखार वगैरह सब तरहके सामान्य ज्वरकी प्राथमिक अवस्थाकी प्रधान दवा है। तेज नाडी, उत्तापका बढ़ना और कँपकँपी, हर रोज १ बजेके समय जाडा और कम्प देकर बुखार आता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी दवा (खासकर जीभपर लेप चढ़ा हुआ और कब्जियत रहनेपर); सर्दीका बुखार, बहुत जाड़ा, साधारण ठंडी हवा लगनेपर भी रोगी जाडेसे काँपने लगता है। जाडा दूर करनेके लिये आग तापता है अथवा अच्छी तरह शरीर ढँककर सो जाता है।

कैलि-फास ६x १२x—केवल स्नायविक ज्वरोंमें इसका प्रयोग होता है। नाड़ी अनियमित और कमजोर ; शारीरिक उष्णताका बहुत ज्यादा होना ; बहुत कमजोरी और अवसाद, हल्के बुखारमें मुँह सूखा, दाँत मैला और विकार इत्यादि लक्षण रहता है।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—गर्मीके दिनोंके बुखारमें नाक, मुँहसे पानीकी तरह श्लेष्मा निकलनेके लक्षण (hay fever) में इसका प्रयोग करना चाहिये।

भगन्दर

(Fistula in Ano)

इसमें मलद्वारके भीतर एक तरहका शोष या नासूर हो जाता है ; इसे ही भगन्दर कहते हैं। इससे रस, रक्त, पीव वगैरहका स्राव हुआ करता है। यह एक दुरारोग्य बीमारी है। बहुत दिनोंतक अर्श-रोग भोगनेपर, किसी-किसीको भगन्दरकी बीमारी हो जाया करती है।

कैल्के-फास और सिलिका पर्यायक्रमसे देना चाहिये। कैल्के-फ्लुओर १२x विचूर्णके व्यवहारसे भी कभी-कभी उपकार होता है।

कैल्के-फास ६x, १२x—**सिलिका** ६x, ३०x के साथ पर्याय-क्रमसे सेवन करना चाहिये।

पित्त-पथरी

(Gall-stone)

पित्त-पथरी या पित्त-शूल—यह यकृतकी एक खास तरहकी बीमारी है। औरतोंको ही अधिकतर यह बीमारी हुआ करती है। जब पित्त-कोषसे नियमित रूपसे पित्त नही निकलता, तो वही पित्त जमकर धीरे-धीरे पित्तके कण या बालूके कणकी तरह हो जाता है अथवा पत्थरके कण बन जाता है। पित्तकोषमें एक बडा और बहुतसे छोटे-छोटे इस तरह पत्थरके कणकी तरह कितने ही पदार्थ रह सकते हैं। ये पत्थरके कण जबतक पित्तकोषमे रहते हैं, उतने दिनोंतक रोगीको कुछ अधिक कष्ट नही होता ; परन्तु ये कण पित्तवाही नालीमें आ पडनेपर रोगी तकलीफसे अधीर हो पडता है ; पेट, पीठ और छातीमें तथा कन्धेमें और यकृत-प्रदेशमें भयानक दर्द अनुभव करता है। मिचली, वमन, बहुत पसीना,

क्षीण नाड़ी, बदन ठंडा, उतरा हुआ चेहरा, कामला या पांडु-रोग, ज्वर वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। पित्तवाही नलीसे जब पथरी आँतोंमें चली जाती हैं, तब तकलीफ घट जाती है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—(प्रतिशोधक)—इस दवाके सेवन करने पर फिर पथरी नहीं पैदा हो सकती।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—बहुत अधिक यंत्रणा, खींचन या अकड़न।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—पित्त-प्रधान या ग्रन्थि-वात-धातु; रोगिणी कमरमें कसकर कपडे नही पहन सकती।

अनजानमें पेशाब होना

(Enuresis)

यह स्वयं कोई विशेष रोग नही है; दूसरी बीमारीका लक्षणभर है। मूत्रनालीके पक्षाघातकी वजहसे पेशाव रोकनेकी ताकत गायब हो जाती है। मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका बढ़ना, चोट, पथरी वगैरहकी वजहसे बार-बार पेशावका वेग होता है। पेशावका वेग होनेपर जब पेशाव नहीं किया जाता, तब अज्ञानमें आप-ही-आप पेशाब हो जाता है। छीकने, खाँसने, जोरसे हँसने वगैरहपर पेशाव हो जाता है। यह बीमारी बहुत दिनोंतक भोगते रहनेपर पेशाब बून्द-बून्द आप ही हो जाया करता है; परन्तु इससे मूत्रकृच्छ्रताकी तरह तकलीफ नही होती। हस्त-मैथुन, उपदंश दोष वगैरह कारणोंसे यह बीमारी होती देखी जाती है। बच्चे कृमिकी वजहसे बिछावनपर पेशाव किया करते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—संकोचक पेशी-समूहोंकी कमजोर या स्थानिक उपदाहकी वजहसे पेशाव रोक रखनेकी ताकतका न रह जाना।

कैलि-फास ६x, १२x—किसी तरहके स्नायविक रोगकी वजहसे अगर पेशाबमें गड़बड़ी हो जाये।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—छोटी उमरके बच्चे या बूढ़ोंको इच्छा न होनेपर भी पेशाब हो जाना।

चर्म-रोग

(Diseases of the Skin)

चर्म-रोग कितने ही तरहके होते है। जैसे—खुजली, खसरा, दाह, रूसी, आमवात, व्रण, शरीर या हाथ-पैरका फटना, मुँहसे, फुन्सियाँ, खुजलाहट आदि।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दाने या फोडे, उनसे गाढ़ा सफेद मवाद निकलना और सूजन रहना।

कैलि सल्फ ६x, १२x—उद्भेद निकलना, पानीकी तरह पीला, कमजोर करनेवाला पीव, रस आदि निकलना, त्वचा सूखी प्रभृति लक्षण रहनेपर।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—साफ पानी-भरे दाने ; खुजली पानीकी तरह स्राव, दादके जैसे उद्भेद।

नेट्रम-फास ३x, १२x—दूधकी मलाईकी तरह पीला स्राव ; सुनहरी पीले रंगकी पपडी जमना ; अम्ल रोग ; सरके चमडेपर पपडी जमना, खासकर स्तन पीनेवाले बच्चोको।

कैलि-फास ३x, १२x—बहुत ज्यादा सडनेका उपसर्ग ; कीड़ा चलनेकी तरह सुरसुरी ; अनुभव-शक्तिकी अधिकता।

कैलि-सल्फ ३x, ३०x—पीव-भरा चर्म-रोग ; गाढा, पीला स्राव निकलना, पपडी जमना।

कैलि-फास ३x, ३०x—वृद्धोंका खसरा, कमजोरीके साथ खुजली ; मुँहासे निकलना।

ग्रन्थियोंकी वीमारी

(Glandular Affections)

शरीरके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें (कानोंमें, गलेमें, गर्दनके पीछे, वगलमें, पुट्टेमें तथा और भी कितनी जगहोंमें (छोटी-वडी कितनी ही ग्रन्थियाँ हैं। यकृत एक वहुत ही वडा ग्रन्थि है।

कानकी जड़, गलगंड, पुट्ठा वगैरह ग्रन्थियोंकी वीमारी होती है। गंडमालामें भी ग्रन्थि वढ़ती है और उसमें दर्द होता है, परन्तु यह ठीक-ठीक गाठोंकी वीमारी नही है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—गांठोंकी सूजनकी प्रधान दवा है। गंडमालासे पैदा हुई गांठोंका वढ़ना ; कानकी जडका फूलना।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—सख्त या पत्थरकी तरह कड़ी गांठे ; स्तनकी गांठमे कड़ापन।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—वहुत अधिक लार वहनेके साथ-ही-साथ ग्रन्थियोकी वीमारियाँ। इसके रोगीके आँखका गोला वाहर निकल आता है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—ग्रन्थियोकी पुरानी विवृद्धिकी वीमारीकी प्रधान दवा है। गंडमाला या घेघा हो जाना।

सिलिका ६x, ३०x—गंडमालाग्रस्त रोगियोकी गांठोकी वीमारी यदि सूजी हुई गांठोके पकनेकी सम्भावना हो, तो सिलिका देना चाहिये। यह दवा पीव पैदा करनेमें सहायता पहुँचाती है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—गलगंड या घेघा। मुँहका स्वाद तीता; जीभपर हरी आभा लिये लेप चढ़ा हुआ रहता है।

गलगंड (Goitre)

इसमें गलेकी ग्रंथियाँ फूल जाती हैं। कितनी ही बार तो बहुत बड़ी हो जाती हैं। इसी वजहसे किसी चीजके निगलने और साँस लेने-छोडनेमें तकलीफ होती है। जो पहाड़ी जगहोंमें रहते हैं, उन्हें यह बीमारी ज्यादा होती है। पीनेके पानीमें कोई खनिज पदार्थ या खूनका भाग अधिक रहनेपर यह बीमारी हो सकती है; पुरुषोंकी अपेक्षा औरतोंको यह बीमारी ज्यादा होती है। बहुत ज्यादा प्रसव कष्ट या जरायुके किसी प्रकारके दोषकी वजहसे भी यह रोग हो सकता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—प्रधान दवा है। जिनके शरीरमें रक्त कम हो, उन रोगियोंके लिये यह विशेष उपयोगी है।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—गांठ बहुत कड़ी हो जानेपर यह उपयोगी है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—गांठ बहुत कडी न होनेपर और रोगवाली जगहमें तरल पदार्थ रहनेपर यह उपयोगी है। गलगंडकी वजहसे आँखका गोला बाहर निकला हुआ, हृद्वृद्धि, श्वास-प्रश्वास और निगलनेमें कष्ट।

नेट्रम-फास ३x, ६x—अम्लका लक्षण रहनेपर।

प्रमेह
(Gonorrhœa)

प्रमेह (सुजाक) एक छुतहर बीमारी है। प्रमेह रोगवाले मनुष्यके संसर्गमें रहना या इन रोगवाली स्त्रीके साथ सहवाससे प्रमेह रोग होता है। पेशावमें जलन, पेशाबके साथ पीव और खून निकलना, पेशाब

रुकना और पेशावमें तकलीफ वगैरह वहुत ही कष्ट देनेवाले लक्षण सब प्रकट होते हैं। यह रोग सहजमें ही आराम नही होता है; इसीके फलस्वरूप ग्रन्थिवात इत्यादि रोग होते हैं।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रधान औषध है। गाढ़ा सादा या पीली आभा लिये सफेद रंगका पीव निकलना।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रादाहिक अवस्था; पेशावमे जलन, गर्मी या लाली मालूम होना; टपककी तरह दर्द।

कैलि-फास ६x, १२x—सुजाकके मवादके साथ रक्त निकलना।

नेट्रम म्यूर ३x, ३०x—पुराना सुजाक; पानीकी तरह सफेद मवाद निकलता है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—पीली आभा लिये मवाद आनेपर इससे फायदा होता है।

मेगनेशिया-फास ३x, ६x—मूत्रनलीका संकोचन; पेशाबमें कष्ट, जलन आदि रहनेपर इससे वहुत लाभ होता है।

ग्रन्थि-वात
(Gout)

यह साधारणतः पैरके अंगूठेकी सन्धियोपर आक्रमण करता है। इससे गाठ-गाठमें दर्द होता है और ये सव जगहे फूल जाती हैं। यह रोग धनी, विलासी और आलसी प्रकृतिवाले मनुष्योंको ही हुआ करता है। उत्तेजक खाना-पीना, एकाएक पसीना रुक जाना, उद्वेग वगैरह इसके कारण हैं। यह दूसरे रोगसे भी पैदा हो सकता है। किसी-किसीको वंश परम्परागत यह रोग होता दिखाई देता है। इस रोगवाले रोगियोंको

प्रायः पेटकी और पाचन-क्रियाकी गड़बड़ी लगी रहती है। यह रोग औरतोंकी अपेक्षा पुरुषोंको ज्यादा होता है।

फेरम फास ३x, ६x—पहली अवस्थामें और प्रदाह रहनेपर अर्थात् सूजन, दर्द, लाली वगैरह रोगकी पहली अवस्थामें इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—नया और पुराना ग्रन्थि-वात; बहुत ज्यादा खट्टी गन्ध लिये पसीना होता है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—नये आक्रमणमें फेरम-फासके साथ पर्याय क्रमसे सेवन करना चाहिये। यह नये और पुराने दोनो तरहके ग्रन्थि-वातकी प्रधान दवा है।

औषधिज ज्वर

(Hay fever)

यह बहुत-कुछ नयी सर्दीके बुखारके समान होता है। ऑख, नाकसे पानी गिरना, छींक, किसी-किसीको रातके समय दमाकी तरह श्वासकष्ट वगैरह लक्षण प्रकट होते है। यह साधारणतः शरत् या बसन्त-कालके तृण-रेणु या फलके सूँघनेसे हो जाया करता है। सब एक तरहके रेणुसे रोगी नही हो जाया करते, अपनी-अपनी धातुके अनुसार भिन्न-भिन्न मनुष्योंको भिन्न-भिन्न रेणु अनिष्टकारी होती हैं। जिसे एक बार किसी समय यह बीमारी हुई है, उसे प्रायः प्रतिवर्ष उसी समय यह बीमारी हुआ करती है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—इसमें नाकसे साफ़ पानीकी तरह स्राव होता है; धीमा बुखार रहता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—श्लैष्मिक-झिल्लियोका सूजना, पाकाशयकी गड़बड़ी, नाकमें सर्दी वगैरह लक्षण रहनेपर।

कैलि-फास ६x, १२x—श्वासकष्ट, स्नायविक उपसर्गोंका रहना, सुस्ती, माथेमें खालीपन और कमजोरी मालूम होनेपर इसका प्रयोग होता है।

सरका दर्द
(Headache)

कितनी ही वार यह दूसरे रोगका लक्षणभर होता है। ज्यादा चाय, काफी, शराव, दाँतोंकी बीमारी, वहुत ज्यादा शारीरिक या मानसिक परिश्रम, धूपमें घूमना, दुश्चिन्ता, क्रोध, अनाहार, अनिद्रा, स्नायविक, दुर्बलता वगैरह कारणोंसे सरमें दर्द हो जाया करता है। शुक्रमेहक कब्जियत वगैरहसे भी सरमें दर्द होता है। किसी-किसीको इतना ज्यादा सर-दर्द होता है कि वह बैठ नही सकता। कोई-कोई तकलीफसे पागलकी तरह हो जाते है। कै, मिचली वगैरह कष्टकर उपसर्ग भी प्रायः मौजूद रहते हैं।

कैलि-फास ३x, १२x—स्नायविक सर-दर्द, वहुत ज्यादा मानसिक परिश्रमकी वजहसे सर-दर्द। वासी उवटनके रंगका लेप जीभपर चढ़ा रहता है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—स्नायविक सर-दर्द, तेज डंक मारने या तीर वेधनेकी तरह दर्द, मानो आँखोंसे आगकी चिनगारियाँ निकल पड़ती हों।

फेरम फास ३x, ६x—मस्तकमें रक्त-संचयकी वजहसे सर-दर्द ; चेहरा तथा आँखें लाल हो जाती हैं।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—यकृतकी क्रिया धीमी या आलसी प्रकृति। जीभ सफेद या धुमैले रंगका मैल-चढ़ी।

नेट्रम-सल्फ ३x, ३०x—पित्तकी अधिकताके साथ माथेका दर्द रहनेपर यह उपयोगी होता है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—पाकाशयमें अम्ल बढ़ जाना ; जीभ और तालु तर रहना तथा पीली मलाई-जैसे मैलसे जीभ ढॅकी रहती है ; ब्रह्मतालुमें दर्द ।

हृद्रोग-समूह
(Heart-affections of)

हृत्स्पन्दन, हृत्शूल, हृत्वृद्धि वगैरह हृद्यंत्र या हृत्पिण्डकी बीमारियाँ हैं। हृत्स्पन्दन या छातीमें धडकन, ठीक-ठीक हृद्-यंत्रकी बीमारी नहो है। यह इस यंत्रकी क्रियाकी गडबडी-भर है। यह साधारणतः दूसरे रोगसे पैदा हो जाती है। सहज अवस्थमें हृदयका स्पन्दन नियमित होता है और यह स्पन्दन अनुभवमें नहो आता ; पर जब किसी कारणसे स्पन्दन-क्रियामें गड़बडी आ जाती है, तब कलेजा जोरसे धडकता है और उस समय रोगी अच्छी तरह समझता है कि उसका कलेजा जोर-जोरसे धडक रहा है। रक्त या वायु प्रधान व्यक्ति ही यह बीमारी अधिकतर भोगा करते हैं। स्नायविक दौर्बल्य, अजीर्ण, पेट फूलना या पेटमें वायु भरना, मूर्च्छा, हृद्वृद्धि, ऋतुकी गडबड़ो, जरायु या डिम्बकोषकी बीमारी बहुत ज्यादा शारीरिक या मानसिक परिश्रम, बहुत ज्यादा हर्ष, शोक, क्रोध, भय, बहुत ज्यादा चाय, काफी या तम्बाकू सेवन वगैरह इसके उत्तेजक कारण हैं।

हृद्वृद्धि—साधारण अवस्थामें हृत्पिण्डका आकार शरीफाके समान होता है और उसका वजन पाव-डेढ़-पाव होगा ; परन्तु इस रोगमें इसका आयतन और वजन बढ़ जाता है। वजन बढ़कर सेर-डेढ़ सेर हो जाता

है। बहुत ज्यादा खाना-पीना ; बहुत ज्यादा परिश्रम और बहुत ज्यादा मानसिक उत्तेजना वगैरह कारणोंसे यह रोग पैदा होता है।

कैलि-फास ३x, ३०x—हृत्पिण्डकी क्रिया दुर्बल और रुक-रुककर होना ; कलेजा धड़कना ; स्नायविक दुर्बलता ; नींद न आना ; सारे शरीरका सुस्त होते जाना।

फेरम फास ३x, ६x—हृत्पिण्ड या रक्तवहा-नाड़ियोंका फैलना (कैल्के-फ्लुओर ; इस अवस्थामें प्रयोग करना चाहिये)। प्रादाहिक रक्ताधिक्यवाली अवस्थामें यह विशेष उपयोगी है।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—हृत्पिण्डका फैलना ; हृत्पिण्डका आयतन बढ़ जाना ; हृत्पेशी और तन्तुओंकी शिथिल अवस्था आदि लक्षणोंमें लाभदायक है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x – जिन रोगियोंके शरीरमें रक्त कम हो जाता है और इसी वजहसे शोथका लक्षण पैदा हो जाता है, उन्हें लाभ करता है।

रक्त-स्राव

(Hæmorrhage)

यह स्वयं कोई रोग नहीं है ; दूसरे रोगका लक्षणभर है। यक्ष्मा, टाइफायड, रक्त-पित्त, नासा, आँतोंका जखम, रक्तामाशय, प्रमेह, रक्त-प्रदर, अर्श या बवासीर वगैरह रोगोंमें रक्त-स्राव होता है। प्रसवके बाद प्रसूतिको और मासिक ऋतुस्रावके समय स्त्रियोंको परिमित रक्त-स्राव होता है। यह स्वाभाविक रक्त-स्राव है ; परन्तु यही स्राव बहुत ज्यादा हो अथवा दूसरे तरहका स्राव बहुत ज्यादा हो, तो दवा देनी चाहिये।

फेरम फास ३x, ६x—प्रधान दवा है। चमकीला लाल रंगका रक्त, वह जल्द ही जम जाता है; रक्तस्रावी प्रकृति; थोडेमें भी बहुत अधिक रक्त-स्राव होता है।

कैलि-फास ३x, ६x, १२x—काला, गला हुआ या बदबूदार रक्त; सारे शरीरकी दुर्बलता, जरायुसे रक्त-स्राव।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—पानी-जैसा पतला और लाल आभा लिये रक्त-स्राव; यह खून जमता नही हैं।

अर्श या बवासीर

(Hæmorrhoids)

अर्श दो तरहका होता है। एक—अन्तर्बलि, जिसके मसे भीतर रहते हैं और दूसरा—वहिर्बलि। इसके मसे बाहर रहते है। ये मसे एक या इससे अधिक एक साथ रह सकते हैं। यह अन्तर्बलि दिखाई नही देती; परन्तु वहिबलि मलद्वारके बाहर रहती है।

किसी-किसी अर्शसे रक्त स्राव होता है। किसी-किसीसे बिलकुल ही रक्त-स्राव नही होता अर्थात् खूनी और बादी बवासीर।

कब्जियत, रातमें जागरण, बहुत मात्रामें चाय, काफी आदि पीना, उग्र चीजें पीना, मिर्च वगैरह मसालेदार चीजें ज्यादा व्यवहार करना, हमेशा बैठे-बैठे दिन काटना वगैरह कारणोंसे अर्श होता है। बहुत ज्यादा दिनोंतक अर्श भोगनेपर भगन्दर हो सकता है।

अर्श रोगमें जलन, टपक, अकड़न, काट फेंकने जैसा दर्द होता है। कितनोंको ही बैठनेमें बहुत तकलीफ होती है। अर्शमें हमेशा कब्जियत रहती है, शायद ही कभी पतले दस्त आते है। कभी-कभी अर्शका रक्तामाशयसे भी भ्रम हो जाता है।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—प्रधान दवा है। बादी या खूनी मसा। अगर पुराने बवासीरमें खुजली हो, तो यह ज्यादा फायदा करता है।

फेरम-फास ६x, ३०x—अकड़न, प्रदाह, चमकीला लाल रक्त-स्राव होता है।

नेट्रम-सल्फ ३x, १२x—पैत्तिक अवस्थाएँ।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—बहुत ही तेज और तीर वेधनेकी तरह दर्दवाला बवासीर।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—बवासीरसे काले रंगका खून निकलना; खूनी बवासीर।

हिचकी
(Hiccough)

यह साधारणतः कोई खास बीमारी नहीं है; बल्कि दूसरे रोगोंका एक भयावह उपसर्ग है। पाकाशयकी गड़बड़ीकी वजहसे भी हिचकी आती है। बच्चोंकी हिचकी वगैरहमें डरनेका कोई कारण नहीं रहता है; यह आप-ही-आप सहजमें ही अच्छी हो जाती है। ये सब हिचकियाँ थोड़ा पानी पी लेनेसे ही अच्छी होती दिखाई देती हैं; परन्तु हैजा, टाइफायड वगैरह रोगोंमें हिचकी आना एक आशंकाजनक उपसर्ग है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—प्रधान दवा है। आक्षेपिक अकड़न मिले उपसर्ग। गर्म पानीके साथ देनेसे तुरन्त फायदा होता है। जबतक लाभ न दिखाई दे, तबतक दस-पन्द्रह मिनटोंके अन्तरसे देना चाहिये।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—कुनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे हिचकी आती हो, तो इससे बहुत फायदा होता है।

आमवात
(Urticaria)

इसमें शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंमें गोल-गोल चिपटे उद्‌भेद पैदा हो जाते हैं। उनमें खुजली होती है—इनका रंग साधारणतः लाल होता है। ये उद्‌भेद कई घंटोंमें ही लोप हो जाते हैं। किसी-किसीको कई दिनोंतक रहते भी देखे गये हैं। इसमें सामान्य ज्वर खुजली, जलन, सुस्ती वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं। किसी-किसी रोगीका सारा अंग फूल जाता है और लाल चकत्ते निकल आते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वर और प्रदाहके लक्षण रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—सारे शरीरमें बेतरह कुटकुटी ; अम्ल, जीभ तर और पतली लेप चढ़ी।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—शारीरिक परिश्रमके बाद सारे शरीरमें तेज खुजली ; सविराम ज्वरके साथ आमवातका हो जाना ; कब्जियत वगैरह लक्षणोंमें लाभदायक है।

एकशिरा (Hydrocele)

अंडकोषमें पानी इकट्ठा होकर उसके बढ़ जानेको एकशिरा कहते हैं। साधारणतः एक ओरका अंडकोष ही फूलता है। किसी-किसीका दोनों ओरका कोष भी बढ़ता है और फूल पड़ता है। इसमें अंडकोषमें दर्द, ज्वर वगैरह उपसर्ग मौजूद रहते है। इस रोगके रोगियोके उपसर्ग अकसर अमावस्या और पूर्णिमाको बढ़ जाते हैं। अकसर लंगोट बांध रखनेसे इसमे बहुत फायदा होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—अंडकोषमें दर्द और पानी इकट्ठा होना ; अंडकोषमें खुजली ।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—अंडकोषमें सूजन और कड़ापन। शिथिल पेशियोंके संकोचनके लिये इसका प्रयोग करना चाहिये ।

सिलिका ६x, ३०x—गंडमालाग्रस्त धातु । नये और पुराने सब तरहके एकशिरामें यह लाभदायक है। अमास्या और पूर्णिमाके समय दर्द, ज्वर वगैरह लक्षण प्रकट होते हैं ।

हिस्टीरिया (Hysteria)

इसे मूर्च्छा-वायु भी कहते हैं। हिस्टीरिया स्वयं कोई रोग नही है ; यह दूसरे रोगसे पैदा होता है। पुरुषोंकी अपेक्षा औरतोंको ही यह बीमारी ज्यादा होती है। जरायुमें गडबडी, डिम्बाशयका प्रदाह, बाधक वगैरह इसमें उत्तेजना पहुँच नेवाले कारण हैं।

कैलि-फास ३x, १२x—प्रधान दवा है। रोगिणी कभी हँसती है, कभी रोती है ; मूर्च्छा आ जाना ; दिमागमें कमजोरी ।

नेट्रम म्यूर ३x, ६x (केलि फासके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये)—विमर्ष भाव, हमेशा मानसिक अवस्था बढ़वी रहती है ; अनियमित ऋतु ।

इन्फ्लुएञ्जा (Influenza)

बहुत बार इन्फ्लुएञ्जा व्यापक रूपमें प्रकट होता है। इसे बहुव्यापक सर्दी भी कहते हैं। इसमें सर्दी-ज्वर, शीत, कम्प, सरमें बहुत ज्यादा भार और दर्द, सुस्ती, अरुची, निद्रालुता, सर्दी, शरीरमें भयानक दर्द, आँखें लाल, रोशनीका सहन न होना, सूखी तंग करनेवाली खाँसी,

नाकका छेद बन्द वगैरह उपसर्ग प्रकट होते हैं। कभी-कभी कई दिनोंमें बिना चिकित्साके ही यह आरोग्य हो जाता है। कभी-कभी इसके साथ न्युमोनिया वगैरह रोग भी होता दिखाई देता है और बीमारी मारात्मक हो जाती है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्थामें, प्रादाहिक अवस्था और बुखार ; सर-दर्द, चेहरा लाल, जोरकी सर्दी प्रभृति लक्षणोंमें लाभ-दायक है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—वातसे पैदा हुआ दर्द ; श्लैष्मिक-झिल्लियोंकी प्रादाहिक अवस्था या सर्दी, सफेद या धुमैला लेपचढ़ी जीभ, गलेमें जखम या अकड़न रहना।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—सरमें दर्द ; पित्तकी अधिकता ; तन्द्रा-भाव ; काली लसदार लेप-चढ़ी जीभ ; पेशाब थोड़ा होना, रोगीका व्याकुल रहना।

कैलि-फास ३x १२x—बहुत सुस्ती, मानसिक और स्नायविक उपसर्गके लक्षणोंमें लाभदायक है।

नेट्रम म्यूर ३x, ३०x—प्राथमिक अवस्था, छींक, पानीकी तरह सर्दी वगैरह लक्षणोंमें लाभ करता है।

अनिद्रा

(Insomnia)

समस्त दिन परिश्रम करनेके बाद नींद हमारी थकनको दूर कर देती है। नींद न होनेपर स्वास्थ्य खराब हो जाता है। अनिद्रा स्वयं कोई रोग नही है, यह दूसरे रोगका लक्षणभर है। मूल कारणपर विचारकर इलाज करनेसे यह अनिद्रा रोग दूर हो जाता है और अच्छी तरह नींद आने लगती है।

अजीर्ण, आलस्यमें समय बिताना, दुश्चिन्ता, मानसिक उत्तेजना, बहुत क्रोध, प्रसन्नता, उत्कंठा, बहुत ज्यादा चाय या काफी पीना वगैरह अनिद्राके उत्तेजक कारण हैं। पागलोंको अकसर नींद नहीं आती।

कैलि-फास ३x, १२x—स्नायविक उपसर्ग; उद्वेग या बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रमसे पैदा हुआ अनिद्रा रोग।

फेरम-फास ३x, ६x—मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे नींद न आना।

सविराम ज्वर

(Intermittent fever)

जो ज्वर अच्छी तरह छूट जाने या आराम हो जानेके बाद फिर हो जाता है, उसको सविराम ज्वर कहते हैं। एक दिन, दो दिन, तीन दिन, सप्ताह या एक पक्षतक नागा देकर आनेवाला जाड़ा बुखार "सविराम ज्वर" की श्रेणीमें आता है। मैलेरिया ज्वर भी सविराम ज्वर है।

जाड़ा, उत्ताप, शरीरमें दाह या जलन, वमन, मिचली, प्यास, सर-दर्द, सुस्ती, औंघाई आती रहना या तन्द्रा वगैरह इसके लक्षण हैं।

मैलेरियाग्रस्त रोगियोंको गुरुपाक द्रव्य और दूध, दही, अंडे, मांस, मछली वगैरह न खाने देना चाहिये।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—इसका सविराम ज्वरकी सभी अवस्थाओंमें प्रयोग किया जा सकता है। पित्त-प्रधान रोगियोंके लिये यह अच्छी दवा है। **दो दिनोंका अन्तर देकर बुखार आनेके** लक्षणमें भी यह लाभ करता है।

फेरम-फास ३x, ६x—बुखार जैसा मालूम होना और अजीण-खाद्य के करना ; सब तरहके सविराम ज्वरकी यह प्रधान दवा है। नेट्रम-सल्फके साथ इसको पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

कैलि-फास ३x, ६x—कमजोरी और बहुत पसीना। **तीन दिनोंका अन्तर देकर बुखार आना।** स्नायविक दुर्बलता, कम्पन आदि।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—जीभ सफेद या धुमैला, सफेद लेप-चढ़ी जीभ रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—तेज प्यास, ज्वरके कारण शरीर सूखा ; क्विनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे बुखार ; माथेमें असह्य दर्द ; पसीना होनेपर आराम मिलना। **सवेरे १०-११ बजनेके समय बुखार।**

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—पैरकी एँडीमें अकड़नके साथ बुखार। **सवेरे ७ बजे पीठमें जाड़ा लगना और बुखार शुरू होना ; ९ बजेके समय तेज जाड़ा और कँपकँपी।**

नेट्रम-फास ३x, ६x—अम्ल रोगवाले रोगियोंको बुखार ; ज्वरके समय किसी-किसीको अम्ल वमन होता है।

कैल्के-फास ६x, ३०x—बच्चोंके सविराम ज्वरमें बीच-बीचमें देना अच्छा है।

कामला या पांडु

(Jaundice)

अच्छी तरह पित्त न निकलनेपर यह बीमारी होती है। इसमें पहले आँखें और हाथ-पैरके तलवे और तलहत्थी तथा नख पीला हो जाता है। इसके बाद सारा शरीर पीला हो जाता है। कब्जियत, कड़ा, सफेद या पीला मल, पीला पेशाब, यकृत-प्रदेशमें और दाहिने कन्धेमें दर्द वगैरह

लक्षण प्रकाशित होते हैं। रोग कड़ा हो जानेपर मल, मूत्र, पसीना वगैरह लगकर बिछावनकी चादर और कपड़े-लत्तेमें भी पीला दाग लगने लगता है। रोगीको सब चीजें पीली मालूम होती है। बच्चोंको यकृतकी बीमारीकी वजहसे जब कामला रोग हो जाता है, तो डरकी बात हो जाती है। यकृतकी बीमारी अजीर्ण; प्रबल उद्वेग, शराब पीना, सर्दी लगना वगैरह कारणोंसे यह रोग होता है।

मद्य, मांस, मछली, अण्डा, दूध खाना मना है। लघुपाक भोजन देना चाहिये।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सर्दी लगनेकी वजहसे पांडु या कामला; यकृत-प्रदेशमें अथवा दाहिने कन्धेमें दर्द, जीभपर सफेद लेप चढ़ी, सफेद या पीला मल।

नेट्रम-सल्फ ३x, १२x—बहुत ज्यादा पढ़ना; चिन्ता या चित्त दुःखित रहनेकी वजहसे पांडु रोग; शरीरका चमड़ा और आँखें पीली हो जाती हैं। इसके व्यवहारसे पित्त निकलना नियंत्रित होता है। कैलि-म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे दिया जा सकता है।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३x—पाकाशयकी सर्दीकी वजहसे पांडु या कामला रोग। तन्द्राभाव और लार बहना; जीभके अगले भागमें छाले और बगलमें थूककी बून्दें या फेनकी तरह लगा रहना; तर, सरस, कभी-कभी सूखी भी रहती है। जीभ विचित्र लेपसे ढकी हुई और कभी-कभी नकशेकी तरह दिखाई देती है।

यकृतकी बीमारियाँ

(Liver, affections of)

यकृत मानव-शरीरकी एक बहुत बड़ी ग्रन्थि है। इसका वजन प्रायः दो सेरके अन्दाजा होता है। यह पेटके दाहिने भागमें पंजरेके नीचे है। पित्त पैदा करना और निकालना इसकी प्रधान क्रिया है। यकृतका

प्रदाह, यकृत कडा और बडा होना ; यकृतमें फोड़ा वगैरह यकृतकी बीमारियाँ हैं। "शिशु-यकृत" एक दुःसाध्य रोग है।

फेरम-फास ३x, ६x—(पहली अवस्था) ज्वर, यकृतमें रक्तकी अधिकता, यकृत प्रदाह ; आँखे और चेहरा लाल।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—अगर यकृतकी क्रिया अच्छी तरह नही होती हो ; भरपूर पित्त न निकलता हो ; मलका रंग फीका हो, कब्जियत रहती हो ; यकृत-प्रदेश और दाहिने कन्धेके नीचेवाले स्थानमें दर्द होता हो। कामला रोग ; शरीर पीला पड जाता है और जीभपर सफेद मैल चढ़ी रहती है।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—पैत्तिक धातु पित्तज रोग-समूह, पीली त्वचा, आँखका गोला पीला, हरी आभा लिये, खड़ियेके रंगका जीभपर लेप ; यकृतमें रक्त जमा हुआ और सुई बेधने जैसा दर्द ; पित्त वमन ; बहुत अधिक अध्ययन या मानसिक विकारकी वजहसे यकृतका ठीक-ठीक क्रिया न होना ; यकृतके स्थानपर दर्द।

नेट्रम-फास ३x, ६x—यकृत कड़ा और बड़ा होना ; बहुमूत्र रोगके साथ यकृतका दोष ; जीभके नीचे पीला लेप-चढ़ा ; अम्लका ज्यादा होना।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—यकृत-प्रदेशमें दर्द, पांडु रोग ; कब्जियत ; गर्दनकी पेशीका पतला पड जाना और कमजोरीके कारण बच्चेका माथा सामनेकी ओर हिला करता है।

कैल्के-सल्फ ३x, ३०x—यकृतमें फोडा, इसके साथ दर्द, कमजोरी और मिचली।

सिलिका ३x, ३०x—यकृतमें फोड़ा ; यकृत-प्रदेशमें टपक और जखम होनेकी तरह दर्द।

कैलि-फास ६x, १२x—यकृतकी बीमारीके साथ स्नायविक अवसाद, बहुत ज्यादा मानसिक श्रम या उद्वेगकी वजहसे पित्तज रोग। इसके साथ नेट्रम-सल्फका पर्यायक्रमसे प्रयोग होता है।

गर्भावस्था और प्रसव-वेदना

(Pregnancy and Labor)

औरतोके ऋतुकालमें (चौथेसे सोलहवे दिनतक ऋतुकाल) पुरुषोंका शुक्र और स्त्रीका डिम्बसार मिलकर गर्भ संचार होता है। साधारणतः २८० दिनोंतक गर्भ-धारणके बाद सन्तान हुआ करती है। इस गर्भकालमें प्रसूतियोको अरुचि, अजीर्ण, आलस्य, मिचली, वमन, कब्जियत या पैर फूलना वगैरह बहुत तरहके उपसर्ग दिखाई देते हैं। प्रसवके बाद भी बहुत-सी प्रसूतियोंको सूतिका ज्वर वगैरह रोग हो जाता है।

कैलि-फास ३x, १२x—प्रसवके पहले लगभग एक महीनेतक यह दवा गर्भिणीको खिलानेपर प्रसवकी क्रिया सहजमें ही हो जाती है। स्नायविक उपसर्ग, मृदु-प्रकृतिकी प्रसव-वेदना, कॉखने या चेष्टा करनेपर भी सन्तान प्रसव न होना; सौरी-बाई या उन्माद रोग; जरायुका मुँह कड़ा, प्रसूति बेचैन रहती है और रोया करती है। सूतिकोन्मादमें भी इससे फायदा होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—(गर्भावस्थामें) पाकाशयकी बीमारी; खायी हुई चीज अनपचकी अवस्थामें के कर देना। प्रसवके बादका दर्द; मिचली; स्तनके प्रदाहकी पहली अवस्थामें भी इससे फायदा होता है। सूतिका ज्वरमें "कैलि-फास" के साथ पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—सूतिकाक्षेप अथवा खींचन, प्रसवका दर्द भी अकडनकी तरह; अकड़नमें, गर्म पानीके साथ बार-बार प्रयोग करना चाहिये।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सूतिका ज्वर, स्राव, प्रदाह, सवेरेके समय मिचली ; श्लेष्मा-वमन । गर्भिणीके प्रातर्वमनमें लाभदायक है । सफेद बलगम मिली कै होती है ।

कैल्के-फास ६x, ३०x—स्तन कड़ा हो जाता है और उसमें जलन होती है, स्तनका दूध खराब हो जाता है । बच्चा दूध पीना नहीं चाहता ; बच्चेको दूध पिलानेवाली अवस्थामें ऋतु हो जाये, तो भी यह फायदा करता है । गर्भावस्थामे सारे शरीरकी दुर्बलता ।

कैल्के-सल्फ ६x, १२x—जरायुका अपनी जगहसे हट जाना ; गर्भ स्राव ; जरायुकी संकोचन-शक्तिकी कमजोरी ; स्तनमें दूधकी कमी ; स्तनकी गांठ कड़ी हो जाना ।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—मुँहका स्वाद तीता ; गर्भावस्थामें पित्तकी अधिकता ; सवेरेके वक्त पित्तकी कै ; पैर फूलना और शिराओंका प्रदाह ।

श्वेत-प्रदर
(Leucorrhœa)

किसी-किसी स्त्रीके जरायुसे सफेद रंगका गाढ़ा और पानीकी तरह पतला स्राव निकला करता है । इसके बाद यह स्राव पीली और हरी आभा लिये कितने ही रंगोंका भी हो सकता है । इस स्रावसे कभी-कभी जलन पैदा हो जाती हैं और खाल उधड़ने लगती है । रोगिणी कमजोर और उदास बनी रहती है । हाथ-पैरोंमें जलन होती है, सरमें चक्कर आता है और खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह पचती नहीं है । इसके साथ ही कितनोंको ही मासिक ऋतु-स्रावकी भी गड़बड़ी दिखाई देती है ।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—गाढ़ा दूधकी तरह स्राव, इसमें किसी तरहकी जलन या तकलीफ नहीं रहती ।

कैलि-सल्फ ३x, १२x—पीले रंगका पानीकी तरह स्राव ; स्राव कभी हरा, कभी सब्ज़ । यह लगकर भगोष्ठमें जलन हो जाती है और खाल उधड़ जाती है ।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—जलन पैदा करनेवाला पानीकी तरह स्राव । सवेरेके वक्त सरमें दर्द ; रोगिणी आँसू बहाती है, रोती है और विषादमें डूबी रहती है ; समझती है कि यह बीमारी अच्छी न होगी ।

कैल्के-फास ३x, ३०x—रोगकी सभी अवस्थाओमें बलकारक दवाके रूपमें इसका व्यवहार किया जा सकता है । स्राव गाढ़ा और परिष्कार, अंडेके सफेद अंशकी तरह, ऋतुके बाद ज्यादा हो जाता है, इन्द्रिय-परितृप्तिकी प्रवल इच्छा बनी रहती है ।

नेट्रम-फास ३x, ६x—गाढ़ा या पानीकी तरह अथवा शहदके रंगका पतला स्राव ; चमकीला पीला रंग, जहाँ लगता है, वहाँकी त्वचा क्षय कर देता है ; खट्टी गन्ध लिये स्राव होता है ।

कैलि-फास ६x, १२x—जलन पैदा करनेवाला और त्वचाको क्षय करनेवाला स्राव ; स्नायविक दुर्बलता ; स्नायविक प्रकृतिकी रोगियोंके लिये ज्यादा उपयोगी है ।

साइलिसिया ३x, ३०x—बहुत ज्यादा स्राव ; कमजोर और गंडमालाग्रस्त औरतोंको ऋतुके बदले प्रदरका स्राव होनेके लक्षणमें इसका प्रयोग होता है ।

कटिवात (Lumbago)

इसमें कटिदेश या कमरकी मांस-पेशीपर रोगका हमला होता है । कमरमें वातका तेज दर्द रहता है ; हिलने-डुलने या करवट बदलने या उठनेमें तकलीफ होती है । यह बीमारी किसी-किसीको बँधे समयपर

हुआ करती है और किसी-किसीको बराबर ही लगी रहती है। इस बीमारीके साथ बहुत बार बुखार रहता भी दिखाई देता है। गर्दनका अकड़ जाना या गलेका वात भी इसी श्रेणीमे आ जाता है। इसलिये गर्दनकी अकड़न और कटिवातकी चिकित्सा एक ही प्रकारकी है।

फेरम-फास ३x, ६x—यह दर्द और प्रदाहकी प्रधान दवा है। रोगवाली जगहपर लाली, सूजन आदि हो, तो यह बहुत फायदा करता है।

कैल्के-फास ३x, ६x—पीठमें दर्द ; खासकर सवेरेके समय यह दर्द ज्यादा होती है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—कड़ी शय्यापर सोनेसे दर्द घटता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—कुचल जानेकी तरह दर्द, पीठमें कमजोरी कड़ी शय्यापर सोनेसे आराम मालूम होना।

छोटी माता या खसरा
(Measles)

यह साधारणतः बच्चोंकी बीमारी है। इसमें डरनेकी कोई विशेष बात नहीं है। दो-तीन दिनोंमें इसके दाने आप-ही-आप गायब हो जाते हैं ; परन्तु इसके साथ सर्दी या पेटकी बीमारी रहनेपर या गोटियाँ बैठ जानेपर डरकी बात पैदा हो जाती है। इसलिये, इस बातपर ध्यान रखना चाहिये कि सर्दी न लगने पाये। पथ्यपर भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था ; इस अवस्थामें बुखार और खूनकी अधिकता रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था ; खाँसी ; शारीरिक ग्रन्थियोंका फूलना।

कैलि-सल्फ ३x, १२x—दाने बैठ जानेपर।

मस्तिष्क-आवरक-झिल्ली-प्रदाह

(Meningitis)

सान्निपातिक ज्वर आदिके दाने अगर अच्छी तरह बाहर नही निकलते या बैठ जाते हैं, बहुत गर्मी या बहुत सर्दी लगकर मस्तिष्कमें उत्तेजना पैदा हो जाती है या सरमें चोट, प्रबल मानसिक आवेग, बहुत ज्यादा परिश्रम, संक्रामक बीमारियाँ, बच्चोंको दाँत निकलना वगैरह रोगोंके कारण मस्तिष्क-आवरक-झिल्ली-प्रदाह पैदा हो सकता है। बच्चोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है। तेज बुखार, सरमें दर्द, विकार, तन्द्राभाव, सरमें रक्त-संचय, आँख-मुँहका लाल हो जाना, शून्य-दृष्टि, अकड़न, बहुत तेज नाडी, **एकाएक जोरसे चिल्ला उठना** वगैरह इस बीमारीके लक्षण हैं।

नेट्रम-सल्फ ६x, १२x—इसकी प्रधान दवा है। मस्तिष्कमें तेज दर्द, माथेमें खूनका अधिक होना, माथेमें पीछेकी ओर दर्द, भार मालूम होना, चूर-चूर कर देनेकी तरह दर्द। फेरम-फासके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करनेपर ज्यादा फायदा होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—सब तरहके मस्तिष्क-प्रदाहकी पहली अवस्थामें; मस्तिष्क-घटित ज्वर; नाड़ी तेज रहना; प्रलाप प्रभृति लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—रोगकी दूसरी अवस्थामें रस पैदा हो जाना और रोगवाली जगहमें प्रवेश करना। फेरम-फासके वाद या उसके साथ पर्यायक्रमसे इसके व्यवहारसे ज्यादा फायदा होता है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—अकड़न या आक्षेपवाले लक्षण मौजूद रहना; सर एक ओर झूल पड़ता है; दृष्टि टेढ़ी हो जाती है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—बीच-बीचमें यह दवा खिलाना अच्छा है। मस्तिष्कोदक अर्थात् माथेमें जल-संचय होनेपर इसके प्रयोगसे लाभ होता है।

अतिरजः
(Menorrhagia)

नियमित समयपर औरतोंको महीनेमें एक बार रजः-स्राव होता है और तीन-चार दिनोंतक स्राव होकर बन्द हो जाता है। इस स्रावका परिमाण साधारणतः आध पावसे लेकर तीन छटाकतक होता है; परन्तु इसका कोई बँधा नियम नहीं है। किसी-किसीको दो-चार दिन आगे-पीछे भी हुआ करता है। किसी-किसीको एक या दो दिनोंतक स्राव होकर ही बन्द हो जाता है। परिमाणमें भी सबको एक समान ही नहीं होता। यह स्थान, काल और पात्र तथा अपनी परिपार्श्विक अवस्थाके भेदसे विभिन्न रूपोंमें हुआ करता है। इस साधारण परिवर्त्तन या गड़बड़ीसे कुछ अधिक आता-जाता नहीं है; परन्तु इसके बदले किसीको यदि महीनेमें दो बार या इससे भी अधिक बार ज्यादा परिमाणमें ऋतुस्राव हो या यदि किसीको बहुत दिनोंतक बहुत अधिक रजःस्राव हुआ करे, तो उसे ही अतिरजःकी बीमारी कहते हैं। पीठ, कमर, सर और पेटमें दर्द, आलस्य, अवसाद, खूनकी वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन, उपदंश-सम्बन्धी धातु-दोष, जरायुका अपने स्थानसे हटा रहना, बहुत चिन्ता वगैरह इसके कारण हैं।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—यह जरायुमें संकोचन पैदा करता है; प्रसवके दर्दकी तरह बहुत ज्यादा दर्द; जरायुका अपने स्थानसे हट जाना; दर्दसे ऐसा मालूम होता है, मानो पेटके भीतरकी सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी।

फेरम-फास ३x, ६x—चमकीला लाल रक्त, यह खून बहुत जल्द जम जाता है। यह जरायुमें रक्तकी अधिकता होना बन्द कर देता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—बलकारक दवाके रूपमें दूसरी चुनी हुई दवाके साथ समय-समयपर इसे सेवन करना चाहिये।

आर्त्तव व्याधि
(Disorder of Menses)

यह अतिरजः, अनुकल्प रजः, बाधक स्वल्परजः, रजोरोध, पहली बार देरसे ऋतु होना वगैरह सब तरहकी ऋतु-सम्बन्धी बीमारियोंका साधारण नाम है। आर्त्तव-व्याधि कहनेसे ही इसका कोई-न-कोई रूप समझा जाता है।

चिकित्सा

फेरम फास ३x, ६x—तकलीफसे होनेवाला ऋतु, चेहरा लाल हो जाना, नाड़ी तेज, स्राव चमकीला लाल रंगका और ज़ल्द ही जम जानेवाला, ऋतुके समय खायी हुई चीजकी कै हो जाना। यदि हर बार ऋतुके समय ऐसा ही होता हो, तो ऋतुके कई दिन पहलेसे प्रतिषेधकके रूपमें इसका व्यवहार किया जा सकता है।

कैलि-फास ६x, १२x—अनियमित ऋतु, खासकर कमजोर, दुबली-पतली और क्रोधी स्वभाववाली, जरा-सी बातमें रो देनेवाली अभिमानिनी औरतोंके लिये यह बहुत ही लाभदायक है। स्राव गाढ़ा, लाल रंगका अथवा काली आभा लिये या कभी-कभी बदबूदार स्राव भी होता है। दुबली-पतली औरतोको मासिक ऋतुस्रावके समय कष्ट; रुका हुआ ऋतु; हर बार देरसे ऋतु होता है; मानसिक सुस्ती; स्नायविक दुर्बलता।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सर्दी लगकर रजका रुक जाना या बहुत विलम्बसे महीना होना, बार-बार और जल्दी-जल्दी ऋतु होना ; रक्त दाना-दाना और काला, बहुत दिनोंतक स्राव होता हो ।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—पतला पानीकी तरह स्राव ; फीका रंग ; किशोरी स्त्रियोंको यथासमय ऋतुस्राव न होना अथवा थोडा रजःस्राव होना, इसके साथ ही तन्द्राका भाव ; विषाद ; सरमें दर्द ; नियमित समयके पहले ही बहुत ज्यादा रजःस्राव ; अच्छी तरह नींद न आना ; चोट ; डाकुओंके सपने देखना प्रभृति लखणोंमें उपयोगी है ।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—ऋतु शूल, कष्टदायक रजःस्राव ; स्राव होनेके पहले भयानक यंत्रणा ; **दाहिनी ओर दर्द अधिक** ; थोडा गर्म प्रयोगसे **दर्दका घटना** । दर्दके साथ थोडा रजःस्राव होनेपर, गर्म पानीके साथ मैग फास सेवन करनेसे तकलीफ घट जाती है और स्रावका परिमाण भी बढ जाता है । नियमित समयके पहले ही रजःस्राव ; स्राव काला और लसदार तन्तु मिला हुआ ; वयःसन्धिके समयकी ऋतु सम्बन्धी गडबडी ।

कैल्केरिया-फास ३x, ३०x—ऋतुशूलमें यदि "मैग्नेशिया-फास" से लाभ न हो, तो "कैल्केरिया-फास" का प्रयोग करना चाहिये । जिनमें खून थोडा है, ऐसी औरतोंके लिये और किशोरियोंके अनियमित ऋतुमें बीच-बीचमें इसे देना अच्छा है । किशोरियोंको जल्दी ऋतु होना और बडी उमरवालियोंको देरसे ऋतु होना । ऋतुके पहले पुरुष-सगमकी बहुत अधिक इच्छा, ऋतुके बाद बहुत कमजोरी । रोगिणी इधर-उधर घूमना नही चाहती, उसे केवल बैठे रहनेकी इच्छा होती है ।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—बहुत ज्यादा रजःस्राव ; प्रसवके दर्दकी तरह दर्दके साथ बहुत ज्यादा रजःस्राव । "कैलि-फास" के साथ

पर्यायक्रमसे देनेपर, जरायुकी संकोचन-शक्ति बढ़ती है और खून जाना घट जाता।

कैलि-सल्फ ३x, १२x—बहुत देरसे और बहुत थोड़ा ऋतु ; पेटमे भार मालूम होना ; जीभपर पीली मैल चढ़ी रहती है।

नेट्रम फास ३x, ६x—खट्टी गन्ध लिये स्राव ; जहाँ स्राव लगता है, वही सफेद दाग पड जाता है। तीसरे पहर सरमें दर्द, घुटनेमें दर्द।

सिलिका ३x, ६x—तेज गन्धवाला स्राव, कब्जियत, ठंडा भाव, बहुत रजःस्राव होना, कामोन्माद।

वमन (Vomiting)

यह स्वयं कोई रोग नही है ; दूसरे रोगका लक्षणभर है। अजीर्ण, कृमि, हैजा, खाँसी, सरमें भार, पित्तकी अधिकता, सवारीमें घूमना, ऋतुके समय और गर्भावस्थामें भी वमन हुआ करता है ; अजीर्ण होनेपर वमनसे लाभ पहुँचता है। गर्भावस्थामें साधारणतः सवेरेके वक्त मिचली या कै हुआ करती है। यह आराम होनेमें देर लगती है।

फेरम-फास ३x, ६x—खायी हुई चीजकी कै हो जाना ; खट्टे पानीकी तरह वमन ; ऋतुके समय वमन ; कैके साथ सरमें दर्द ; चमकीले लाल खूनकी कै होती है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सफेद गाढ़े बलगमकी कै होना ; जीभपर सफेद मैल, काले खूनकी कै होना।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—खट्टी कै ; फेन-भरा बलगम निकलना ; भूख है पर रुचि नहीं है।

कैलि-फास ३x, १२x—काले रंगकी कै।

नेट्रम-फास ३x, ६x—खट्टी कै ; जीभपर सलवट पड़ जाना।

नेट्रम-सल्फ ३x, १२x—पित्तकी कै ; मुँहका स्वाद तीता रहता है और हमेशा ही मिचलीका भाव बना रहता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—बच्चोंका वमन ; खायी हुई चीज न पचनेकी वजहसे वमन होना ; कोई जखम निकलनेके समय वमन होना।

मैग्नेशिया-फास ३x, ३०x—कष्टदायक वमन ; पेटमें खूब दर्द होना।

कैल्के-फ्लुओर ६x, १२x—खायी हुई चीज कै हो जाना ; दाँत निकलनेके समय कै होना ; "फेरम-फास" से लाभ न होनेपर इसका प्रयोग होता है।

कानकी जड़ फूलना
(Mumps)

इसमें कानके नीचेकी ग्रन्थि फूलती है और उसमें प्रदाह पैदा हो जाता है। भूख न लगना, बुखार, कमजोरी, मिचली, प्रलाप वगैरह इसके लक्षण हैं। इसकी वजहसे गला और गलेकी ग्रन्थिमें प्रदाह पैदा हो जा सकता है। सान्निपातिक ज्वर या टायफायड ज्वरमें किसी-किसीके कानकी जड़ फूल जाया करती है। इसमें सर्दी लगनेसे बहुत हानि होती है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्थामें कानकी जड़ फूली, प्रदाह बुखार, दर्द वगैरह रहनेपर।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—कानकी जड़ फूली, जीभपर सफेद लेप-चढ़ा कानमें दर्द, कब्जियत।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—बहुत लार बहना ; अंडकोष फूल जानेपर भी इसके प्रयोगसे लाभ होता है। "कैलि-म्यूर" के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर बहुत ज्यादा फायदा होता है।

स्नायुशूल (Neuralgia)

यह स्नायु-विधानका एक विशेष रोग है। यह शरीरके कितने ही स्थानोंके स्नायुपर आक्रमण कर सकता है। यह दर्द इधर-उधर घूमनेवाला होता है और एकाएक पैदा होता है तथा एकाएक ही गायब हो जाता है। सर्दी लगना, सीड़-भरी या तर जगहमें रहना, चोट लगना, बहुत ज्यादा परिश्रम, चिन्ता, थोड़ा भोजन, अर्बुद, बहुमूत्र आदि कारणोंसे यह रोग पैदा होता है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—यह तेज स्नायुशूलकी एक प्रधान दवा है। स्नायु-प्रदाह ; कुछ चबाने या हिलने-डुलनेसे ही दर्दका बढना। **रातमें तकलीफ बढ़ जाती है, दिनके समय कम रहती है।** गर्मीसे तकलीफ घटती है। दाहिने कन्धेपर रोगका आक्रमण होनेपर इससे खूब फायदा होता है।

कैलि-फास ६x, १२x—थोडे खूनवाला रोगी, जो सहजमें ही विचलित और उत्तेजित हो जाते हैं। उदास भाव और दुर्बलताके साथ स्नायु-शूल। **अकेले रहनेपर बढ़ना ; मन प्रसन्न रहनेपर आराम मालूम होना।**

फेरम-फास ३x, ६x—प्रदाहिक अवस्थाकी यह बढ़िया दवा है। बुखार लाल आभा लिये चेहरा ; ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें कोई कील ठोक रहा है और इसी वजहसे तेज दर्द होता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—अगर रोग पुराना आकार धारण कर ले ; रातमें बीमारी बढ़ जाती हो।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—बहुत ज्यादा लार बहना या इच्छा न रहनेपर भी आँसू निकल पड़ना ; सवेरेके वक्त रोगका बढ़ना आदि लक्षणोंमें।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सफेद और धुमैले रंगकी जीभके साथ तेज दर्द रहनेपर यह लाभदायक है।

स्नायविक दौर्बल्य
(Neurasthenia)

दुश्चिन्ता, थोडा या ज्यादा भोजन, बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन, स्वप्नदोष, अजीर्ण वगैरह कारणोसे यह बीमारी पैदा होती है। सरमें चक्कर आता है, छाती धडकती है, स्मरण-शक्ति घट जाती है। शारीरिक और मानसिक सुस्ती, नीद न आना, उदास और सुस्त भाव, कब्जियत, अच्छी तरह हजम न होना, दुबलापन या खूनकी कमी वगैरह इसके लक्षण हैं। इसके रोगीकी किसी काममें मन नही लगता, पढने-लिखनेपर सरमें दर्द हो जाता है। आँखके सामने काले बिन्दु उडते दिखाई देते है। जरा-सी उत्तेजनासे ही कलेजा हिलने लगता है।

कैलि-फास ६x, १२x—इस रोगकी प्रधान दवा है। उन्मत्तता और निरुत्साह; मेरुदंडकी प्रदाह; उद्वेग; बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रमकी वजहसे मस्तिष्ककी कमजोरी।

कैल्के-फास ३x, ३०x—अवसन्न करनेवाली बीमारियोके बाद परिपोपण क्रिया पूरी-पूरी न होनेपर इसके प्रयोगसे फायदा होता है।

नेट्रम म्यूर ६x, ३०x—पतला पानीकी तरह रक्त; हरित् रोग; कब्जके साथ चित्तकी उन्मत्तता; निरुत्साह; भविष्यके विषयमें हताश; मस्तिष्कमें क्लान्ति मालूम होना।

नेट्रम-सल्फ ६x, ३०x—पित्त-विकारके साथ स्नायविक अवसाद; इसका रोगी क्रोधी रहता है। सवेरेके वक्त रोग बढ़ता है।

पक्षाघात (Paralysis)

यह स्नायु-विधानकी बीमारी है। सारे शरीरका या आधे अंगका या किसी खास अंगका भी पक्षाघात (लकवा मारना) हो सकता है। किसी-किसीको काँपनेवाला पक्षाघात होता है।

कैलि-फास ३x, ३०x—इसकी प्रधान दवा है। स्वरयन्त्रका पक्षाघात, गति स्नायुका पक्षाघात, स्नायविक दुर्बलताके कारण सुस्ती ; पलकोंका गिर जाना ; कमजोरीके कारण पक्षाघात ; मूत्राशयका पक्षाघात।

मैग्नेशिया-फास ३x, ३०x—शीतलता ; सुन्न भाव ; शरीरमें इधर-उधर घूमने-फिरनेवाला पक्षाघात ; कम्पके साथ पक्षाघात ; हाथका आप ही-आप काँपने लगना।

कैल्केरिया-फास ३x, ३०x—विसर्प और धीरे-धीरे सारे शरीरमें फैलनेवाला पक्षाघात।

"साइलिसिया" और "नेट्रम-फास" भी समय-समयपर आवश्यक होती है।

अंत्रावरण-प्रदाह
(Peritonitis)

इसमें पेटमें बहुत दर्द रहता है। पेटपर हाथ नहीं रखा जाता। इतनी तकलीफ रहती है कि पेटपर कपड़ा रखना भी सहन नहीं होता। रोगी चित्त-पड़ा रहता है और दर्दसे चिल्लाया करता है। इसमें प्रदाहकी वजहसे बुखार, तेज नाड़ी, जीभपर मैल चढ़ी, बदनकी गर्मी बहुत ज्यादा कब्जियत वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं। चोट, बीज, काँटा वगैरह

कड़ी चीज निगल जाना, मल रुका रहना वगैरह कारणोसे यह बीमारी होता है।

फेरम-फास ३x, ६x—स्नायविक अवस्थाकी प्रधान दवा है। प्रदाह, दर्द, ज्वर प्रभृति लक्षण रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, पेट फूलना, सफेद लेप-चढ़ी जीभ। "फेरम-फास" के साथ पर्यायक्रमसे इसका प्रयोग करना चाहिये।

कैलि-सल्फ—प्रदाहके साथ बहुत अधिक आध्मान और दर्द, पेटका चमड़ा खिचा रहना।

वक्षावरक-झिल्ली-प्रदाह
(Pleurisy)

साधारणतः सर्दी लगकर यह बीमारी होती है। चोट या झटका लगनेसे भी हो सकती है। इसमें छातीमें दर्द होता है। इतने जोरका दर्द होता है कि श्वास-प्रश्वासमें भी दर्द मालूम होता है। शीत, ज्वर, नाडी भारी, तेज और कठिन, सामान्य सूखी खाँसी वगैरह इसके लक्षण हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वरका लक्षण ; पहली अवस्थामें सूखी खाँसी और सुई वेधनेकी तरह दर्द।

कैलि-म्यूर ३x ६x—दूसरी अवस्था, देह-तन्तुओसे रस बहना (Plastic exudation)। बलगम गाढ़ा, लसदार और सफेद लेप-चढ़ी जीभ।

कैल्के-सल्फ ६x, १२x—तीसरी अवस्था। वक्ष-गह्वरमें पीव पैदा हो जानेपर इसका प्रयोग किया जाता है।

फेफड़ेका प्रदाह
(Pneumonia)

सर्दी लगना ही यह रोग होनेका प्रधान कारण है। चोट वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो सकती है। इसमें बुखार, शीत, बार-बार जोरसे साँस लेना, सूखी और तकलीफ देनेवाली खाँसी, परन्तु पहली अवस्थामें बलगम नहीं निकलता। इसके बाद लाल जंगकी तरह या लाल रंगका बलगम निकला करता है। छाती चिपकी रहती है, बोलनेसे ही खाँसी बढ़ जाती है। नाड़ी पहले-पहल बहुत तेज और पूर्ण रहती है; परन्तु धीरे-धीरे वह द्रुत, क्षीण और अनियमित हो जाती है। भूख न लगना; जीभ सूखी और काली, रोगी करवट नहीं बदल सकता; श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है।

फेरम-फास ३x, ६x—रोगकी पहली अवस्था, ज्वर, दर्द, खूनकी ज्यादती; नयी सूखी खाँसी, बहुत कम बलगम निकलना, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट; तेज नाड़ी; गलेमें सुरसुरी; श्लेष्मामें रक्तके कण दिखाई देना।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था; फेफड़ेसे तन्तुमय रस निकलना। ज्वर ज्यादा रहे तो "फेरम-फास" के साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

कैलि-सल्फ ६x, १२x—श्लेष्मा सरल, घरघर शब्द छातीमें होना, पीले रंगका या पानीकी तरह पतला श्लेष्मा निकलना। बलगम गलेमें जाकर फिर नीचे उतर जाता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—पतला, साफ फेन-भरा श्लेष्मा, सुरसुरी जैसी खाँसी, जीभके बलगममें फेन-भरे थूकके बुलबुले; खाँसीके साथ माथेमें तेज दर्द रहता है।

कैल्के-सल्फ ३x, ३०x—बलगम पीव-भरा रहता है। न्युमोनियाकी तीसरी अवस्थामें पीव और रक्त-मिला बलगम निकलना।

सूतिका-ज्वर
(Puerperal Fever)

प्रसवके दो-तीन दिन बाद ही अकसर यह विषैला बुखार आरम्भ होता है। इसके बाद रोग क्रमशः भयानक आकार धारण कर लेता है। तेज बुखार, सरमें दर्द, कमजोर और तेज नाडी, पेटमे दर्द, बदबूदार स्राव, बेचैनी, उत्तेजित भावके साथ ही-साथ कमजोरी वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं। सब तरहका स्राव और स्तनका दूध आदि बन्द हो जाता है। पेट फूलना, विकारके लक्षण, पतले दस्त आना वगैरह लक्षण भी कभी-कभी दिखाई देते हैं। इसके बाद फूलका कुछ अंश जरायुके भीतर रहकर सड जानेके कारण या जरायुमें किसी तरहकी चोट लगनेकी वजहसे यह बीमारी हुआ करती है। सर्दी लग जानेकी वजहसे भी यह बीमारी हो सकती है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था ; ज्वर, कम्प, सर-दर्द, नाड़ी मोटी और तेज, जरायु स्थानमें दर्द, प्यास प्रभृति लक्षण रहते हैं।

नेट्रम म्यूर ६x, ३०x—प्रधान दवा है। सुस्ती, धीमा प्रलाप, जीभ सूखी और काली, आच्छन्न-भाव।

कैलि-फास ६x, १२x—प्रलाप ; सडनेवाली अवस्थाके-उपसर्ग ; सुस्ती, स्नायविक उत्तेजना, स्रावमें बदबू, भूरे रंगकी जीभ ; पेशाब और स्रावमें दुर्गन्ध।

कैल्के-फास ३x, ३०x—रोगावस्थामे अन्यान्य चुनी हुई दवाओंके साथ समय-समयपर, सेवन करना चाहिये और रोग आराम होनेकी ओर बढे, तब इस दवाका नियमित सेवन करना चाहिये।

कैलि-म्यूर ३x, ३०x—प्रसवका स्राव और स्तनका दूध गायब हो जाना ; पेट फूला, सफेद लेप-चढ़ी जीभ ।

वात (Rheumatism)

साधारणतः खूनमें क्षार (Alkaline salts) का भाग घट जानेपर और अम्लका भाग ज्यादा बढ़ जानेपर वात-रोग होता है । एकाएक पसीना रुक जाना, सीडभरी या सर्द जगहमें रहना, गीला कपडा पहनना, पानीमें भीगना वगैरह इस रोगमें उत्तेजना पहुँचानेवाले कारण है । वातमें सन्धि या पेशियोंपर बीमारीका हमला होता है । नये वातमें बहुत दर्द, रोगवाली जगह खुली, गर्म और लाल हो जा सकती है । इसमें हमेशा बुखार, बेचैनी तेज नाडी और शीत या दाह रहती है । पुराने वातमें, थोडे-बहुत इन सब लक्षणोके साथ बीमारीवाली जगह अकडी हुई और सुन्न जैसी मालूम होती है बुखार अक्सर नहीं रहता । वात-रोगमें पाचन-क्रियाकी गडबडी भी दिखाई दे सकती है ।

फेरम फास ३x, ६x—आरम्भकी अवस्था, वातसे पैदा हुआ बुखार, नया आक्रमण ; सन्धि-वात और पेशी-वात, कटिवात, तर जगहमें रहनेके कारण वात, हिलने-डुलनेपर रोगका बढ़ना लक्षण रहनेपर ।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सूजनके साथ नया या पुराना वात, जीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ । पुरानी वात-व्याधि रोगवाले स्थानमें सूजन ; हिलने-डुलनेपर दर्दका बढना ।

नेट्रम-फास ३x, ६x—नया या पुराना वात रोग ; ग्रन्थियोंपर हमला होनेपर ; ग्रन्थि-वात ; अम्लके उपसर्ग ; सन्धि-स्थानका वात । खट्टी गन्ध लिये बहुत पसीना होना ; जीभपर मक्खनकी तरह मैल ।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—सन्धि-स्थानोका वात ; अकडन-जैसा तेज दर्द । वात-ज्वरके साथ रोगवाले स्थानमे धीमा दर्द ।

नेट्रम-सल्फ ३x, १२x—पित्तसे पैदा हुए उपसर्ग ; ग्रन्थि-वातकी प्रधान दवा है। पुरानी वात व्याधिकी भी यह बढ़िया दवा है।

कैलि फास ३x, १२x—वातके साथ बीमारीवाली जगह कड़ी हो जाना ; हिलने-डुलनेके आरम्भमें दर्द ; दो पहरके पहले दर्द बढ़ना।

कैलि-सल्फ ३x, ६x—इधर-उधर घूमनेवाला वातका दर्द, शामके समय और गलेमें दर्द बढ़ना ; ठंडी और खुली हवामें घटना ; पीठ, गलेके पीछेका जोड और अंग-प्रत्यंगमें दर्द।

आरक्त ज्वर

(Scarlet Fever)

छोटी माता वगैरहके उद्भेद या उद्भेदवाले बुखारकी तरह "आरक्त "ज्वर" भी एक तरहका उद्भेदवाला बुखार ही है। यह एक तरहकी फैलनेवाली बीमारी है और अकसर व्यापक रूपमें दिखाई देती है। यह इस देशमें शायद ही कभी होती है। गलेमें जखम, शीत, सुस्ती वगैरह इसके लक्षण है। बुखार छुट जानेके एक या दो दिन बाद लाल रंगकी फुन्सियाँ शरीरपर दिखाई देने लगती हैं ; धीरे-धीरे ये फुन्सियाँ बड़ी होती जाती हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था ; चेहरा लाल, ज्वरकी तेजी, शरीरपर लाल दाने।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्थाकी प्रधान दवा है।

कैलि-सल्फ ६x, १२x—एकाएक दाने बैठ जानेपर इसके प्रयोगसे बहुत लाभ होता है।

कैलि फास ६x, १२x—तेज या सांघातिक उपसर्ग ; बहुत कमजोरी, रोगी एकदम सुस्त हो पड़ता है।

कटि-स्नायुवात
(Sciatica)

इसमें उरुके पिछले भागके स्नायुओंपर बीमारीका हमला होता है। यह वात घुटने या पैरतक फैल जा सकता है। असह्य यातना, चलनेमें तकलीफ होना, बीमारीवाली जगह अकड़ी वगैरह इसके लक्षण हैं।

जिससे स्नायु सब उत्तेजित हो पड़े, ऐसा काम एकदम त्याग देना चाहिये। दुश्चिन्ता, क्रोध करना वगैरह भी छोड़ देना चाहिये। सवेरे उठना, सवेरेका घूमना आदि, हल्का व्यायाम, पुष्ट करनेवाला हल्का भोजन, मन प्रफुल्ल रखना इत्यादि बीमारीके आराम करनेमें सहायक हैं। रोगवाली जगहपर फ्लैनेल बांध रखना अच्छा है।

कैलि-फास ३x, ६x—प्रधान दवा है। दर्द जंघेके पिछले भागमें होकर जानु-सन्धितक चला जाता है।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—गाउट या वातके लक्षणमें यह कैलि-फासके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करना चाहिये।

मैग्नेशिय-फास ३x, ६x—आक्षेपिक तीव्र असहनीय वेदना (खूब गरम पानीके साथ सेवन करना चाहिये)।

कैल्के-फास ३x, ६x—मैग्नेशिया-फाससे फायदा न होनेपर पर्यायक्रमसे इसका व्यवहार करना चाहिये।

फेरम-फास ३x, ६x—सुस्पष्ट ज्वरका लक्षण मौजूद रहनेपर यह लाभदायक है।

गल-क्षत
(Sore-throat)

सर्दी लगना, पानीमें भीगना, सर्दी, ऊँचे स्वरसे बोलना, गाना या वक्तृता देना वगैरह कारणोंसे गल-कोषका प्रदाह या गल-क्षत हुआ करता है। पाचन-क्रियाका बिगड़ना, गलक्षतवाले रोगीका संसर्ग या साथ रहना इत्यादि कारणोसे यह रोग हो सकता है।

गलेमें दर्द, शीतका भाव, सिहरावन लगा करना, बुखार; गलेकी ग्रन्थिका प्रदाह, बोलने या कोई चीज निगलनेमें बहुत तकलीफ, लार बहना वगैरह इसके लक्षण हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रदाहकी पहली अवस्थामें बुखार, सरमें दर्द, गलेमें दर्द।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—फेरम-फाससे आराम न होनेपर। गलेके भीतर सूखापन अथवा फेन-भरे सफेद श्लेष्मासे पूर्ण, जीभके ऊपर फेन-भरे लारके बुलबुले।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रदाहकी दूसरी अवस्था, गलेकी गांठोका फूलना, सफेद रंगका रस बहना, जीभपर सफेद लेप-चढ़ा, गलेमें घाव और उसके ऊपर सफेद दाग।

कैल्के-फास ३x, ३०x—सफेद श्लेष्मा-स्राव ; गलेमें सुरसुरी और पुराना गलेका जखम ; जखममें बदबू होनेपर इसका प्रयोग होता है।

कैल्के-सल्फ ३x, ३०x—पीवका स्राव ; कभी कभी खून-मिला पीव भी आता है।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—कुछ निगलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ अटक गया है। गलेमें दर्द होता हो, सर्दी लगकर बीमारी होना।

नेट्रम-फास ३x, १२x—कुछ निगलनेके समय मानो साँस रुकी जाती है।

शुक्र-क्षरण
(Spermatorrhœa)

अस्वाभाविक उपायोसे इन्द्रिय-परितृप्ति या बहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचलनकी वजहसे धीरे-धीरे वीर्य धारणकी ताकत घट जाती है, उस समय वीर्य पतला हो जाता है और थोड़ी ही उत्तेजनासे या स्वप्नावस्थामें वीर्यपात हुआ करता है। यही "धातु-दौर्बल्य", "शुक्रमेह" या "स्वप्न-दोष" के नामसे पुकारा जाता है।

कमजोरी, सुस्ती, याददाश्तकी कमी, अजीर्ण, सलज्ज भाव और संकोच-भाव, सरमे चक्कर आना वगैरह इसके लक्षण हैं। इसीका परिणाम ध्वजभंग है।

नेट्रम-फास ३x, ६x—वीर्य स्खलनके बाद ही कमजोरी और कँपकँपी, अम्लके उपसर्ग। जनन्द्रिय कमजोर, नींदमें विना स्वप्नके ही वीर्यपात हो जाना, अंडकोषमें खींचन।

कैलि-फास ३x, १२x—इन्द्रियकी उत्तेजनाकी वजहसे अन्य उपसर्ग पैदा हो जाना; स्वप्न-दोष और जननेन्द्रियमें दुर्बलता आ जाना।

कैल्के-फास ६x, ३०x—सारे शरीरकी दुर्बलता, संगम-इन्द्रियमें बल देनेके लिये इस औषधका प्रयोग किया जाता है।

मेरुदंडकी बीमारियाँ
(Spine, diseases of)

मेरुदंडका पक्षाघात, मेरुदंडका उपदाह और प्रदाह आदि मेरुदंडकी बीमारियाँ हैं। मेरुदंडका पक्षाघात अकसर बचपनमें ही हुआ करता है। इससे हड्डी कोमल, विकृत और टेढी हो जाती है।

मेरुदंडका उपदाह, प्रदाह, चोट, सर्दी लगना या किसी विषैली बीमारीके कारण यह पैदा होता है। इससे हड्डी कोमल हो जाती है और ज्ञानेन्द्रिय तथा हाथ-पैर आदिका संचालक पेशियोकी क्रियामें थोड़ी-बहुत गड़बडी पैदा हो जाती है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—मेरुदंडकी कमजोरी अथवा नमनीयता या टेढ़ापन ; स्नायु-केन्द्र-समूहकी असारता।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—लिखनेके समय हाथका काँपना, स्नायुदौर्बल्य; टेढ़ा और तुतलाना तथा हर तरहके आक्षेप और खींचनकी बहुत बढ़िया दवा है।

प्लीहाके रोग-समूह
(Spleen, diseases of)

प्लीहाका प्रदाह, प्लीहाका बढ़ना, प्लीहाकी क्रिया ठीक न होना वगैरह प्लीहाकी बीमारियाँ हैं। प्लीहाके ऊपर फोड़ा, अपनी जगहसे हटी हुई प्लीहा वगैरह प्लीहाकी अन्यान्य बीमारियाँ हैं—यह इस पुस्तकका विषय नही है। मैलेरिया, काला-ज्वर वगैरह बीमारी बहुत दिनोतक भोगनेपर प्लीहामें दर्द होता है और प्लीहा बड़ी और कड़ी हो जाती है। बुखार रहता है, शरीरमें खूनकी कमी हो जाती है,, रक्तके लाल कण कम हो

जाते हैं। बीमारी पुरानी होनेपर शरीर दुबला और उदरी वगैरह हो जा सकते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रादाहिक अथवा ज्वरावस्थामें जब शरीरका ताप बढ़ा हुआ रहता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—दूसरी अवस्था, रस निकलना या सूजन, सफेद लेप-चढ़ी जीभ, यकृतकी निष्क्रियता, शरीर पीला होते जाना; कब्जियत।

नेट्रम-सल्फ ३x, ३०x—दूषित भाफ या हवामें आये हुए कीटाणुसे पैदा हुई बीमारी। खूनका दौरान धीमा या बहुत थोड़ा होना।

मुख-गह्वर-प्रदाह
(Stomatitis)

"मुख-गह्वरका-प्रदाह" और "मुँहका घाव"—ये दोनों बहुत कुछ स्वतंत्र बीमारियाँ है। कोई-कोई मुख-गह्वर-प्रदाहको जीवाणुसे पैदा हुई बीमारी समझते हैं।

उपदाह पैदा करनेवाली एसिड वगैरहका मुँहमें लगना, बहुत ज्यादा धूम्रपान, पारेका अपव्यवहार, सर्दी, टाइफायड ज्वर वगैरह संक्रामक बीमारियाँ इत्यादि इसके उत्तेजक कारण हैं। कभी-कभी दाँतकी जड़से घाव आरम्भ होकर सारे मुख-गह्वरमें फैल जाते हैं। दाँतकी जड़से पीव, रक्त बहना, ओंठ और जीभका घाव, गल-ग्रन्थिका प्रदाह, बहुत ज्यादा लार बहना, बदबूदार श्वास-प्रश्वास, खाने-पीनेमें तकलीफ, दाँतकी जड़ अलग हुई जाती है; कण्ठनालीपर धुमैला रंगका परदा पड़ जाता है। कभी-कभी सड़नेवाला घाव भी पैदा हो जाता है।

मुँह अच्छी तरह धोना आवश्यक है। एक बोतल गर्म पानीमें पाँच ग्रेन "कैलि-म्यूर" मिलाकर मुँह धोनेपर लाभ होनेकी सम्भावना है। पुष्ट, पर पतली चीजें खाना लाभदायक है। मीठा, खट्टा वगैरह नही खाना चाहिये।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था ; प्रदाह, बुखार प्रभृति लक्षण रहनेपर।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—मुँहका घाव, मुख-गह्वरका जखम।

नेट्रम-फास ३x, ६x—मलाईकी तरह, पीला स्राव मिला जखम। पाकाशयमें अम्लकी अधिकता होना और इसी वजहसे मुँहमें घाव।

नेट्रम-म्यूर ६x, ३०x—बहुत अधिक लार बहना, जल-भरे छाले ; मसूढोमे जखम, सहजमें ही रक्त-स्राव, स्पर्श सहन नही होता।

सिलिका ६x, ३०x—बदबूदार श्वास ; धातु दोषसे पैदा हुई बीमारियाँ।

कैलि-फास ६x, १२—मुँहमें घाव : मुँहमें बदबू, श्वास-प्रश्वासमें बदबू ; जीभपर पीली आभा—भूरे रंगका लेप-चढ़ी और सूखी जीभ। बेस्वाद मुँह ; मुँहमे बदबू ; मसूढ़ेमें बहुत छेद हो जाना ; गले हुए घाव ; धुमैले रंगका घाव।

कैलि-सल्फ ३x, ३०x—निचले ओठकी श्लैष्मिक-झिल्ली सूखी, कैन्सर, मुँहमें जलन और गर्मी, जीभके किनारेपर सफेद मैल आदि लक्षण रहनेपर।

सर्दी-गर्मी

(Sun-stroke)

तेज धूप या तेज आगकी गर्मीमें काम करना या लू लग जानेके कारण सर्दी-गर्मी हो जाती है। किसी-किसीको सर्दी-गर्मी होनेके पहले सरमें चक्कर आती है, पेटकी ऊपरी भागमें तकलीफ मालूम होती है, जी मिचलाता है, कै होती है। वदनका चमड़ा सूखा, बार-बार पेशाव होना, गर्मीमें अच्छा न मालूम होना वगैरह उपसर्ग हुआ करते हैं। कोई-कोई एकाएक वेहोश हो गिर पड़ता है। आँखकी पुतली सिकुडी हुई, चेहरा लाल, नाडी तेज और पूर्ण तथा उछलती हुई, जोरसे श्वास-प्रश्वास वदनका ताप वहुत ज्यादा (यहाँतक कि ११० से ११२ डिगरीतक वढ़ जाता है) वगैरह लक्षण दिखाई देते हैं।

वहुत वार सर्दी-गर्मी रोग देखकर संन्यास रोगका भ्रम हो सकता है ; परन्तु इसका पार्थक्य निर्णय करना सहज है। याद रखना चाहिये कि सर्दी-गर्मीकी नाडी तेज, दोनों आँखोंकी पुतलियाँ समान रहती हैं ; परन्तु संन्यासमें नाड़ीकी गति मृदु और आँखोंकी पुतली असमान रहती है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—प्रधान दवा है।

कैलि-फास और **मैग्नेशिया फास**का भी लक्षणके अनुसार व्यवहार होता है।

उपदंश
(Syphilis)

स्वस्थ मनुष्यका गर्मी रोगवाले रोगीसे सहवास होनेपर उपदंशका विष एक मनुष्यसे दूसरेमें फैल जाता है। इस तरह स्वस्थ मनुष्यकी जननेन्द्रियमें भी बीमारी हो जाती है। कई दिनोतक इस विष-क्रियाके सम्बन्धमें कुछ भी मालूम नही होता। इसके बाद लिंगके अगले भागमें एक फुन्सी पैदा हो जाती है। इसके बाद वह फटकर जखम हो जाता है और इससे पीव वगैरह रस-स्राव हुआ करता है; यही उपदंशकी पहली अवस्था है। कठिन और कोमल भेदसे दो तरहका जखम होता है। कठिन क्षतका घाव गहरा होता है। कोमल क्षतका जखम गहरा नही होता, जखमका चारों किनारा कुछ ऊँचाभर हो जाता है। कोमल क्षतसे रस बहा करता है और इसमें एक या कभी-कभी दो बाघीकी गांठे हो जाती हैं और साधारणतः पक जाती हैं। इसका विष रोगवाली जगहपर ही रुका रहता है। कठिन क्षतसे अकसर रस नहीं बहता। पुट्ठे की बगलमें कई छोटी-छोटी ग्रन्थियाँ होती हैं; परन्तु वे पकती नही हैं। इसका विष सारे शरीरमें फैल जाता है; शरीरपर चकत्ते निकल आते हैं।

जननेन्द्रियके अलावा, मुँह वगैरह स्थानोमें भी उपदंश हुआ करता है। कितने ही इसे स्पर्शाक्रमक कहते हैं।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—बाघी, कोमल क्षत, उपदंश; पुराना उपदंश। उपदंश रोगकी यह प्रधान दवा है। कोमल क्षतवाले उपदंश रोगमें इस औषधका सेवन और बाहरी लाभदायक है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—उपदंशकी पुरानी अवस्थामें जब घावसे पतला स्राव होता है।

कैलि-फास ३x, ६x—घाव फैलानेका लक्षण और अड़नेवाला घाव ; तेज उपसर्गोका दिखाई देना। फैलने और क्षय करनेवाला जखम ; स्नायु-विधानमें गड़वड़ी ; मुँहका जखम ; सडनेवाला घाव ।

कैल्के-सल्फ ३x, ३०x—उपदंश और वाघीमें पीव पैदा हो जाने वाली अवस्था । इसके भीतरी और वाहरी दोनो प्रयोग होते है ।

सिलिका ३x, ३०x—पुराना उपदंश ; पीव उत्पन्न होने या कडा होनेपर । वाघीमें पीव पैदा होनेपर भी फायदा करता है । पारेके अपव्यवहारकी वजहसे जखमभरा चर्म-रोग ; जखम भरे अन्य चर्म-रोग ; ग्रन्थियाँ फूली नखका टूटना ।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—कठिन क्षत, जखमके किनारे कडे और उठे हुए, पत्थरकी तरह कडा, अर्बुद, अस्थि-विकार, हड्डीका टेढा पड़ जाना, जीभ फटी ।

फेरम-फास ३x, ६x—वाघी गर्म छुई न जाये और टपकनेवाला दर्द, ज्वर-भाव प्रभृति लक्षणोमें ।

अंडकोषकी बीमारियाँ

(Testicles, diseases of)

अंडकोष-प्रदाह, अंडकोषमें पीव-संचय, एकशिरा, कोरंड वगैरह अंडकोषकी बीमारियाँ हैं । चोट लगना, रुका हुआ प्रमेह, उपदंश वगैरह कारणोंसे "अण्डकोप-प्रदाह" हो सकती है । अण्डकोषमें दर्द या पीव संचय होना, अंडकोषका फूलना वगैरह इसके लक्षण हैं ।

एकशिरामें अंडकोपमें जल-संचय होता है और कोष झूल पडता है । इसमें कभी एक और कभी-कभी दोनो कोष आक्रन्त होते हैं । आक्रान्त कोष या दोनों कोष बडे हो जाते है और उनमें दर्द होता है । किसी-किसीको अमावस्या या पूर्णिमाके दिन तकलीफ बढ़ती है, बुखार आ

जाता है, उठा-बैठा नहीं जाता। नश्तर लगवानेसे तुरन्त लाभ होता है ; परन्तु नश्तर लगवानेके बाद भी किसी-किसीको एकशिरा होते देखा जाता है। Suspensory bag व्यवहार करना अच्छा है।

अंडकोषमें मांस जम जानेपर जब अंडकोष खूब बड़ा और कड़ा हो जाता है, तब उसे कोरंड कहते हैं। कोरंड वजनमें सात-आठ सेरतक होता है, कभी-कभी यह वज़न और भी अधिक होता है और घुटनेके पासतक झूल पडता है। इस रोगवाले आदमीको चलनेमें बहुत तकलीफ होती है।

फेरम-फास ३x, ६x—प्रदाहकी पहली अवस्था, दर्द, उत्ताप, ज्वर इत्यादि लक्षण रहनेपर।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—एकशिरा ; पानी इकट्ठा होना ; अंडकोषमें दर्द होना ; अडकोषमे बहुत खुजली होना।

कैलि म्यूर ३x, ६x—प्रदाहकी दूसरी अवस्था ; अंडकोषमें सूजन; रुके हुए प्रमेहकी वजहसे अंडकोषमें दर्द या अंडकोषकी बीमारी होनेपर लाभ करता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—नेट्रम-म्यूरसे लाभ न होनेपर। एकशिरा अंडकोष-प्रदाह, आँतोका बढ़ना।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—एकशिरा ; अंडकोष फूला, अण्ड-कोषकी शिथिल पेशियोंमें सिकुडन पैदा करता है और पानी भरना रोकता है।

सिलिका ३x, ३०x—एकशिराकी बढ़िया दवा है। एकशिराकी वजहसे अमावस्या और पूर्णिमाको अंडकोषका प्रदाह और बुखार होने लगता है। लक्षणोके अनुसार दूसरी-दूसरी दवाएँ व्यवहार करनेके समय बीच-बीचमें सिलिका व्यवहार किया जा सकता है।

तालुमूल-प्रदाह
(Tonsilitis)

गलदेशमें अलिजिह्वाके दोनों ओर बादामके आकारकी दो ग्रन्थियाँ रहती हैं। इन दोनों ग्रन्थियोंका नाम तालुमूल या "टानसिल" है। चोट, सर्दी लगना, बुरी भाफ लगना या बदबूदार गन्ध, पाचन-क्रियाकी गडबडी वगैरह कारणोंसे एक या दोनों ग्रन्थियाँ प्रदाहयुक्त हो सकती हैं। पहले गलेमें दर्द होता है। ग्रन्थि लाल और फूली हुई, बुखार, शरीर और माथेमें दर्द, चेहरा लाल, जीभपर मैल चढ़ी, स्वरभंग, निगलनेमें तकलीफ, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, लार बहना वगैरह लक्षण प्रकाशित होते हैं। यह रोगी गांठ पक भी सकती है। फोड़ा फट जानेपर रोगीको आराम मिलता है। किसी-किसीको सर्दी लगनेसे ही "तालुमूल-प्रदाह" हो जाता है।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्था ; ज्वर ; ग्रन्थिका लाल रहना ; निगलनेमें तकलीफ मालूम होना।

कैलि म्यूर ३x, ६x—(दूसरी दवा) सूजन ; तालुमूलपर हरा या धुमैले रंगका दाग, सफेद मैल चढ़ी जीभ। इससे पीव पैदा होना बन्द हो जाता है।

कैल्के-सल्फ ३x, १२x—पीव पैदा हो जानेपर इसका प्रयोग होता है।

कैल्के फास ३x. ६x—तालुमूलकी पुरानी सूजन, जम्हाई लेना, मुँह फारने और निगलनेमें कष्ट। बच्चे और रक्तहीन मनुष्योंको तालुमूलका पुराना प्रदाह।

कैलि-फास ३x, १२x—कमजोरी, सुस्ती, चिन्ता, सड़नेवाला लक्षण प्रभृति रहनेपर लाभ करता है।

सान्निपातिक-विकार या आंत्रिक ज्वर
(Typhoid Fever)

इसमें ऑतोंपर बीमारीका हमला होता है, इसीलिये इसे आंत्रिक ज्वर कहते हैं। शायद एक तरहका जीवाणु इस रोगका कारण है। परन्तु इस अनुमानको सब कोई नही मानते। तेज सडी बदबूका साँस द्वारा जाना, सडा पानी पीना, बन्द हवाका सेवन वगैरह इसके प्रत्यक्ष कारण हैं।

रोगके आरम्भमें शारीरिक और मानसिक अवसाद, भूख न लगना, ज्वर-भाव, सर्दी, हल्का अतिसार इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। कुछ दिन बाद रोगका पूरा-पूरा विकास होता है। एकाएक तेज ज्वर, सरमें तेज दर्द, हाथ-पैरमें दर्द, प्यास, पतले दस्त या कब्जियत, भूख न लगना आदि लक्षण दिखाई देते हैं और रोगी शय्याशायी हो जाता है। शारीरिक उष्णता १०२ से १०५ डिगरीतक बढ़ जाती है। दिनमें कई वार गर्मी घटती और बढ़ती है, जीभपर मैल चढा रहता है। दाँत मैला रहता है, ओठका चमडा उधड जाता है, अधखुली आँखें, तन्द्राभाव, भूल बकना, सदा पेट फूला रहना, पेशाब थोडा और तकलीफसे होता है। बदनपर फुन्सियोंकी तरह दाने निकलते हैं, किसी-किसीको रक्तस्राव भी होता है। इस बुखारके समय बहुत बार न्युमोनिया भी हो जाता है। तीसरे सप्ताहमें या तो रोग घट जाता है या बढ़ जाता है। इसका भोगकाल प्रायः छः सप्ताह है; कभी-कभी दो-तीन महीने भी लग जाते हैं।

रोगीका बिछावन और वस्त्र हमेशा साफ रखना और दिनमें तीन-चार वार अच्छी तरह रोगीका मुँह धुला देना अच्छा है। कमरेके दरवाजे खिडकियाँ बन्दकर गर्म पानीसे रोगीका बदन पोंछ देना अच्छा है।

रोगीको बिछावनसे उठने देना या ज्यादा हिलने-डुलने देना अच्छा नहीं है। इससे खराबी हो सकती है। फलका रस, छेनेका पानी, मिश्रीका पानी (लाल मिश्री हो तो अच्छा है) इत्यादि पतला पथ्य देना चाहिये। आराम होनेकी ओर जब बीमारी हटे, तो भी पथ्यपर अच्छी तरह ध्यान रखना चाहिये। बुखार छूटनेके बाद एक सप्ताह पतली चीजें पथ्यके रूपमें देनी चाहिये। इस समय रोगीको बहुत ज्यादा भूख लगती है; परन्तु सावधान! रोगीको एक बारसे अधिक खानेको न देना चाहिये। हरएक बार थोडा-थोड़ा खिलाना अच्छा है।

फेरम-फास ३x, ६x—प्राथमिक अवस्था; (प्रदाहित उपसर्ग मौजूद रहनेतक पर्यायक्रमसे यह दवा दूसरी चुनी हुई दवाके साथ देनी चाहिये)। सुस्ती और रक्त-स्राव होनेपर भी यह लाभ करता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रधान दवा है। कुछ पतले रंगका दस्त; पेट फूलना; काले रंगका थक्का-थक्का रक्त-स्राव; जीभपर भूरे रंगका या सफेद मैल चढा हुआ रहता है; कब्जियत या पतले दस्त आते है।

कैलि-फास ३x, १२x—बहुत ही तेज या सांघातिक उपसर्ग, खासकर मस्तिष्कपर रोगका आक्रमण होकर सामयिक पागलपन या भ्रान्ति-जैसा हो जाये। नींद न आना, साँसमें बदबू, बदबूदार दस्त, ज्यादा कमजोरी, पुरानी सरसोंके उबटनकी तरह जीभपर मैल चढा हुआ और सूखी जीभ; साफ बोली न निकलना प्रभृति लक्षण रहते हैं।

नेट्रम-सल्फ ३x, ३०x—पैत्तिक उपसर्गोंकी अधिकता रहनेपर लाभ करता है।

कैल्के-फास ३x, ३०x—रोगके बाद कमजोरी।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—मारात्मक उपसर्गोंका बढ़ना, पानीकी तरह वमन, सूखी जीभ, तन्द्रा-भाव, रक्त-स्राव इत्यादि।

क्षत या जखम
(Ulcer)

गिर जाना, चोट लगना, जल जाना, कट जाना, फोड़ा वगैरह कितने ही कारणोंसे जखम या घाव होता है। कितने ही जखम गहरे होते हैं, कितने ही बिलकुल ही गहरे नही होते। जखमसे रस, रक्त, पीव वगैरहका स्राव होता है और उनमें जलन, यंत्रणा, ज्वर इत्यादि रह सकता है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—सफेद, गाढा स्राव ; सूतकी तरह स्राव निकलना। स्राव दाह करनेवाला या जलन पैदा करनेवाला नही होता। जीभ हमेशा सफेद लेप-चढ़ी होती है ; जरायु-ग्रीवामें जखम होता है।

सिलिका ३x, ३०x—गहरा जखम ; जखम हड्डीतक फैल जाता है। पतला बदबूदार पीला स्राव ; नासूर हो जाना, गांठोंमें पीव इकट्ठा होना ; अगुलीसे दबानेपर सूजन कडी मालूम होती है।

कैल्के-सल्फ ३x, ३०x—जखमसे बहुत दिनोंतक स्राव निकलना। (सिलिकाके बाद) पीला पीवकी तरह स्राव। ग्रथिका जखम। जल जाने या चोट वगैरहसे पैदा हुए जखममें पीव पैदा होना।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वरका लक्षण ; उत्ताप, प्रदाह, जलन, यंत्रणा, रस-स्राव वगैरह।

कैल्के फ्लुओर ३x, १२x—हड्डियोपर रोगका हमला होनेपर। गाढ़ा, पीले रंगका पीव बहना, स्रावके साथ छोटे-छोटे अस्थि-खंड निकलते हैं।

नेट्रम-फास ३x, ६x—पाकस्थलीमें जखम या आँतोंमें जखम। खट्टी के, जीभपर पीली मैल चढ़ी हुई।

कैल्के-फास ३x, ३०x—जखम होनेपर सभी समय बीच-बीचमें देना अच्छा है।

चेचक (Small pox)

चेचक एक प्रकारका लरछुत रोग है। चेचकवाले रोगीका संसर्ग होना, उसका पीव, खून वगैरह छूना इत्यादि कारणोसे अच्छे आदमीको भी चेचक रोगकी बीमारी हो सकती है; परन्तु बहुत बार इसके विपरीत भी देखा जाता है। जो रोगीको सेवा करते हैं या हमेशा रोगीके पास जाते आते हैं, उनमेंसे कितनोंको ही अकसर रोग नही होता; परन्तु सबको सावधान रहना अच्छा है। रोगीको एकदम अलग कमरेमें रखना आवश्यक है। सेवा सुश्रूषा करनेवालोंके सिवा दूसरेका उस रोगीवाले कमरेमें न जाना ही अच्छा है। कभी-कभी यह बीमारी व्यापक-रूपमें फैली दिखाई देती है।

पहले सर्दी बुखार, सारे शरीरमें दर्द, माथेमें दर्द, खाँसी, लार वहना, छातीमें दर्द, भूख न लगना, वमन या वमननेच्छा वगैरह प्रकाशित होते है। दो-तीन दिन वाद मुँहमें और माथेमें लाल-लाल फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं; धीरे-धीरे सारे शरीरमें यहाँतक कि आँख और गलेके भीतर भी छाले पैदा हो जाते हैं। आँखोमें दाने हो जानेपर आँखे नष्ट हो जानेकी सम्भावना रहती है। कभी-कभी शरीरमें जगह-जगह कई दाने एकत्र होकर वहुत वडे हो जाते हैं और बहुत-सी जगह घेरे रहते है; इन्हे संयुक्त-चेचक कहते हैं।

फेरम-फास ३x, ६x—पहली अवस्थाकी दवा है। प्रबल ज्वर, सर्दी प्रभृति लक्षणोंमें।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—इस रोगकी प्रधान दवा है। इससे गोटियाँ बाहर निकल आती हैं।

कैलि-सल्फ ३x, १२x—इस दवाके प्रयोगसे दाने निकल आनेमें सहायता मिलती है।

कैल्के सल्फ ३x, ३०x—दानोमें पीव पैदा हो जानेपर।

शिराओंके रोग

(Veins diseases of)

शिरा-प्रदाह, शिराओंका फूलना, शिराका बढ़ना या फूलना वगैरह शिराके रोग हैं।

चोट लगना, जखम, विसर्प वगैरह कारणोंसे शिरामें प्रदाह पैदा होता है। शरीरका कोई यंत्र प्रदाहान्वित होनेपर उस यंत्र या उसके आस-पासकी शिराएँ फूल उठती हैं और लाल तथा दर्द-भरी हो जाती हैं।

रक्त-संचालन क्रियामें गडबड़ी होनेपर हाथ, पैर वगैरह स्थानोंकी शिरा फूलकर मोटी हो जाती हैं। इसीको शिराका प्रसारण कहते है।

कैल्के-फ्लुओर ३x, १२x—यह शिरा-प्रसारणकी प्रधान दवा है। शिराओंका फूलना, उनकी पीव भरी या शिथिल अवस्था रहना।

फेरम फास ३x, ६x—प्रदाहिक अवस्था, धमनियोंमें तेज दबाव।

कैल्के फास ३x, ३०x—दूसरी-दूसरी चुनी हुई दवाओंके साथ बीच-बीचमें इसका सेवन करना चाहिये।

हूप खाँसी

(Whooping cough)

हूप खाँसी साधारणतः बच्चोंको ही हुआ करती है। यह लरछुत वीमारी है। किसी मकानमें एक लडकेको हूप खाँसी हो जानेपर अक्सर उस मकानके और-और लडकोंको भी हूप खाँसी हो जाया करती है।

पहली अवस्थामें तेज खाँसी, उसके साथ सामान्य बुखार भी रह सकता है। खाँसते-खाँसते दम रुक जानेकी हालत हो जाना, थोडा भी कफ निकलने या के हो जानेपर खाँसीका वेग घट जाता है। दो-चार घण्टेतक फिर खाँसी नहीं आती। खूब तेज खाँसी होनेपर खाँसनेके समय नाकसे या मुँहसे खून निकलने लगता है। रातके समय ही खाँसी ज्यादा आती है। रोग पुरानी होनेपर बुखार बन्द हो जा सकता है; परन्तु रोगी धीरे-धीरे कमजोर होता जाता है। हूप खाँसी जल्दी अच्छी नहीं होती। कितने ही लडकोंको छः-छः महीने भोगते देखा गया है।

कैलि-म्यूर ३x, ६x—प्रधान दवा है। जीभपर सफेद लेप चढ़ा हुआ; कफ गाढा और सफेद; अकड़न पैदा करनेवाली खाँसी।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—पुरानी खाँसी; यदि खाँसीका झोंक बहुत ज्यादा हो, तो गर्म पानीके साथ सेवन करना चाहिये।

कैलि-फास ३x, १२x—कमजोरी और सुस्ती।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वर रहनेपर या नाक, मुँहसे खून निकलनेपर इसका प्रयोग होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ३०x—पतला स्राव; आँखोंसे पानी गिरना लक्षण रहनेपर।

कैलि-सल्फ ३x, १२x—सूतकी तरह या पतला लसदार स्राव, पीला बलगम निकलना।

कैल्के-फास ३x, ३०x—खूनकी कमी; रोग सहजमें ही छोड़ना नहीं चाहता; बलगम अण्डेके सफेद अंशकी तरह निकलता है।

क्रिमि (Worms)

क्रिमि बहुत तरहकी होती है। उनमें सूतकी तरह क्रिमि, केचुएकी तरह क्रिमि या फीतेकी तरह चिपटी क्रिमि ज्यादा ध्यान देने योग्य हैं।

सूतकी तरह क्रिमि खूब छोटी आधा इञ्च या उसकी अपेक्षा भी छोटी होती है। वे प्रायः मलद्वारके पास दल बांधकर रहती है।

केचुएकी तरह क्रिमि गोल और लम्बी, प्रायः आधा हाथ या उसकी अपेक्षा भी कुछ बडी होती है। ये आँतोमें रहती हैं। कभी-कभी ये गुह्यद्वारकी राहसे मलत्यागके समय बाहर निकलती है; कभी-कभी ये मुँहसे भी निकला करती हैं।

फीतेकी तरह क्रिमि भी आँतोंमे रहती है। या ६ हाथसे १०० हाथतक या उससे भी ज्यादा लम्बी हो सकती है। शरीरसे एकदम बाहर नही निकल जाती। थोडी-थोडी, गांठ-गांठ-जैसी निकलती है।

क्रिमि स्त्री, पुरुष, बच्चे, बुढ़े सबको ही हुआ करती है; परन्तु बच्चोको ही यह अधिक होती है।

ज्यादा कच्चे फल-मूल, अधिक पका केला और ज्यादा मीठा भोजन, खाने-पीनेका दोष, अस्वास्थ्यकर जगहमें रहना वगैरह कारणोसे क्रिमि रोग पैदा होती है।

क्रिमि होनेसे मलद्वार और नाकमें खुजली होती है। अम्ल, अजीर्ण, बहुत भूख या भूख न लगता, कब्जियत या पतले दस्त, नीदमें गडबडी, बिछावनमें पेशाब कर देना, खडियाकी तरह सफेद पेशाब, चिडचिड़ा स्वाभाव, दुवला शरीर, बडा और कड़ा पेट वगैरह उपसर्ग दिखाई देते हैं। क्रिमिकी वजहसे खास-खास अंगका काँपना, मृगी-विकार वगैरह हो सकता है।

नेट्रम फास ३x, ३०x—प्रधान दवा है। कुछ दिन लगातार सेवन करना आवश्यक है। ३x के व्यवहारसे खासकर फायदा होता है।

कैलि-स्यूर ३x, ६x—सूतकी तरह क्रिमि ; मलद्वारमें खुजली ; जीभ सफेद लेप।

फेरम-फास ३x, ६x—आँतोंमें कृमि ; कच्चा मल निकलना ; क्रिमिके साथ ज्वरका लक्षण रहनेपर।

सरमें चक्कर आना
(Vertigo)

यह स्वयं कोई रोग नहीं है। दूसरे रोगका लक्षणभर है। यह कमजोरीका परिचायक है। अम्ल, अजीर्ण, रातमे जागरण, बहुत ज्यादा मात्रामें शारीरिक और मानसिक परिश्रम, बहुत ज्यादा इन्द्रिय परिचालन, स्नायविक दौर्बल्य अनाहार वगैरह कारणोंसे सरमें चक्कर आता है। एकाएक उठनेसे सरमें चक्कर आ जाता है, रोगीकी आँखोंके सामने अंधेरा छा जाता है। उसके रोगियोंको ऐसा मालूम होता है, मानो सब चीजें घूम रही हैं, उसका शरीर हिल रहा है।

कैलि-फास ३x, ३०x—स्नायविक कारण या दुर्बलताकी वजहसे सरमें चक्कर आना ; रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है।

फेरम-फास ३x, ६x—रक्तकी अधिकताकी वजहसे सरमें चक्कर माथेपर रक्तका वेग अधिक हो जानेके कारण सरमें चक्कर आना।

नेट्रम-सल्फ ३x, १२x—पैत्तिक गड़बडीकी वजहसे सरमें चक्कर आना। रोगीमें पित्तके लक्षणोंकी प्रधानता देखी जाती है।

एकजिमा

(Eczema)

यह एक कष्टसाध्य चर्म-रोग है। इसका प्रधान लक्षण है—खुजलाना, खाल उधर जाना, चमड़ा लाल हो जाता है; छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं; पानी-भरी और पीव-भरी फुन्सियाँ होती हैं। माथा, चेहरा, कानका पिछला भाग और सन्धियोंके गांठमें दाने निकलते हैं, इससे गाढ़ा रस वहता है; कभी-कभी पीव-मिला या लाल रंगका भी रस बहता है; वह रोगवाली जगह तर बनी रहती है।

फेरम-फास ३x, ६x—चर्मपर प्रदाह, ज्वरकी अधिकता प्रभृति दमन करनेके लिये।

कैलि-म्यूर ३x, ३०x—चर्म-रोगमें जल-भरी फुन्सियोंवाले गाढ़ा सफेद रस वहना; चेचकका टीका लेनेके बाद अकौता निकल आना; बच्चे और बालक-बालिकाओंके माथेमें अकौता; Crusta lactea नामक पपड़ी जमना; इससे मैदेकी तरह रूसी निकलती है।

कैलि-सलफ ३x, ६x—अकौतेसे पीली आभा लिये पीवकी तरह स्राव होता है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—ज्यादा नमक खानेकी वजहसे एकजिमा; छोटी रस-भरी फुन्सियाँ या छालेकी तरह उद्भेद, उससे मछलीके चोयटेकी तरह खाल निकलना और पानीकी तरह स्राव होना।

नेट्रम-फास ३x, ३०x—अकौतासे मधुकी तरह स्राव; पीली आभा लिये पपडी जमती है; बहुत खुजलानेवाला एकजिमा।

कैल्केरिया-फास ३x, ६x—खूनकी कमी और दुबले रोगियोंके अकौतामें लाभदायक है।

नेट्रम-सल्फ ३x, ६x—वरसातमें होनेवाला एकजिमावाले रोगियोंको पानी बहुत कम व्यवहार करना चाहिये।

अंत्र-वृद्धि (Hernia)

आँतोंकी क्रियामें गडवडी, कब्ज रहनेके कारण बहुत काँखना, पेटमें मल इकट्ठा होना, भारी चीजें उठाना वगैरह कारणोंसे यह बीमारी हो जाती है। इसीलिये कसकर लगोट पहनना अथवा ट्रस (Trus) बांधे रहना फायदेमन्द है। इसमें रोगीको आँतोके पास बहुत तेज दर्द होता है, आँत नीचेकी ओर लटककर उतर आती है, ज्वर हो जाता है। यदि जल्दी इलाज नही होता, तो आँतें सड़ने लगती है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—तेज दर्दमें इसका प्रयोग होता है।

कैल्केरिया-फास ३x, ३०x—यह आँतोके सिकुड़नेमें फायदा पहुँचाता है।

सुखंडी (Marasmus)

देहमें खाये हुए पदार्थोंका अच्छी तरह समीकरण न होनेके कारण वचपनमें यह प्राणघातक वीमारी हो जाती है। इसका कारण है, पाचन-क्रियाका ठीक-ठीक न होना अथवा वच्चेके खाद्यमें पोषक-सामग्रीकी कमी। नकली खाद्य खिलाकर जिन वच्चोंको रखा जाता है, उन्हे ज्यादाकर यह वीमारी हो जाती है। माताका स्वास्थ्य खराब रहनेपर भी यह हो जाया-करती। वच्चा दिनोंदिन दुबला होता जाता है, पाचन शक्ति विगड जाती है, वमनमें खट्टी गन्ध या वदबू रहती है। बच्चा वेहोशकी तरह नीदमें या अकडन होकर मर जाता है।

कैल्केरिया-फास ३x, ६x—पेटेण्ट खाद्य ; बोतलमें भरकर जिन बच्चोंको खिलाया जाता है, उनकी सुखंडीकी बीमारीमें यह दवा बहुत लाभ करती है। ऊँचा तलपेट, बढ़ा हुआ यकृत, खाने-पीनेके बाद पेटमें दर्द।

नेट्रम सल्फ ३x, ६x—पिता-मातामे प्रमेह दोष ; आध्मानके कारण तलपेट फूलना ; पीले रंगका मल बडे वेगसे निकलता है। सवेरे पतले दस्त।

साइलिसिया—बच्चेका माथा बडा और शरीर दुबला, सहजमें ही बहुत ज्यादा पसीना होता है। चेहरा पतला, बूढ़ोकी तरह सिकुड़ा। स्तनका दूध पीनेकी इच्छा न होना, वमन हो जाना, पानीकी तरह पतले दस्त, दस्तमें बदबू।

कैलि फास ६x, १२x—पतनावस्था ; सुस्ती और स्नायविक दुर्बलता सम्बन्धी नाना प्रकारके उपसर्ग, मल-मूत्र प्रभृति सभी स्रावोंमें सडी गन्ध।

नेट्रम-फास ३x, ६x—अम्लकी अधिकता रहनेपर यह उपयोगी है।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—गर्दनका पतला पड जाना ; कमजोरीकी वजहसे बच्चा माथा सीधा नही रख सकता। मिट्टीके रंगका मल ; कब्जियत। बच्चा देरसे बोलना सीखता है।

प्लेग (Plague)

इसको महामारी भी कहते हैं। यह एक खास तरहके जीवाणुसे पैदा हुई बीमारी है। मनुष्यके श्वास-मार्ग और अन्नवहानलीके सहारे प्लेगके जीवाणु नर-देहमें जाते है। प्लेग छः तरहका होता है :—(१) ब्यूबोनिक ; (२) सेप्टीसिमिक ; (३) न्युमोनिक ; (४) ऐबडोमिनल अर्थात औदरिक ; (५) हाइड्रोफोबिक अर्थात जलातंकके लक्षण

प्रकट करनेवाला ; (६) टानसिलर। जहाँ सूर्यकी रोशनी नहीं पहुँचती और हवा भरपूर नही जाती, ऐसे गन्दे तथा सीड-भरे स्थानोमें, मिट्टीके घरमे, तर जगहमें, वरसातके वाद और शरद् ऋतुमें और शीतमें प्लेगका प्रकोप ज्यादा होता है।

ब्यूबोनिक प्लेग—अधिकांश स्थानोंमें रोगका एकाएक आक्रमण होता है। एक वार या वार-वार कम्प होकर तेज बुखार आता है। शारीरिक और मानसिक दुर्वलता वढ जाती है। सर-दर्द, मिचली, वमन, छातीपर दवाव, चेहरा मलिन, ज्वरका उत्ताप १०२ से १०७ डिग्रीतक हो जाता है। श्वास-प्रश्वास तेज नही, वल्कि, घटा रहता है। जीभ वाहर निकालनेपर काँपती है। वंक्षण-प्रदेश या वलगकी गांठ फूल उठती है, उस जगहपर दर्द होता है। वहुत कमजोरी आ जाती है, कभी-कभी तो रोगीमें ज्ञान नही रहता है ; मलमें वहुत वदवू रहती है और सान्निपातिक लक्षण सव प्रकट हो जाते हैं। हृत्पिण्ड वहुत कमजोर हो जाता है और उसकी गति रुककर मृत्यु होती है। भारतमें अधिकांश इसी श्रेणीका प्लेग होता है।

सेप्टीसिमिक प्लेग—इसमें पीवसे पैदा हुए सर्वाङ्गीन लक्षण सव प्रकट होते हैं। शरीरके कितने ही स्थानोंकी ग्रन्थियाँ सव बढ़ जाती हैं और विकार आदि मस्तिष्कके लक्षण पैदा हो जाते हैं। इसमें हृद्‌यंत्र वहुत विशेष रूपसे क्षीण हो जाता है।

न्युमोनिक प्लेग—इसका आक्रमण श्वास-पथपर होता है। सवसे पहले वीमारीका हमला फेफडेपर होता है और ब्रांको-न्युमोनियाके लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

पेवडोमिनल प्लेग—इसमें पाकाशय तथा आँतोंपर रोगका आक्रमण होता है। इसमें रोगीके शरीरपर चकत्तेकी तरह दाने निकल आते हैं ; पेट फूला रहता है। रोगीके कमरेमें वहुत दर्द, मिचली,

ओकाई और वमन होता है। पतले दस्त आनेपर मलमें बहुत बदबू रहती है, हाथ-पैर ठण्डे और नाड़ी लोप हो जाती है।

हाइड्रोफोबिक प्लेग—इस श्रेणीके प्लेगमें जलातंक रोगके लक्षण सब प्रकट होते हैं। चेहरेका भाव शंकित, पतली चीजें निकलनेमें तकलीफ, थूकने या बलगम निकालनेकी ताकतका न रहना ; बेचैनी तथा तेज बुखार रहता है।

चिकित्सा

कैलि म्यूर ३x, ६x—इस रोगकी उत्तम दवा है। यह टानसिलरी प्लेगमें ज्यादा फायदा करता है। तालुमूल-ग्रन्थिका प्रदाह, शोथ, कंठ फूला, मुँहमें छाले, गलेमें घाव अथवा न्युमोनिक प्लेगमें रोगके द्वितीय पर्यायमें लसदार कडा बलगम निकलना। औदरीय प्लेगमें हल्के रंगके पतले दस्त, जीभकी जड सफेद या धुमैली लेप-चढी, जगह-जगहकी गांठोका फूलना।

कैलि-फास ३x, ६x—प्लेग रोगमें बहुत तेजीसे हृत्पिडका कमजोर होते जाना ; बदबूदार पाखाना, कमजोरी, सड़नेवाला जखम अर्थात् सेप्टीसिमियामें भी यह बहुत फायदा करता है।

फेरम-फास ३x, ६x—ज्वरकी अधिकता और प्रदाहमें आरम्भसे ही इसका प्रयोग करना चाहिये। ज्वर कम या ज्यादा चाहे जैसा भी हो, इसका प्रयोग होता है। अगर बहुत रक्तस्राव हो, तो भी यह फायदा करता है।

मैग्नेशिया-फास ३x, ६x—अकडन, बेचैन, अंगोका खिचना, सर-दर्द, हिचकी, हाइड्रोफोबिक प्लेग, गलनलीका अकड़ना, पतली चीजें निगलनेमें कष्ट ; गर्दन और कंठकी सब ग्रन्थियाँ फूल जाती हैं।

नेट्रम-म्यूर ३x, ६x—सर्दी, श्वासनली और फेफड़ेका प्रदाह ; हृत्पिंडका काँपनेकी तरह स्पन्दन ; न्युमोनिक प्लेग, फेन-भरा रसकी तरह बलगम ; बलगम निकालनेमें तकलीफ।

साइलिसिया—वंक्षण-सन्धि या पुट्ठेकी गांठ फूलना, अन्यान्य लसिका-ग्रन्थियोंका नया प्रदाह, गांठ निकलना, शारीरिक उत्तापकी कमी हाथ-पैर ठण्डे, बहुत अधिक जाड़ा मालूम होना, पुट्ठेकी गांठ कड़ी, फूली और उसमें प्रदाह। अगर ज्यादा दिनोंतक रह जाये, तो "फेरम फास" के साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

बेरी-बेरी (Beri-Beri)

कई बरसोंसे बंगाल तथा भारतके दूसरे दूसरे प्रदेशोंमें यह बीमारी फैल रही है। यह एक प्रकारका शोथ है। यह बीमारी प्रायः सब ऋतुओंमें ही होती है। एक बार आक्रमण हो जाता है, तो जल्दी छोड़ना नहीं चाहती। बहुत कमजोरीके साथ सरमें चक्कर आना, चेहरा सफेद, दोनों आँखें रक्त-शून्य और मलिन, भूख न लगना, कब्ज या अनपचके दस्त, पतले दस्त, पित्त-वमन, कभी-कभी नाकसे खून गिरना ; चर्मके नीचेवाले तन्तुमें जल संचय होनेकी वजहसे सूजन आ जाती है। यह सूजन सबसे पहले तलवेके ऊपरी भागमें और गुल्फ-सन्धिमें पैदा होती है और क्रमसे जानु-सन्धिसे गुल्फतक पैरकी दोनो दीर्घास्थिके ऊपरतक सूजन फैलकर जाती है ; अगर बीमारी कड़ी रहती है, तो सूजन फैलकर जानु और जननेन्द्रियतक आक्रमण कर देती है। त्वचा सूखी, अधिक प्यास, हृत्पिंडकी कमजोरी प्रभृति लक्षण दिखाई देते है। कलेजेमें धड़कन होती है और कितनों ही का सारा शरीर सुन्न पड़ जाता है।

चिकित्सा

कैलि-म्यूर ३x, ६x—पित्त-विकार और प्रकृतिकी गड़बड़ीसे उत्पन्न शोथ। सफेद या सफेद आभा लिये धुमैला लेप-चढ़ी जीभ ;

हृद्यंत्र या गुर्देकी खराबीकी वजहसे शोथ; हृत्पिण्डमें कमजोरी। "कैलि-फास" लवणके साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

नेट्रम-सल्फ—शोथकी बढ़िया दवा है। पुरुषोके अंडकोष और स्त्रियोंके भगोष्ठतक भी यदि रोग फैल जाये, तो यह दवा लाभ करता है।

नेट्रम-म्यूर—शोथके साथ बहुत कब्जियत या अतिसार; बहुत कमजोरी और थकान मालूम होना।

फेरम-फास—खूनकी कमीकी वजहसे क्षीण हो जानेके बादके शोथ रोगमें, खायी हुई चीजका अच्छी तरह सांगीकरण नही होता; अंग-प्रत्यंगका सुन्न हो जाना और ठंडक, चीटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी अनुभव होना।

कैल्केरिया-फ्लुओरिका—जल-संचयकी वजहसे हृत्पिंड, फेफड़ा और फुस्फुसावरणका फैलना, रोग-रोगके साथ शोथ; हृत्पिंडका काँपना।

कैलि-सल्फ—सर्दी मालूम होना, क्लान्ति और कलेजा काँपना; पाकाशयमें जलन, प्यास, मिचली, वमन, स्वाद बिगड़ा, पीले रंगका लसदार, पतला और बदबूदार मल, इसके साथ ही शोथका रहना।

कैलि-फास—सुस्ती और ज्यादा स्नायविक दुर्बलता रहनेपर इसका प्रयोग होता है। स्नायविक अवसाद और अधिक दुर्बलताके कारण सरमें चक्कर आना; चित्तका उद्विग्न रहना; पानीकी तरह दस्त प्रभृति, स्नायविक दुर्बलताके लक्षणोके साथ शोथ रहनेपर यह फायदा करता है।

बालास्थि-विकृति

(Rickets)

इस बीमारीका दूसरा नाम रेकाइटिस (Rachitis) है। यह बीमारी पोषणकी कमीके कारण हुआ करती है। यह बच्चोका रोग है। यह बीमारी तीन बरसकी उमर होनेके पहले ही आरम्भ हो जाती है

अर्थात् छः महीनेसे लेकर तीन वर्षके बच्चेमें अगर इसके लक्षण न दिखाई दें, तो यह बीमारी नही होती। बच्चोंके शरीरमें खुली हवा और भरपूर सूर्य-किरण न लगनेके कारण भी यह बीमारी होती है। भरपूर खाद्यका न मिलना, माताके स्तनमें भरपूर दूध न होना, स्वास्थ्य-नीतिका अच्छी तरह पालन न करना, पिता-मातामें उपदंशका दोष रहना प्रभृति कारणोंसे यह बीमारी हो जाती है। आधुनिक मतसे—अनुपयोगी खाद्य-पदार्थोंके दोषसे आँतोमें विषैला पदार्थ पैदा हो जाता है और जब वह बच्चेके शरीरमें सोखता है, तो रिकेट्सकी बीमारी पैदा हो जाती है।

इसमें बच्चेकी छाती कवूतरकी तरह हो जाती है। हड्डियोंमें विकार पैदा हो जाता है तथा आक्षेपयुक्त खाँसी पैदा हो जाती है। दाँत निकलनेमें देर होती है; वक्षोस्थिके दोनो पार्श्वोंमें धनुषकी तरह आकार हो जाता है; वक्षास्थि सामनेकी ओर उठी मालूम होती है। दोनों कंठास्थियाँ कुछ मोटी पड़ जाती हैं, बच्चा दुवला होता जाता है; जल्दी खड़ा और चल नही सकता। दाँत निकलनेमें देर होती है।

चिकित्सा

कैल्केरिया-फास—रिकेट्स रोगकी सबसे श्रेष्ठ दवा इसे कहा जाये, तो कोई अत्युक्ति नही होगी। जो बच्चे खानेके पदार्थोंका सांगीकरण नही कर पाते, ऐसे कमजोर, दुवले-पतले और मटमैले रंगके बच्चोके लिये यह बहुत लाभदायक है। माथेकी हड्डी कोमल और सूक्ष्म; ब्रह्मरंध्र खुला हुआ; गर्दन इतनी पतली कि माथा सीधा नही रख सकता है; दाँत देरसे निकलता है; शरीरका बढ़ना और पोषणके लिये "कैल्केरिया-फास" प्रधान उपकरण है। यह हड्डीमें कड़ापन लाता है; माथेके सन्धि-स्थान बहुत दिनोंतक खुले रह जाते हैं। शरीरके आयतनकी तुलनामें माथा अपरिमित-भावसे वढा रहता है; चेहरेका रंग पीली आभा लिये मिट्टीके रंगका; भूख अस्वाभाविक रहती है। बराबर

स्तनका दूध पीना चाहता है, परन्तु बार-बार और सहजमें ही वमन कर देता है। अतिसार, मल पतले और हरे रंगका रहता है; अजीर्ण मल और बदबूदार वायु निकलता है; दाँत निकलने समय शीर्ण और दुबले बच्चोकी हूपिंग खाँसी; चमड़ा सूखा, ठंडा, सिकुड़ा, रक्तमे श्वेत-कण बढ़ा हुआ। डाक्टर **चैंपमैन** दृढ़-भावसे कहते हैं कि जिन प्रसूताओंकी सन्तान रिकेट्स रोगग्रस्त होती है, उनके दूसरी बारकी गर्भ-धारणके समय नियमित-रूपसे "कैल्केरिया-फास" सेवन कराते रहनेपर उनके गर्भकी सन्तानकी रिकेट्सकी बीमारी नही होती है और वह खूब पुष्ट होकर जन्म ग्रहण करती है।

नेट्रम-फास—फटे दूधकी तरह वमन, छेनेका टुकड़ा मिला मल इत्यादि; अम्लकी अधिकता बतानेके साथ जिन्हे रिकेट्स बीमारी हो, खाद्य-पदार्थोंका सांगीकरण नही होता हो; अम्ल-विष दूषित धातु, ऐसे बच्चेके माताके स्तनके दूधकी परीक्षा करनेपर अम्ल-गुण अधिक रहे, तो उसे "नेट्रम-फास" का प्रयोग करना आवश्यक है।

साइलिसिया—माथेमें पसीना अधिक होना, माथेकी आकृति बढ़ी हुई, ब्रह्मरंध्रकी सन्धि नही जुड़ती है; माथेमें बतौड़ी, गुटिकाकी तरह उद्भेद, दाँत बहुत कष्टसे निकलते हैं। मसूढ़ेमें फोड़ा हो जाता है, उपदंश विष-दूषित धातु, स्तनका दूध पीनेके बाद ही बच्चा कै कर देता है। कब्जियत। कैल्केरिया-फासके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।

कैलि-फास—सड़ा बदबूदार मल; बच्चा लगातार दुबला होता जाता है। बराबर रोया करता है; भरपूर नींद नही आती है; थोड़ी सी आवाजसे ही चौक उठता है; दूसरे-दूसरे निर्देशित नमकके साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना चाहिये।

लक्षण-कोष
(Repertory)

मस्तक-पर्याय

अर्बुद—नये पैदा हुए बच्चेके माथेमें—कैल्के-फ्लुओर।
" खून-भरा—कैल्के-फ्लुओर।
" स्थूल और कड़ा—साइलिसिया।
अस्थि लचीली और कोमल—कैल्के-फ्लुओर।
" जोरका खुजलाना—कैल्के-फ्लुओर।
" क्षय होती रहती है कैल्के-फ्लुओर।
केश झड़ना, छोटी-छोटी जगहोंका—कैल्के-फास।
" " फैली हुई जगहोंका—कैल्के-फास, साइलिसिया।
केशकी जड़ ढीली, तेल लगानेके समय या केश झाड़नेके समय केश झड़ते हैं—कैल्के-फास; कैलि-फास।
केश खींचनेपर दर्द—फेरम फास।
गर्दनकी कमजोरीके कारण माथा ढुलक पड़ता है—कैल्के-फास।
गर्दनमें तेज दर्द—मैग-फास।
जखममें, माथेकी त्वचामें—कैल्के-फ्लुओर।
" " हड्डीमें—कैल्के-फ्लुओर।
दर्द धीमा, वेधनेकी तरह, बलगमकी कपालास्थिमें, कनपटीमें—नेट्रम-म्यूर।
दर्द धीमा, हथौड़ीसे मारनेकी तरह—नेट्रम-म्यूर।
मस्तिष्कमें जल-संचय—कैलि-फास।

मस्तिष्कके तलदेशमें तेज दर्द—नेट्रम-सल्फ ।
　" पसीना अधिक होना—केल्के-फास ; साइलिसिया ।
　" वातका दर्द—मैग-फास ।
　" सीधा न रख सकना—कैलि-फास ।
मेनिञ्जाइटिस, तेजी दब जानेपर—नेट्रम-सल्फ ।
　" मेरुमज्जाकी, इसके साथ ही रक्तकी अधिकता, अकड़न और विकार—नेट्रम-सल्फ ।
रूसी माथेमें—नेट्रम-म्यूर ; कैलि-सल्फ ।
सरमें चक्कर आना—फेरम-फास ; कैलि-फास ।
　" " " पाचनके दोषसे—नेट्रम-फास ।
सर-दर्दके साथ लाल आँखें—फेरम-फास ।
　" " आँखपर विशेष अनुभव होना—फेरम-फास ।
　" " फेन-भरी लार निकलना—नेट्रम म्यूर ।
　" " कब्जियत—कैलि म्यूर ; नेट्रम म्यूर ।
　" " तन्द्रालुता, औंघाई—नेट्रम-म्यूर ।
　" " मेरुदंडमें सर्दी मालूम होना—मैग-फास ।
　" " हिस्टीरिया—कैलि-फास ।
　" " कुचलनेकी तरह, टपक इत्यादिकी तरह—फेरम-फास ।
सर-दर्दके साथ, आँखोंके ऊपर—फेरम फास ।
　" " शंखास्थिमें (temples)—फेरम-फास ; नेट्रम-फास ।
　" " ब्रह्मतालुमें—फेरम फास ; नेट्रम फास ।
सर-दर्द, स्नायविक—कैलि-फास ; मैग-फास ।
　" युवतियोंका—नेट्रम-म्यूर ।
　" हथौड़ी मारनेकी तरह—नेट्रम म्यूर ; फेरम-फास ।
　" घटना, आनन्द योग देनेपर—कैलि-फास ।

सर-दर्द, घटना, गरम सेंक देनेपर—मैग-फास ।
" " धीरे-धीरे चलनेपर—कैलि-फास ।
" " नाकसे रक्त-स्राव होनेपर—फेरम-फास ।
" " शीतल हवामें—कैलि-सल्फ ।
" बढ़ना, गरम कमरेमें—कैलि-सल्फ ।
" " सवेरे नींद खुलनेपर—नेट्रम-फास ।
" " मानसिक परिश्रमसे—कैलि-सल्फ ।
" " सर्द प्रयोगसे—मैग-फास ।
" " सन्ध्याके समय—कैलि-सल्फ ।

मनः-पर्याय

अधैर्य और स्नायविक—कैलि फास ।
अपने घर जानेके लिये उद्विग्न—कैलि-फास ।
आत्महत्याकी वासना—नेट्रम-सल्फ ।
आच्छन्नता—नेट्रम-म्यूर ।
उद्वेग—कैलि-फास ।
उन्माद—फेरम-फास ।
किसी विषयमें मन नही लगा सकता—कैल्के-फास ।
किसी विषयको सोचना दुःसाध्य—साइलिसिया ।
घबड़ाहट, पित्तकी अधिकताकी वजहसे—नेट्रम-सल्फ ।
घबड़ायी प्रकृति—कैलि-सल्फ ।
चित्त-विकार—कैलि-फास ।
निराशासे कातर—निरुत्साह—नेट्रम-म्यूर ।
निराशाके कारण भग्नहृदय—कैल्के फास ।
नींद न आना—नेट्रम-म्यूर ; कैलि-फास ।

बालक-बालिकाओंकी घबडायी प्रकृति—कैलि-फास।

बालक बालिकाओंकी क्रोधी और चिडचिडा—कैल्के-फास।

" " रातके समय नींदमें चिल्लाना—नेट्रम-फास, कैलि-फास।

" " रोते रहना—कैलि-फास।

बरसातके दिनोंमें दुःखित रहा करता है—नेट्रम-सल्फ।

भविष्यके सम्बन्धमें उद्विग्न—कैल्के-फास।

मानसिक परिश्रमके कारण मस्तिष्ककी क्लान्ति—कैलि-फास।

मूर्च्छावायुवाले व्यक्तियोंका—कैलि-फास।

विकार, जीभमें फेन-भरी लार रहना—नेट्रम-म्यूर।

" ज्वर अधिक रहनेके साथ—फेरम-फास, कैलि-फास; नेट्रम-म्यूर।

विकार, बुदबुदाकर बका करता है—नेट्रम-म्यूर।

" शराब पीनेकी वजहसे— फेरम-फास; कैलि-फास; नेट्रम-म्यूर।

" धीमा, टायफायट ज्वरमें—नेट्रम-म्यूर।

" शोककी वजहसे—कैल्के-फास।

सूतिकोन्माद—कैलि-फास।

हस्तमैथुनके कारण मानसिक दुर्बलता—कैल्के फास।

चक्षु-पर्याय

अंजनी या गुहौरी—साइलिसिया।

अश्रु (आँसू), खाल उधेड देनेवाले—नेट्रम-म्यूर।

" निकलना, सर्दी लगनेकी वजहसे—कैलि-म्यूर।

" " कमजोरीके कारण—नेट्रम-म्यूर।

" " आँखमें हवा लगनेपर—नेट्रम-म्यूर।

अश्रुनलीकी बीमारी—साइलिसिया।

अश्रुनालीकी जखम—साइलिसिया।
” रुकी, सर्दी लगकर—साइलिसिया।
आलोकातंक (रोशनी सहन न होना)—फेरम-फास ; कैल्के-फास।
कनीनिका-प्रदाह, गाढ़ा पीले रंगका स्राव—कैल्के-सल्फ।
” ” गहरा जखम—कैल्के-फास।
कनीनिका-प्रदाह, छाला—नेट्रम म्यूर।
कनीनिकामें फोड़ा—फेरम-फास।
आँख सवेरे सट जाती है, दूधकी तरह मैल लिपटा रहता है—नेट्रम-फास।
” लाल, गहरी लाल—फेरम-फास।
आँखमें दर्द और आँसू बहना, रोज बँधे समयपर—नेट्रम-म्यूर।
आँखके पलकके चारों ओर कड़ापन—साइलिसिया।
” पलकपर दानेकी तरह अनुभव होना—कैल्के-फास।
आँखके किनारे पीले रंगकी पपड़ी—कैलि-सल्फ।
आँखके श्वेत-मंडलका प्रदाह, लसदार या पतला पीवका स्राव—कैलि-सल्फ।
आँखकी पुतली संकुचित—मैग-फास।
” ” फैली—कैलि-फास।
आँखमें दाने निकलना, पलकोंमें—फेरम-फास ; कैलि-म्यूर।
द्वित्व-दृष्टि—मैग-फास।
दृष्टि क्षीण, स्नायविक दौर्बल्यकी वजहसे—कैलि-फास।

कर्ण-पर्याय

कानका प्रदाह—फेरम-फास।
” प्रदाहके बाद पतला पीले रंगका या हरा स्राव—कैलि-सल्फ।
कानमें प्रदाहके साथ ज्वर—फेरम-फास।

कानके दर्दके साथ टपक—फेरम-फास।
,, ,, ,, तालुमूल फूला—कैलि-म्यूर।
,, दर्द बढ़ना, ठण्डेमें—मैग-फास।
,, ,, ,, बरसातमें—नेट्रम-सल्फ।

कानकी हड्डी-सम्बन्धी बीमारी—कैल्के-फ्लुओर।
,, बाहरी भाग फूला—कैलि-सल्फ।

कानके भीतर टपक—साइलिसिया।
,, बाहरी भागमें फोड़ा—साइलिसिया।

कानमें श्लेष्मा अधिक हो जानेके कारण सुन न पड़ना—कैलि-सल्फ।

कानमें फड़फड़ आवाज, नाक छिड़कनेपर—कैलि-म्यूर।
,, ,, ,, निगलने या घूँट लेनेपर—कैलि-म्यूर।
,, स्नायविक दर्दकी वजहसे कम सुन पड़ना—कैलि-म्यूर।
,, नाना प्रकारकी आवाज और ताला लगना (बन्द हो जाना)—कैलि-फास।

कानके निचले भागमें काटनेकी तरह दर्द—कैलि-सल्फ।

कानमें गूँज-सी आवाज—नेट्रम-म्यूर।

स्राव गाढ़ा, रक्त या पीव—साइलिसिया।
,, गाढ़े रंगका रक्त-मिला—कैल्के-फास।
,, सड़ा बदबूदार लार रस बहना—कैलि-सल्फ।
,, मांसके धोवनकी तरह—कैलि-फास।

नासिका-पर्याय

नयी सर्दीके साथ छींक—नेट्रम-म्यूर।
,, ,, ,, छींक, बार-बार—साइलिसिया।

नाकका अगला भाग ठंडा—कैल्के-फ्लुओर।

नाककी हड्डीका क्षय—साइलि ; कैल्के-फ्लुओर।

नाकके भीतर जलन मालूम होना—नेट्रम-सल्फ।

„ भीतर बराबर अंगुली घुसाते रहना—नेट्रम-फास।

नाकका अगला भाग लाल—साइलि।

नाकके पिछले छेदसे नमकीन स्वादका पतला स्राव—नेट्रम-म्यूर ; कैल्के-फास।

नाकके पिछले छेदसे गाढ़ा पीवकी तरह स्राव, पुरानी सर्दी—साइलि ; कैल्के-फास।

नाककी छेदमें वृन्तयुक्त अर्बुद (polypus)—कैल्के-फास।

नाकके छेदके किनारे छोटे-छोटे फोडे—साइलि।

सर्दी नयी, स्वरके साथ—फेरम-फास।

„ कमजोर, दुबले मनुष्योंकी लगातार बनी रहना—नेट्रम-म्यूर।

सर्दीकी वजहसे नाक बन्द—कैलि-म्यूर।

„ स्राव पतला, नमकीन—नेट्रम-म्यूर।

„ पीली आभा लिये गाढा स्राव और नाक खुजलाया करती है—नेट्रम-फास।

सर्दी, पुरानी, स्राव चमकीला, पीले रंगका या हरी आभा लिये—कैलि-फास।

„ „ चमकीला पीले रंगका स्राव, शामको बढ़ जाता है—कैलि-सल्फ।

„ पीवकी तरह स्राव—कैलि-सल्फ ; साइलिसिया।

स्राव, अंडलालकी तरह—कैल्के-फास।

„ दूधकी तरह पीली आभा लिये—नेट्रम-फास।

„ गाढ़ा और सफेद—कैलि-म्यूर।

स्राव, पतला, लसदार पीला या हरा—कैलि-सल्फ।

,, बदबूदार—कैलि-सल्फ।

,, बदबूदार और पीला—साइलिसिया।

,, पीला और रक्त-मिला—कैल्के-फास।

,, साफ, पानीकी तरह—नेट्रम-म्यूर।

मुखमंडल-पर्याय

जबड़ेका अटकना (हनुस्तम्भ)—मैग-फास।

मुखमंडल फूला, शोथयुक्त—नेट्रम-फास।

,, भूरा रंग—कैलि-फास।

,, मिट्टीके रंगकी या रक्त-हीन आकृति—कैल्के-फास।

,, रक्त शून्य, काला, दुःखित भाव—कैल्के-फास।

,, पर मुँहासे—कैल्के-फास, कैल्के-सल्फ।

,, पीव-भरे व्रण—कैल्के-सल्फ।

,, स्नायुशूल—फेरम-फास।

,, ऐंठनकी तरह—मैग-फास।

,, वृद्धि, गरम कमरेमें—कैलि सल्फ।

,, ,, छूनेपर—मैग-फास।

मूछोंकी जड़में दर्द-भरे व्रण—कैल्के-सल्फ।

मूछे झड़ा करती हैं—नेट्रम-म्यूर।

मुँहका भीतरी भाग पर्याय

ओठका कैन्सर—कैलि-म्यूर।

,, उपत्वचाका कैन्सर—कैलि-सल्फ।

,, फड़कना, ऐंठन-मिला—मैग-फास।

ओंठका फटना—कैल्के-फ्लुओर।

दाँत दबाकर बोलता है—मैग-फास।

बच्चोंके मुँहमें घाव—कैलि म्यूर।

,, ,, ,, और बहुत लार बहना—नेट्रम-म्यूर।

बार-बार फेन-भरा श्लेष्मा थूकना—नेट्रम-म्यूर।

,, गला खखारकर लसदार और बदबूदार श्लेष्मा निकला करता है—नेट्रम-सल्फ।

मुँहमें बदबू—कैलि-फास।

,, कैन्सर—कैलि-म्यूर।

,, ,, सड़नेवाला—कैलि-फास।

मुँहका स्वाद बिगड़ा—नेट्रम-सल्फ; कैलि-फास।

,, ,, ,, सवेरे—कैल्के-फास।

,, ,, ,, खट्टा—नेट्रम-फास।

,, ,, तीता—नेट्रम-सल्फ।

मुँहके छालेकी बीमारीमें पीब होना—कैलि-फास।

जिह्वा-पर्याय

जीभ सुन्न, अकड़ी—कैल्के-फास।

,, साफ और लाल—फेरम-फास।

,, फूली और लाल प्रदाह-भरी—फेरम-फास।

,, सूखी, सवेरे मालूम होता है कि तालुमें सट गई है—कैलि-फास।

,, अतिसारके बाद—नेट्रम-म्यूर।

जीभकी नोकमें व्रणकी तरह छाले—कैल्के-फास।

,, कड़ापन—साइलिसिया।

,, ,, प्रदाहके बाद—कैल्के-फ्लुओर; साइलि।

जीभ फूली, प्रदाहके साथ—फेरम-फास ; कैलि-म्यूर।
,, सुन्न, प्रदाहके साथ—कैलि-फास।
,, फूली—कैलि-म्यूर ; कैल्के-फास।
,, जखम—साइलिसिया।
जीभका प्रदाह और उसमें पीव पैदा हो जाना—कैल्के-फास ; साइलि।
जीभ मैल चढ़ी, चिकनी-चिकनी, पतली सरसोंका लेप-चढ़ीकी तरह—
कैलि फास।
जीभके पिछले भागमें भूरा लेप—नेट्रम-फास।
,, ,, ,, पीली आभा लिये पिंगल-वर्णका लेप—नेट्रम-फास।
जीभ साफ, चिकनी मैल—नेट्रम-म्यूर।
,, ,, ,, पीले रंगकी लसदार—कैलि-सल्फ।
,, ,, ,, सफेद रंगकी चिकनी—कैलि-म्यूर।
,, ,, ,, पिछला भाग तर, मलाईकी तरह मैल—नेट्र-सल्फ।
,, ,, ,, पिछला भाग धुमैली आभा लिये सफेद रंगका मैल—कैलि-म्यूर।
तालुमूल और गलनली मैल-चढ़ी, मलाईकी तरह पीली आभा लिये—
नेट्रम-फास।
तालुके पिछले भागमें पीली आभा लिये मैल—नेट्रम-फास।

दन्त-पर्याय

दाँत निकलकर बहुत जल्द क्षय हुआ करते हैं—कैल्के-फास।
दाँत कड़मड़ाना, बालक-बालिकाओंका, निद्रितावस्थामें—नेट्रम-फास।
दाँत असमयमें गिरा करते है—कैल्के-फ्लुओर।
,, स्पर्श सहन न होना, शिथिलताकी वजहसे—कैल्के-फ्लुओर।
दाँतका दर्द, अस्थिवेस्टतक गहरा दर्द—साइलिसिया।

दाँतके दर्दके साथ बहुत ज्यादा लार बहना—नेट्रम-म्यूर ।

,, ,, ,, बहुत ज्यादा आँसू बहना—नेट्रम-म्यूर ।

,, ,, ,, वातका दर्द—मैग-फास ।

,, ,, ,, मसूढ़ा या गाल फूले—फेरम-फास ; कैलि-म्यूर ।

,, नीदकी कमीकी वजहसे—कैलि फास ।

,, मानसिक परिश्रमकी वजहसे—कैलि फास ।

,, बहुत ज्यादा परिश्रमकी वजहसे—कैलि-फास ।

,, स्नायु-प्रधान व्यक्तियोंके लिये—कैलि फास ; मैग-फास ।

दाँतका दर्द घटना, गर्म सेंग या गर्म पानीके प्रयोगसे—मैग-फास ।

,, ,, ,, धीरे-धीरे हिलनेपर—कैलि-सल्फ ।

,, ,, ,, सर्द प्रयोगसे—फेरम-फास ।

,, ,, ,, ठण्डे पानीसे—फेरम-फास ।

,, ,, बढ़ना गर्म कमरेमें—कैलि-सल्फ ।

,, ,, ,, हिलनेपर—फेरम-फास ।

,, ,, ,, सन्ध्याके समय—कैलि-सल्फ ।

दाँत निकलनेके समय बच्चेको बहुत लार बहना—नेट्रम-म्यूर ।

,, ,, ,, ,, अकड़न—मैग-फास ।

,, ,, ,, ,, अतिसार—नेट्रम-फास ।

,, निकलनेमें विलम्ब—कैल्के-फास ।

कण्ठ-पर्याय

उपजिह्वा लम्बी, झूला करती है—कैल्के-फ्लुओर ।

,, ,, इसके साथ ही खुसखुसी खाँसी—कैल्के-फ्लुओर ।

,, मोटी—नेट्रम-म्यूर ; कैल्के-फास ।

कंठ लाल और प्रदाहग्रस्त—फेरम-फास ।

कंठनलीका आक्षेप—मैग फास ।

कंठकी श्लैष्मिक-झिल्ली प्रदाहग्रस्त और उसमें पानीकी तरह स्राव—
नेट्रम म्यूर ।

गलेका जखम, ज्वर और दर्दके साथ—फेरम-फास ।

„ „ सफेद या भूरे रंगका पीव होना—केलि-म्यूर ।

गलगंड (घेघा रोग)—साइलि ; केल्के-फास ।

„ रोगके साथ पीव होना—केलि-फास ; नेट्रम-म्यूर ।

डिफ्थीरिया, मुखमंडल शोथयुक्त और भूरा—नेट्रम-म्यूर ।

„ के साथ लार बहना—नेट्रम-म्यूर ।

„ के साथ हरा वमन—नेट्रम-सल्फ ।

„ के साथ पानीकी तरह वमन—नेट्रम-म्यूर ।

तालुमूल-ग्रन्थि (टानसिल) प्रदाहग्रस्त—फेरम-फास ; नेट्रम-फास ।

तालुमूल-ग्रन्थिकी बहुत दिनोंतक स्थायी सूजन—केल्के-फास ।

„ „ के ऊपर भूरे रंगकी सफेद उपत्वचा—केलि-म्यूर ।

निगलनेमें दर्द—केल्के-फास ।

निगलनेकी चेष्टा करनेपर श्वास रुकनेकी तरह हो जाना—मैग्नेशिया-फास ।

पाकाशय-पर्याय

अखाद्य खानेकी इच्छा, बालक-बालिकाओंका—केल्के-फास ।

अजीर्णकी वजहसे आध्मान—नेट्रम-फास ।

„ „ उदर-शूल—मैग-फास ; फेरम-फास ।

„ „ ज्वर—फेरम-फास ।

„ „ „ तीसरे पहर, बढ़ना—केलि-सल्फ ।

„ „ सरमें चक्कर—नेट्रम-फास ।

„ „ सर-दर्द—नेट्रम-फास ।

डकार, बार-बार—साइलि।

डकारसे घटना—कैल्के-फास।

डिस्पेप्शिया (मन्दाग्नि), खट्टी डकार—कैलि-फास।

" भोजनके बाद चेहरा लाल और उदरमें नाडी स्पन्दन—फेरम-फास।

" मुँहमें पानी भर आया करता है—नेट्रम-म्यूर।

" जीभपर पीली आभा लिये चिकना मैल—कैलि-सल्फ।

" जीभपर सफेद आभा लिये धुमैला मैल—कैलि-म्यूर।

पाकाशयमें जखम, सामन्य भोजन भी सहन नहीं होता—नेट्रम-फास।

" " वमन खट्टा, काफीके चूरकी तरह—नेट्रम-फास।

" भार मालूम होना—कैल्के-फास।

" दर्द अम्लकी अधिकताकी वजहसे - नेट्रम-फास।

" " क्रिमिकी वजहसे—नेट्रम-फास।

" " के साथ अवसन्नता—कैलि-फास।

" " के साथ कब्जियत—कैलि-म्यूर।

" " के साथ पतले दस्त—फेरम-फास।

" " थोडा-सा भी खानेपर—कैल्के-फास।

" स्पर्श सहन न होना—फेरम-फास ; कैल्के-फास।

" बीमारी, खट्टी चीज खाकर—मैग-फास।

" " पीठीकी चीजे खाकर—कैलि-म्यूर।

पित्त-शूल—नेट्रम-सल्फ।

भूख, अस्वाभाविक—नेट्रम म्यूर।

भूख, पर खानेपर बेचैनी मालूम होना—कैल्के-फास।

भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द—कैल्के-फास ; नेट्रम-फास ; नेट्रम-म्यूर।

भोजनके बाद पाकाशयमें दर्द, डकारसे घटना—कैल्के-फास।

यकृतमें दर्द—नेट्रम-सल्फ ।

यकृतके पास काटनेकी तरह दर्द—नेट्रम-सल्फ ।

यकृतमें तेज और बेधनेकी तरह दर्द—नेट्रम-सल्फ ।

यकृतमें फोड़ा—साइलि ।

" " और पीव बहना—कैल्के-सल्फ ।

" उपदाह और मानसिक परिश्रमकी अधिकताके कारण—नेट्रम-सल्फ ; कैलि-फास ।

यकृतमें कड़ापन—साइलि ।

लवण और लवण-मिले पदार्थ खानेकी इच्छा—नेट्रम-म्यूर ।

वमन, खायी हुई चीज मिला—फेरम-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

" चमकीला लाल रंगका रक्त—फेरम-फास ।

" काला जमा हुआ रक्त—कैलि-म्यूर ।

" पानीकी तरह और नमकीन स्वाद—नेट्रम-म्यूर ।

" पित्त-मिला—नेट्रम-सल्फ ।

" बरफ और ठण्डे पदार्थ खानेकी वजहसे—कैल्के-फास ।

" सफेद गाढ़ा श्लेष्माकी तरह—कैलि-म्यूर ।

" " लसदार श्लेष्माकी तरह—कैलि-म्यूर ।

वमनोद्रेक (ओकाई, मिचली), खट्टे उच्छ्वासके साथ—नेट्रम-फास ।

" पेटमें खालीपन मालूम होनेके साथ—कैलि-फास ।

" सवेरे, दो पहरके पहले—नेट्रम-म्यूर ।

स्वाद, मुँहमें खट्टा—नेट्रम म्यूर ।

" " तीता—नेट्रम-सल्फ ।

" " " सवेरे—साइलिशिया ।

" " सड़ा स्वाद—नेट्रम-म्यूर ।

अंत्र-पर्याय

अधोवायु, गन्धककी तरह गन्ध निकलती है—कैलि-सल्फ ।

,, निकलना, बहुत अधिक—मैग-फास ।

आँतोंका जखम—नेट्रम-फास ; कैल्के-सल्फ ।

,, क्रिमी—नेट्रम-फास ।

एपेण्डिसाइटिस, आरम्भ—फेरम-फास ।

,, द्वितीय पर्याय—कैलि-म्यूर ।

,, झुका ठसा हुआ—कैल्के-फास ।

काँच निकलना (मलद्वार निकल पडना)—कैल्के-फ्लुओर ; कैलि-फास ।

तलपेट आध्मानयुक्त—कैलि-सल्फ ।

,, छूनेपर ठण्डा—कैलि-सल्फ ।

,, फूला—कैलि-फास ; कैलि-म्यूर ।

बवासीर, अंडलालकी तरह स्राव—कैल्के-फास ।

,, चमकीले लाल रंगका रक्त—फेरम-फास ।

,, काला गाढ़ा रक्त निकलना—कैलि-म्यूर ।

,, कब्जियतके साथ—नेट्रम-म्यूर ।

,, खुजली—फेरम-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

,, मस्सेमें सुई गडनेकी तरह दर्द मालूम होना—नेट्रम-म्यूर ।

,, दर्द भरा, स्पर्शका सहन न होना—कैल्के-फ्लुओर ।

बवासीरके साथ खूनकी कमी और दुबलापन—कैल्के-फास ।

,, रक्तकी अधिकता, माथेमें—फेरम-फास ; कैल्के फ्लुओर ।

,, मलद्वारमें खुजली—नेट्रम-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

,, ,, ,, और दर्द—कैल्के फ्लुओर ।

मलद्वारमें जलन और दर्द—नेट्रम-म्यूर ।

मलद्वारमें दर्द—कैलि-म्यूर ।
,, नासूर, बिना दर्दका—कैल्के-फास ।

मल-पर्याय

अतिसार और कब्ज, पर्यायक्रमसे—नेट्रम-म्यूर ।
,, हैजामें भातके माँडकी तरह—कैलि-फास ।
,, कच्चे फल खाकर—कैल्के-फास ।
,, गर्मीमें अजीर्णकी वजहसे—कैल्के-फास ।
,, दाँत निकलनेके समय बच्चोंकी—कैल्के-फास ।
,, बरसातके दिनोंमें—नेट्रम-सल्फ ।
,, बुढ़ापेमें—नेट्रम-सल्फ ।
कब्जियत, आँतोकी श्लैष्मिक-झिल्लीके सूखनेके कारण—नेट्रम-म्यूर ।
,, शरीरकी दूसरी ओरका जलीय अंश क्षय हो जानेकी वजहसे—नेट्रम-म्यूर ।
,, बुढ़ापे और बचपनमें—कैल्के-फास ।
,, यक्ष्मा रोगमें—कैल्के-फास ।
कब्जियतके साथ तन्द्रालुता—नेट्रम-म्यूर ।
,, माथेमें भार—नेट्रम-म्यूर ।
,, माथमें फेन-भरा श्लेष्मा वमन—नेट्रम-म्यूर ।
प्रवाहिका (आमाशय). अंत्र-शूल, दबाने और गर्म सेक देनेपर घटना—मैग-फास ।
,, आम (आँव) और रक्त-मिला मल, भयानक अंत्र-शूल—कैलि-म्यूर ।
,, आम गाढी थक्का-थक्का—नेट्रम-फास ।
,, पीव और खून-मिला मल—कैल्के-सल्फ ।

अवाहिक, बार-बार मल-वेग—कैलि-म्यूर।
„ आरम्भ—फेरम-फास।

मूत्र-पर्याय

अक्षमता, पेशाब रोक न सकना, स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे—कैलि-फास।

अनैच्छिक पेशाब, इच्छा न रहनेपर भी आप-ही-आप पेशाब होते जाना, चलनेपर—नेट्रम-म्यूर।
„ „ संकोचक पेशीकी पक्षाघातकी वजहसे—कैलि-फास।

अंडलाल निकलना, पेशाबके साथ—कैलि-फास ; कैल्के-फास।

पथरी और पित्त धातुवाले मनुष्योंका—फेरम-फास।

पथरी और प्रतिषेधक—कैल्के-फास।

पथरी और पेशाबमें तली जमती है—नेट्रम-सल्फ ; कैल्के-फास।
„ वातके लक्षणके साथ—नेट्रम सल्फ।

पेशाब, घोर लाल रंगका, वात रोगके साथ—नेट्रम-फास।
„ गहरे रंगका—कैल्के-फास ; फेरम-फास।
„ „ „ ज्वरमें—नेट्रम-फास ; फेरम-फास।
„ „ „ यकृतके दोषकी वजहसे मूत्राम्लका निकलना, बढ़ना—कैलि-म्यूर।

पेशाबकी तली फास्फेट्स—कैल्के-फास।
„ „ सुरखीकी तरह—नेट्रम-सल्फ।
„ „ परिमाणमें बढ़ना—कैल्के-फास।
„ „ पीव और श्लेष्मा ज्वरके बाद—साइलिसिया।

पेशाब करनेके बाद जलन मालूम होना—नेट्रम-म्यूर ; फेरम-फास।

पेशाब करनेके बाद मूत्रपिंडके ऊपर जलन—फेरम-फास।

पेशाब न होना, गर्मीकी अधिकताकी वजहसे—फेरम-फास ।

बार-बार पेशाबका वेग—नये उपसर्ग—फेरम-फास ।

,, ,, ,, पर कुछ न होना—नेट्रम-म्यूर ।

,, ,, ,, और पेशाब न रोक रख सकना, बालक-बालिकाओंमें अम्लकी अधिकताके साथ—नेट्रम-फास ।

,, ,, ,, रातके समय—नेट्रम-म्यूर ।

वृक्क-प्रदाह—फेरम-फास ।

,, ,, द्वितीय पर्याय—कैलि-म्यूर ।

वृक्क-प्रदाह—तृतीय पर्याय—साइलिसिया ।

ब्राइट रोग—कैलि-फास ; कैल्के फास ।

ब्राइट रोगके साथ ज्वर और रक्तकी अधिकता—फेरम-फास ।

मधुमूत्र—कैल्के-फास ; नेट्रम सल्फ ।

,, के साथ ज्वर और रक्तकी अधिकता—फेरम-फास ।

मूत्रनलीसे रस निकलना—कैलि-फास ।

मूत्रमेह—नेट्रम-म्यूर ।

मूत्राशय-प्रदाह, आरम्भ—फेरम-फास ।

,, ,, द्वितीय पर्याय, सूजन, सफेद लसदार स्राव—कैलि-म्यूर ।

,, ,, तृतीय पर्याय—कैल्के-सल्फ ।

,, ,, पुराना—फेरम-फास ; कैलि-म्यूर ; कैल्के सल्फ ।

,, ,, पीली आभा लिये लसदार पीवका स्राव, मूत्रनलीकी राहसे—कैलि-सल्फ ।

मूत्राशयकी अकड़न और बहुत कूथन होना—मैग-फास ; फेरम-फास ; कैलि-फास ।

सर्दी, साफ पानीकी तरह स्राव—नेट्रम-म्यूर ।

शय्या-मूत्र बिछावनमें पेशाब कर देना, क्रिमिकी वजहसे पैदा हुए उपसर्ग—नेट्रम-फास ।

पु०-जननेन्द्रिय-पर्याय

आर्काइटिस (मुष्क-प्रदाह)—फेरम-फास ; कैल्के-फास ।

,, रुके हुए सूजाककी वजहसे—कैलि-म्यूर ; कैल्केरिया-फास्फोरिका ।

अंडकोषमें खुजली—कैलि-फास ; साइलिसिया ।

,, ढीले—कैल्के-फास ।

अंडकोषका कड़ापन—कैल्के-फ्लुओर ।

,, पसीना अधिक होना—कैल्के-फास , साइलिसिया ।

,, जल-संचय (hydrocele)—कैल्के-फास ; नेट्रम-म्यूर ; नेट्रम-फास ।

,, शोथ—कैल्के-फ्लुओर ; कैल्के-फास ।

उपदंश (गर्मी रोग), गलित क्षत—कैलि फास ।

,, पुराना, तन्तुओंका कड़ापन और पीव होना—साइलिसिया ।

,, रस बहना—नेट्रम-म्यूर ।

,, सफेद स्राव—कैलि-म्यूर ।

,, सन्ध्यामे वृद्धि—कैलि-सल्फ ।

उपदंशकी गोटियाँ—नेट्रम-सल्फ ।

पुट्ठेके पासकी अंत्र-वृद्धि (inguinal hernia)—कैल्के-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

प्रमेह (सूजाक—गोनोरिया)—कैलि-म्यूर ।

,, नया प्रदाह—फेरम-फास ।

,, पुराने [illegible] गाढ़ा स्राव—साइलिसिया ।

प्रमेह, पुराने, सफेद, पतला, खाल उधेड़नेवाला लसदार स्राव—नेट्र-म्यूर ।
,, पीव और खून-मिला स्राव—कैल्के-सल्फ ।
,, हरी आभा लिये या पीली आभा लिये स्राव—कैलि-सल्फ ।
बाघी, आरम्भमें, ज्वर, दर्द और टपक—फेरम-फास ।
,, सूजाक या उपदंशसे उत्पन्न, उससे पीव—कैल्के-सल्फ ।
,, सूजाक, हल्का—कैलि-म्यूर ।
बीर्यस्खलन, बिना स्वप्नके ही—नेट्रम-फास ।
मुष्ककी शिराकी सूजन (varicocele)—फेरम-फास ।
रतिकी इच्छा, बहुत अधिक—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, अनियमित—नेट्रम-फास ।
,, ,, सहजमें ही पैदा होना—साइलिसिया ।
लिंगाग्र चर्म फूला—नेट्रम-सल्फ ; नेट्रम-म्यूर ।
हस्तमैथुनका अभ्यास—कैल्के-फास ।

स्त्री-जननेन्द्रिय-पर्याय

गोनोरिया (सूजाक) की पहली अवस्था—फेरम-फास ।
,, बढ़ी हुई अवस्था—कैलि-म्यूर ; कैलि-सल्फ ; कैल्के-सल्फ ।
जरायु निकलना और दूसरे-दूसरे प्रकारकी स्थान-च्युति—कैल्के-फास ।
जरायुका सामनेकी ओर घूम जाना (anti-version)—कैल्के-फ्लुओर ।
,, स्थान-च्युति (अपनी जगहसे हटना)—कैल्के-फ्लुओर ; कैल्के-फास ; कैलि-फास ।
,, जखम, ग्रीवा (cervix) में—कैलि-म्यूर ।
,, ,, जरायु-मुख (os) में—कैलि-म्यूर ।
,, कड़ापन, पत्थरकी तरह—कैल्के-फ्लुओर ।
जरायुकी शिथिलता, थुलथुला भाव—कैल्के-फ्लुओर ।

जरायुकी स्राव, अम्ल-गुण-विशिष्ट—नेट्रम-फास ।
,, ,, दहीके ऊपरकी तरह पीला—नेट्रम-फास ।
,, ,, तरल पानीकी तरह पीला—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, कमजोरीकी वजहसे—कैल्केरिया-फास ; कैल्के-फ्लुओर ; केलि-फास ।

जरायुका प्रदाह—फेरम-फास ; केलि-म्यूर ।
,, ,, और दर्द—कैल्के-फास ।

डिम्बाशयका (ovaries) स्नायविक दर्द—मैग-फास ।

प्रदर, अंडलालकी तरह स्राव—कैल्के-फास ।
,, अम्ल-गुण-स्राव, रतिलिप्सामें उत्तेजना—कैल्के-फास ।
,, ,, ऋतुस्रावके बाद बढ़ना—कैल्के-फास ।
,, स्राव, खीरकी तरह पीली आभा लिये—नेट्रम-फास ।
,, ,, गाढ़ा पीला खून मिला—कैल्के-फास ।
,, ,, पानीकी तरह पतला लसदार, खाल उधेडनेवाला—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, दूधकी तरह सफेद, उपदाह-विहीन—केलि-म्यूर ।
,, ,, लसदार-और हरो आभा लिये—केलि-फास ।
,, ,, खाल उधेडनेवाला, योनि-स्थानमें खुजली—नेट्रम-फास ।

वन्ध्यत्व, रजःस्रावके अम्लत्वकी वजहसे—नेट्रम-फास ।

वाधकका दर्द—मैग-फास ।

भगोष्ठमें खुजली—नेट्रम-म्यूर ; कैल्के-फास ।

रजःस्रावके समय कब्जियत—साइलि ; नेट्रम-सल्फ ।
,, ,, रुलाई आना—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, क्रोध आना—केलि-फास ।
,, ,, तलपेटमें निम्नगामी दर्द—कैल्के-फ्लुओर ।

रजःस्रावके समय, तलपेटमें भार मालूम होना—कैलि-सल्फ ।
” ” प्रदरका स्राव होना—नेट्रम-म्यूर ।
” ” पीठमे दर्द—कैल्के-फास ।
” ” प्रवल रतिलिप्सा—कैल्के-फास ।
” ” सवेरेके समयका अतिसार—नेट्रम-सल्फ ।
” ” उदासी—नेट्रम-म्यूर ।
” ” चेहरा लाल हो जाना—फेरम-फास ; कैल्के-फास ।
” ” ललाटमें दर्द—नेट्रम-फास ।
” ” हाथ-पैरका ठण्डापन—कैल्के-फास : फेरम-फास ।
” ” सर-दर्द—नेट्रम-म्यूर ; फेरम-फास ; कैलि-फास ।
” ” समूचा शरीर बरफकी तरह ठंडा—साइलि ।
” ” स्नायु-प्रवणता—कैलि-फास ।
” बहुत ज्यादा मात्रामें—कैलि-फास ; कैलि-म्यूर ; कैल्के-फ्लुओर ।

रजःस्रावका रक्त, पानकी तरह पतला—नेट्रम-म्यूर ; कैलि-फास ।
” रक्त, डोरीकी तरह लम्बा, सौत्रिक पदार्थ मिला—मैग-फास ।
” रक्त, लाल रंगका चमकीला—फेरम-फास ।
” रुका हुआ—कैलि-म्यूर ।
” देरसे, युवतियोंका—नेट्रम-म्यूर ।
” होनेके पहले तकलीफका बढ़ जाना—मैग-फास ।

योनिमें जलन ओर खुजली—साइलिसिया ।

योनिमें जलन, पेशाब करने बाद—नेट्रम-म्यूर ।

योनिकी कमजोरी, पेशाबके बाद—नेट्रम म्यूर ।

योनिका सूखापन—नेट्रम म्यूर ।

योनिके साथ योनिके भीतर आक्षेप—फेरम-फास ।

योनिके स्थानके केश झड़ना—नेट्रम-म्यूर ।

गर्भिणी-पर्याय

अकड़न—मैग-फास ।

चित्त-विकलता—केलि-म्यूर ; केलि-फास ।

गर्भपात, कमजोरीके कारण—केलि-फास ।

,, अजीर्ण खायी हुई चीजका वमन—फेरम-फास ।

गर्भावस्थामें खट्टे पानीकी तरह वमन—नेट्रम-फास ।

,, पित्त-वमन—नेट्रम-सल्फ ।

,, वमन, फेन-भरा श्लेष्मा निकलना—नेट्रम-म्यूर ।

,, ,, सफेद श्लेष्मा—केलि-म्यूर ।

,, मुँहमें तीता स्वाद—नेट्रम-सल्फ ।

प्रसव-पथ फटा (आरोग्यकी सहायताके लिये)—फेरम-फास ।

प्रसवका दर्द, बहुत अधिक कूथन—मैग-फास ।

,, ,, क्षीण और बहुत देरतक स्थायी—केलि-फास ।

,, ,, नियमित और निष्फल—केलि-फास ।

,, ,, बिजलीकी लहरकी तरह आता-जाता है—मैग-फास ।

प्रसवके साथ पैरोंमें ऐंठन—मैग-फास ।

प्रसवके बादका ज्वर (सूतिका ज्वर—puerperal fever)—केलि-फास ; फेरम-फास ; केलि-म्यूर ।

प्रसवके बादका दर्द—फेरम-फास ।

,, ,, ,, क्षीण—केल्के-फ्लुओर ।

स्तन-प्रदाह, ज्वर-सूचना—फेरम-फास ।

,, पीव पैदा होना रोकनेके लिये—साइलिसिया ।

स्तन-प्रदाह, पीव-भरा—कैल्के-सल्फ ; साइलिशिया।
,, मलिन, भूरे रंगका बदबूदार—कैलि-फास।
स्तन कडा, नासूरका जखम—साइलि।
स्तनके घुण्डीमें फटे घाव या जखम—फेरम-फास ; कैल्के-फास।
,, दूध, पानीकी तरह—नेट्रम-म्यूर ; नेट्रम-फास।
,, दूधमें नमकीन स्वाद—नेट्रम-म्यूर।
स्तनका दूध सन्तान नही पीना चाहती है—कैल्के-फास।
,, ,, बहुत दिनोंतक पिलानेके कारण कमजोरी—कैल्के-फास।

श्वासयंत्र-पर्याय

उपजिह्वा बढ़ी—कैल्के-फ्लुओर।
खाँसी, आँसू बहनेके साथ—नेट्रम-म्यूर।
,, ऊँची आवाजमें—कैलि-म्यूर।
,, कडी, सूखी—फेरम-फास ; मैग-फास।
,, गलेमें घरघर आवाज—कैलि-सल्फ।
,, दुर्गन्धित श्लेष्मा—कैलि-फास।
,, पीवकी तरह थक्का—कैल्के-सल्फ।
,, छातीमें घरघर आवाज—कैलि-म्यूर ; नेट्रम-म्यूर।
,, विलेपी ज्वरके साथ—कैल्के-सल्फ।
,, रातके समय एकाएक आक्रमण, सोनेपर बढना—मैग-फास।
,, बच्चोंका दाँत निकलना—कैल्के-फास।
,, के साथ अनैच्छिक पेशाब—नेट्रम-म्यूर।
,, घटना, खुली हवामें—कैलि-सल्फ।
,, बढना, तीसरे पहर—कैलि-सल्फ।
,, ,, तीसरे पहर—कैलि-सल्फ।

दमा (एजमा), डकारके साथ—मैग-फास ।

„ कठिन खाँसी—मैग-फास ।

„ खाँसीके साथ छोटे-छोटे श्लेष्माके टुकड़े निकलना—कैलि-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

„ वदबूदार श्लेष्मा—कैलि-फास ।

„ पाचन-विकारके साथ—कैलि-म्यूर ।

„ सवेरेके वक्त पतले दस्त, उपसर्ग—नेट्रम-सल्फ ।

„ वक्षस्थलमें अकडन—फेरम-फास ।

„ „ दर्द—मैग-फास ।

„ वलगम निकलना, कष्टसाध्य—कैल्के-फ्लुओर ।

„ सो नही सकता, श्वासकष्टके कारण—मैग-फास ; कैलि-फास ।

न्युमोनिया, प्रति वर्ष सर्दीके दिनोंमें खाँसी—नेट्रम-म्यूर ।

पीठ और हाथ-पैर पर्याय

अंग-प्रत्यङ्ग कडे—कैलि-फास ।

अंग-प्रत्यंगमें पक्षाघात—कैलि-फास ।

„ दर्द—कैलि-फास ।

अंगुलबेढ़ा—कैल्के-फास ; फेरम-फास ।

अंगुलीमें दर्द, वात या अन्य कारणसे प्रदाहग्रस्त—फेरम-फास ।

अनुभूति, सारा शरीर ठंडा, पानीमें भीगे रहनेकी तरह—कैल्के-फास ।

अर्वुद—कैल्के-फास ।

अस्थिका जखम—साइलि ; कैल्के-फास ; कैल्के-सल्फ ।

अस्थिका क्षय, नासूर पैदा हो जाना—साइलिसिया ।

अस्थिका कोमल और लचीला—कैल्के-फास ।

कटि-वात—कैल्के-फास ; फेरम-फास ।

कटि-वात, खोंचनकी तरह दर्द—कैल्के-फ्लुओर ।

कड़ापन, किसी अंगमें सूजनके साथ—कैल्के-फ्लुओर ।

,, गर्दनकी पेशीका—फेरम-फास ।

ग्रीवा-ग्रन्थियोंका बढ़ना—कैलि-म्यूर ।

गुदास्थिमें चोट—कैल्के-फास ।

चंचल, हमेशा—नेट्रम म्यूर ।

जखम, हाथ-पैरोंमें—कैलि-म्यूर ।

,, सूजनवाली शिरामें—कैल्के-फ्लुओर ।

,, से छोटे-छोटे हड्डीके टुकडे निकलना—साइलि ; कैल्के-फ्लुओर ।

जलन, तलवेमें और यक्ष्मा—कैल्के-सल्फ ।

दर्द, स्थिर भावसे रहनेपर अनुभव होता है—कैलि-फास ।

,, बरसातमें बढ़ जाना—नेट्रम-सल्फ ; कैल्के-फास ।

,, रातके समय बढ़ना— कैल्के-फास ।

,, कुचल जानेकी तरह—कैलि-फास ।

,, मोच आ जानेकी तरह—फेरम-फास ।

देरसे चलना सीखना—नेट्रम-म्यूर ; कैल्के-फास ।

पसीनेमें खट्टी गन्ध—नेट्रम-फास ।

पीठमें कार्बङ्कल, जल्दीसे पीब पैदा कर देनेके उद्देश्यसे—साइलि ।

,, ,, पीब पैदा होनेके बाद—कैल्के-सल्फ ।

,, दर्द—नेट्रम-म्यूर ; फेरम-फास ।

,, ,, हिलाने या कडी जगहपर सोनेसे घटना—नेट्रम-म्यूर ।

,, सर्दी मालूम होना—नेट्रम-म्यूर ।

पैरोंका आप-ही-आप हिलना—नेट्रम-म्यूर ।

वात व्याधि और ज्वर-प्रदाह—फेरम-फास ।

वात, सर्दी लगकर—फेरम-फास ।

वात, नयी, सन्धि स्थानोंपर आक्रमण—मैग-फास ।
,, पित्तकी अधिकताके कारण—नेट्रम-सल्फ ।
,, वंक्षणकी जगहपर—मैग-फास ।
,, मेरुदंडमें उपदाह—कैल्के-फास ।
वातव्याधि, बैठनेकी अवस्थासे उठनेकी चेष्टा करनेपर बढ़ना—कैल्के-फास ।
वृक्कमें प्रदाहकी तरह दर्द—फेरम-फास ।
मेरुदंडका टेढ़ा पड़ जाना—कैल्के-फास ।
श्रोणि-फोस्फोटक (Psoas abscess)—साइलिसिया ।
सन्धिके स्थानोंमें खटखट आवाज, हिलनेपर—नेट्रम फास ।
सन्धि-वात—फेरम-फास ; नेट्रम-सल्फ ।
सन्धिस्खलन, सहजमें ही खसक जाती है—कैल्के फ्लुओर ।
,, घुटनेमें जलन संचय—कैल्के-फास ।
सन्धि-स्थान और वक्षण-सन्धिकी पहली अवस्थामें— फेरम-फास ।
,, और वंक्षण-सन्धिका पीव रोकनेके लिये—साइलि ।
स्नायविक दर्द, अस्थियोंमें मालूम होना—कैल्के-फास ।
" " घटना, ठण्डी हवामें—कैलि-सल्फ ।
" " पीठमें—कैलि-सल्फ ; नेट्रम-फास ।
" " बढ़ना, गरम घरमें—कैलि-सल्फ ।
" " " तीसरे पहर—कैलि-सल्फ ।
" " रातके समय आराम—कैल्के-फास ।
" " शीर्ण बालक-बालिकाओंका—कैल्के-फास ।
" " हाथ-पैरोंमें—मैग-फास ; नेट्रम-फास ।
हाथ-पैरकी पुरानी सूजन—कैलि-म्यूर ।

त्वचा-पर्याय

आमवात—नेट्रम-फास ।
” भीषण खुजली—नेट्रम-म्यूर ।
” शरीर गरम होनेपर—नेट्रम-म्यूर ।
अंगुलवेढ़ा, गहरा गाढ़ा पीले रंगका भारी पीव निकलता है—साइलि ।
” बदबूदार पीव—कैलि-फास ।
” प्रदाह, गर्मी, स्पंदन और दर्द दूर करनेके लिये—फेरम-फास ।
उरुदेशमें खरोच, खाल उधड जाना और खाल उधेड़नेवाला रस निकलना—फेरम ।
एकजिमा (अकौता), बहुत नमक खानेके कारण—नेट्रम-म्यूर ।
” स्पर्श एकदम सहन नही होता—कैलि-फास ।
” गाढ़े दूधकी तरह, खट्टा स्राव—नेट्रम फास ।
” चर्मोद्भेद, एकाएक बैठ जानेके बाद—कैलि-म्यूर ।
” जरायुकी गडबड़ीकी वजहसे—कैलि-म्यूर ।
” पीली आभा लिये पपडी जमना—कैल्के-फास ।
” पीली आभा लिये पपडीके साथ सफेद स्राव होना—नेट्रम-म्यूर ; कैलि-म्यूर ।
कीडे काटना—नेट्रम-म्यूर ।
कुष्ठ-रोग, जखम-भरा—कैल्के-फास ; कैलि-म्यूर ।
” दानेदार—साइलिसिया ।
” ताँबेके रंगका—साइलिसिया ।
” नाकमें जखम—साइलिसिया ।
खुजली, जुलपित्तीकी तरह—कैल्के-फास ।
” किसी तरहका दाना या गोटियाँ नही निकलती हैं—कैल्के-फास ।
” कपड़ा उतारनेपर—नेट्रम-सल्फ ।

खुजली और चमड़ेके नीचे चींटी रेंगनेकी तरह अनुभव होना—कैलि-फास ; कैल्के-फास ।

चमड़ा सिकुडा—कैलि-फास ।

चर्म-रोग, दूषित टीका लेनेके बाद—कैलि-म्यूर ; साइलि ।

छाले, जल-भरे—नेट्रम-म्यूर ।

,, पतले खून-मिले रसका स्राव—कैलि-फास ।

जखम, जल्दी आराम नहीं होता है—कैल्के-सल्फ ।

दूषित-व्रण—कैलि फास ।

नख अंगुलीके चमडेमें घुस जाता है—कैलि-म्यूर ; साइलि ।

नखके चारों ओर जखम—साइलि ।

नखकी बीमारी—कैलि-सल्फ ; साइलि ।

नखका बढ़ना रुका हुआ—कैलि-सल्फ ; साइलि ।

पसीना ज्यादा, माथेमें, बचपनमें—साइलि ।

,, ,, तलहत्थीमें, कमजोरीके साथ—कैल्के-सल्फ ।

,, ,, तलवेमें, बदबूदार—साइलि ।

पसीना न होना, चमडा सूखा—कैलि-सल्फ ।

बच्चोंका चमडा खाल उधड़ा और फटा—नेट्रम-सल्फ ; नेट्रम-फास ; नेट्रम-म्यूर ।

मसा—कैलि-म्यूर ।

,, तलहत्थीमें—नेट्रम म्यूर ।

व्रण, छोटे-छोटे, मच्छड काटनेकी तरह, सारे शरीरमें—नेट्रम-फास ।

,, दाढ़ीके नीचे—कैलि म्यूर ।

,, मोटी, सफेद पपडी—कैलि-म्यूर ।

,, समूचे चेहरेमें—कैल्के-फास ।

सर्दीके कारण हाथ-पैरका फटना—फेरम-फास ; कैल्के-फ्लुओर ।

ज्वर-पर्याय

ज्वर, अजीर्ण दोषके कारण—फेरम-फास ।
,, प्यास अधिकताके साथ—नेट्रम-म्यूर ।
,, पीव पैदा होनेकी वजहसे— साइलि ।
,, पैत्तिक— नेट्रम-सल्फ ।
,, प्रदाहकी वजहसे, पहली अवस्थामें—फेरम-फास ।
,, ,, ,, दूसरी अवस्थामे—कैलि-म्यूर ।
,, विलेपी, तलवेमें जलन—साइलि ।
,, मस्तिष्कका प्रदाह, धीमा प्रलाप—कैलि-फास ।
,, रक्तमें विष फैल जाना—कैलि-सल्फ ; कैलि-फास ।
,, शीत, प्यास, दिनके १० बजे—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, उत्तापके पहले—फेरम-फास ।
,, ,, और कम्पनकी अधिकता, दाँत कटकटाना—मैग-फास ; कैलि-सल्फ ।
,, ,, पीठमें—नेट्रम-म्यूर ।
,, वमन, भूरे रंगका या काला—नेट्रम-सल्फ ।
,, ,, पानीकी तरह—नेट्रम-म्यूर ।
,, ,, तीता स्वाद पतला—नेट्रम सल्फ ।
टाइफायड ज्वर (सान्निपातिक ज्वर), पहली अवस्थामें—फेरम-फास ।
,, ,, सड़नेवाला, उत्कट अवस्थामें—कैलि-फास ।
,, ,, सड़ा खून-मिला दस्त—कैल्के-सल्फ ।
,, ,, बढ़ा करता है—कैलि-सल्फ ।
,, ,, साथ कब्ज—कैलि-म्यूर ।
,, ,, तन्द्रालुता, बेहोशीका भाव, पेशीका खीचन, पानीकी तरह वमन—नेट्रम-म्यूर ।

टाइफायड ज्वर, धीमा प्रलाप, पतनावस्था—कैलि-सल्फ।

,, ज्वरमें, देह-तन्तुके फिरसे गठन करने योग्य दवा—कैलि-म्यूर।

वात-ज्वरमें—फेरम-फास ; कैलि-म्यूर।

ज्वर सविराम, बहुत अधिक पसीनेमें बदबू, तेज प्यासका रहना—कैलि-फास।

,, ,, के साथ कँपकँपी, खायी हुई चीजकी कै, वेगवती नाड़ी—फेरम-फास।

,, ,, किनाइनसे सडा हुआ बुखार—नेट्रम-म्यूर।

,, ,, नये हल चले खेतमें रहनेकी वजहसे—नेट्रम-म्यूर।

,, ,, पैरकी पोटलीमें ऐंठन—मैग-फास।

,, ,, सीड-भरी जगहमें रहनेकी वजहसे—नेट्रम-म्यूर।

सर्दी ज्वर, वेगमती नाड़ी—फेरम-फास।

पसीना होना, बहुत अधिक—कैलि-फास।

,, खट्टी गन्ध—नेट्रम-फास।

,, होना, दिनके समय—नेट्रम-म्यूर।

,, प्रबल, कमजोर करनेवाला, भोजनके समय—कैलि-फास।

,, होनेमें मदद देनेवाला—कैलि-सल्फ।

निद्रा-पर्याय

अनिद्रा, उत्तेजनाकी वजहसे—फेरम-फास ; नेट्रम-फास।

,, दुर्निवार, आरोग्य ही नहीं होती—कैलि-फास।

,, वृद्ध मनुष्योंका—साइलिसिया।

,, रक्तकी चंचलताकी वजहसे—साइलिसिया।

,, स्नायविक कारणसे—कैलि-फास।

जम्हाई आना, बहुत अधिक—साइलिसिया।

जम्हाई आना, हिस्टीरियाके कारण—केलि-फास।

,, आनेकी वजहसे जबडे अटक जाना—नेट्रम-फास।

निद्रातुर, नींद आती रहना, सुस्तीके साथ दिनके प्रथम पहरमें—नेट्रम-म्यूर; नेट्रम-सल्फ।

,, पैत्तिक लक्षणके साथ—नेट्रम-फास।

,, दिनके प्रथम भागमें—नेट्रम-फास।

,, तीसरे पहर—नेट्रम-सल्फ।

निद्रितावस्थामें बेचैनी, क्रिमिके कारण—नेट्रम-फास; कैल्के-फास।

,, चिल्लाना—नेट्रम-फास।

,, नाक खुजलाया करता है—नेट्रम-फास।

,, बौंबियाना, पैत्तिक लक्षणके साथ—नेट्रम-म्यूर; नेट्रम-सल्फ; केलि-सल्फ।

सहजमें नींद नहीं खुलती है—कैल्के-फास।

सपनेमें देखना, बार-बार—साइलिसिया।

,, ,, चिल्लाना—साइलिसिया।

,, घूमना—केलि-फास।

ह्रास-वृद्धि-पर्याय

अतिसार, बढ़ना, भारी चीजें खानेपर, पीठी आदि खाकर—केलि-म्यूर।

ज्वरका बढ़ना, सन्ध्यासे आधी राततक—केलि-सल्फ।

लक्षणावलीका घटना, भोजन करनेपर—केलि-सल्फ।

,, ,, उत्तेजनासे—केलि-फास।

,, ,, गरम कमरेमें—कैल्के-फास।

,, ,, गर्मीमें—मैग-फास; कैल्के-फ्लुओर।

,, ,, गर्मीके दिनोंमें—कैल्के-फास; कैल्के-सल्फ।

लक्षणावलीका घटना, घर्षण, रगड़नेपर—मैग-फास ।
" " दवानेपर—मैग-फास ।
" " मालिश करनेपर—मैग-फास ।
" " धीरे-धीरे हिलानेपर—केलि-फास ।
" " सर्द प्रयोगसे—फेरम-फास ।
" " सन्ध्याके समय—नेट्रम-म्यूर ।
" बढ़ना, आबहवाके परिवर्त्तनसे—कैल्के-फास ।
" " " गर्मीसे—कैलि-सल्फ ।
" " " खुली हवामें—साइलि ।
" " गोलमालमें—कैलि-फास ।
" " जलमें उत्पन्न चीजें खानेपर—नेट्रम-सल्फ ।
" " जलमें भींगनेपर—कैल्के-फास ; कैल्के-सल्फ ।
" " ठंड लगकर, पैरमें—साइलिसिया ।
" " बरसातमें—कैल्के-फास ।
" " मछली खानेपर—नेट्रम-सल्फ ।
" " सवेरे—नेट्रम-म्यूर ; नेट्रम-सल्फ ।
" " समुद्री नमककी हवा लगनेपर—नेट्रम म्यूर ।
" " सन्ध्याके समय—साइलि ; कैल्के-फास ; कैलि-सल्फ ।